इंटरनेट पर देखें
www.dainikdawa.com

संस्कारधानी से प्रकाशित मध्यभारत व छत्तीसगढ़ अंचल का सर्वप्रसारित लोकप्रिय हिंदी समाचार पत्र

भारत सरकार व छत्तीसगढ़ शासन से विज्ञापन के लिए अधिकृत

दैनिक प्रातः संस्करण

"यो आत्मानं वेत्ति, सर्वं स वेत्ति"।।

दावा

सम्पादक - दीपक कुमार बुद्धदेव

आर.एन.आई.नं. 58841/93
डाक पंजीयन छ.ग./दुर्ग/14/2024-26

वर्ष- 43 अंक -350 राजनांदगांव, गुरूवार 14 नवंबर 2024 पृष्ठ - 8 मूल्य - 4.00 रुपए

झारखंड में पहले चरण के चुनाव में 65.27 प्रतिशत हुआ मतदान, 683 उम्मीदवारों का भाग्य ईव्हीएम में कैद

रांची। झारखंड विधानसभा चुनाव का पहला चरण बुधवार 13 नवंबर को संपन्न हो गया। झारखंड में इस बार भी गांवों, जंगलों और पहाड़ों पर लोकतंत्र मुस्कराता हुआ दिखा। मतलब कि यहां अच्छी खासी वोटिंग हुई। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में लोग चेतावनी के बावजूद घरों से निकले और मतदान किया। इसी के साथ पहले चरण की कुल 43 सीटों पर 65.27 प्रतिशत मतदान हुआ। यह पिछले विधानसभा चुनाव से लगभग एक प्रतिशत अधिक है। इसी के साथ बुधवार को कुल 683 प्रत्याशियों का भाग्य ईवीएम में कैद हो गया।

इस बार झारखंड के शहरी मतदाता अपने मताधिकार के प्रयोग को लेकर गंभीर नहीं दिखे। राजधानी रांची में सबसे कम मतदान हुआ। वहीं जमशेदपुर पूर्वी, जमशेदपुर पश्चिमी, हटिया, कांके हजारीबाग में 60 प्रतिशत से कम मतदान हुआ। हालांकि, इस बार रांची में मतदान का आंकड़ा 50 प्रतिशत से पार कर गया, जो पिछली बार से अधिक है। यहां इस बार 51.50 प्रतिशत वोट पड़े। कांके को छोड़कर अन्य शहरी क्षेत्रों में भी मतदान प्रतिशत में आंशिक सुधार हुआ है। सबसे अधिक 77.32 प्रतिशत मतदान खरसावां में हुआ।

पहली बार 43 सीटों पर एक बार में हुआ मतदान

झारखंड में पहली एक बार ही 43 सीटों पर मतदान कराया गया। इसके बावजूद छिटपुट घटनाओं को छोड़कर शांतिपूर्ण तरीके से मतदान हुआ। जिसको चुनाव आयोग और पुलिस प्रशासन की बड़ी उपलब्धि कहा जा सकता है। इससे पहले, बुधवार को सभी मतदान केंद्रों पर साढ़े पांच बजे से पोलिंग पार्टियों की उपस्थित में माक पोल शुरू हुआ था।

सुबह सात बजे से शुरू हुई वोटिंग

झारखंड में पहले चरण के मतदान में करीब- करीब सभी केंद्रों पर निर्धारित समय 7 बजे से मतदान शुरू हुआ। कुछ केंद्रों पर ईवीएम एवं वीवीपैट में खराबी की शिकायत आई, जहां समय पर या तो उन्हें दुरुस्त किया गया या उन्हें बदलकर मतदान शुरू कराया गया। पहले चरण की जिन 43 सीटों पर मतदान संपन्न हुआ उनमें अधिसंख्य आरक्षित थे। 17 सामान्य, छह एससी तथा 20 एसटी सीटों पर चुनाव हुआ।

35 विधानसभा में बढ़ा मतदान प्रतिशत, आठ में घटा

2019 के विधानसभा चुनाव की अपेक्षा इस बार 35 विधानसभा क्षेत्रों में मतदान प्रतिशत में बढ़ोतरी हुई है। (शेष पृष्ठ 6 पर...)

हिमाचल की सुक्खू सरकार को हाईकोर्ट से बड़ा झटका, 6 मुख्य संसदीय चीफ को हटाया, सीपीएस एक्ट किया निरस्त

हिमाचल में सुखविंदर सिंह सुक्खू सरकार को हाईकोर्ट ने बड़ा झटका दिया है। हाईकोर्ट ने राज्य में ~~छक्क~~ एक्ट 2006 को रद्द कर दिया है। साथ ही सरकार की ओर से लगाए गए 6 सीपीएस (चीफ पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी) को हटाने और तुरंत सुविधाएं वापस लेने के आदेश जारी किया है।

सुक्खू सरकार ने हिमाचल में 6 सीपीएस की नियुक्ति जनवरी 2023 में की थी। बता दें कि सुक्खू सरकार ने आशीष बुटेल, किशोरीलाल, मोहन लाल बरागटा, संजय अवस्थी, राम कुमार और सुंदर ठाकुर को सीपीएस नियुक्त किया था। सरकार इनको गाड़ी, दफ्तर, स्टाफ और मंत्रियों की तरह सुविधाएं दे रही थी।

सरकार ने इन सीपीएस की नियुक्ति पर सीपीएस एक्ट 2006 का हवाला दिया था। हिमाचल हाईकोर्ट के जस्टिस बीसी नेगी और जस्टिस विवेक सिंह ठाकुर की डबल बेंच ने यह फैसला सुनाया है। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि सीपीएस एक्ट 2006 को रद्द किया जाता है। सीपीएस को हटाने के साथ तुरंत प्रभाव से इनकी सुविधाए भी वापस ली जाए। वहीं, याचिकाकार्ता भाजपा विधायक के एडवोकेट वीर बहादुर ने कहा, याचिका में आरोप लगाया गया था कि सीपीएस बनाए गए सभी 6 काग्रेस विधायक लाभ के पदों पर तैनात हैं। इन्हें हर महीने 2 लाख 20 हजार रुपये वेतन और बाकी भत्ते मिलते थे। ये सीपीएस राज्य के मंत्रियों के बराबर सुविधाएं भी पाते थे।

हिमाचल सरकार के एडवोकेट जनरल अनूप रत्न ने दलील दी कि हिमाचल का एक्ट असम के एक्ट से अलग था। हम इस मामले में जल्द ही सुप्रीम कोर्ट जाएंगे। अनूप रत्न ने कहा, हिमाचल प्रदेश में सीपीएस एक्ट असम एक्ट से अलग था। असम एक्ट में मंत्री के समान शक्तियां और सुविधाएं सीपीएस को मिल रही थीं, लेकिन हिमाचल में सीपीएस को इस तरह की शक्तियां नहीं थी।

ट्रंप कैबिनेट का हिस्सा बने एलन मस्क और भारतवंशी विवेक रामास्वामी, संभालेंगे सरकारी विभाग का जिम्मा

वाशिंगटन। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दिग्गज कारोबारी एलन मस्क और उद्यमी विवेक रामास्वामी को बड़ी जिम्मेदारी दी है। वे अब सरकारी दक्षता विभाग (डीओजीई) का नेतृत्व करेंगे। ट्रंप ने एक बयान में कहा, मस्क और रामास्वामी मेरे प्रशासन के लिए सरकारी नौकरशाही को खत्म करने, अतिरिक्त नियमों को कम करने, फिजूल खर्चों में कटौती करने और संघीय एजेंसियों के पुनर्गठन का मार्ग प्रशस्त करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि उनकी जिम्मेदारी चार जुलाई 2026 को समाप्त हो जाएगी, जब अमेरिकी आजादी की 250वीं वर्षगांठ होगी। यह कुशल सरकार देश के लिए एक 'तोहफा' होगी।

चुनाव में रामास्वामी ने दिया था ट्रंप को समर्थन

मस्क इलेक्ट्रिक कार कंपनी टेस्ला, सोशल मीडिया मंच एक्स के मालिक हैं, जबकि रामास्वामी एक फार्मास्यूटिकल कंपनी के संस्थापक हैं। रामास्वामी पिछले साल रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवारों की दौड़ में शामिल थे। हालांकि, बाद में उन्होंने ट्रंप को समर्थन देने का फैसला किया था।

ट्रंप के अभियान में मस्क में दिया था योगदान

मस्क ने ट्रंप के चुनाव अभियान के लिए लिए लाखों डॉलर का योगदान दिया था और उनके साथ कई सार्वजनिक कार्यक्रमों में भी नजर आए थे। ट्रंप ने यह भी कहा था कि दुनिया के सबसे अमीर शख्स मस्क उनके प्रशासन में सरकारी कार्यक्षमता को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाएंगे।

एलन मस्क ने भी ट्रंप के फैसले पर प्रतिक्रिया दी

ट्रंप प्रशासन ने इस नए विभाग का संक्षिप्त नाम 'डोज' रखा है, जो एक तरह से क्रिप्टोकरंसी डॉजकॉइन के नाम से मेल खाता है, जिसे लिए मस्क प्रोत्साहित करते हैं। मस्क ने इस पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह सिस्टम में हलचल मचा देगा और सरकारी फिजूल खर्ची में शामिल सभी लोग इसके असर को महसूस करेंगे। ट्रंप ने इस नई पहल को 'अपने समय का मैनहट्टन प्रोजेक्ट' बताया है। यह एक अमेरिकी परियोजना थी, जिसके तहत परमाणु बम का निर्माण हुआ था।

केन्द्रीय मंत्री मांडविया, सीएम साय ने लिया 'माटी के वीर' पदयात्रा में भाग

रायपुर। भगवान बिरसा मुंडा की 150 वीं जयंती के उपलक्ष्य में उनकी विरासत और देश के विकास में आदिवासी समुदायों के महत्वपूर्ण योगदान के सम्मान में बुधवार को छत्तीसगढ़ के जशपुर नगर में जनजातीय गौरव दिवस पर 'माटी के वीर' पदयात्रा का भव्य आयोजन किया गया। केन्द्रीय मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया एवं छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की उपस्थिति में पदयात्रा का आयोजन हुआ।

पदयात्रा के शुभारंभ कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डॉ. मांडविया ने देश की आजादी और कोरोना काल में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना की। उन्होंने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा के जीवन से हमें प्रेरणा लेना चाहिए, जिन्होंने 25 वर्ष की आयु में मातृ भूमि को आजाद कराने के लिए लड़ाई लड़ी और अपना बलिदान दिया। उन्होंने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में छह लाख युवाओं ने अपना बलिदान दिया। उन्होंने युवाओं से विकसित भारत के सपने को पूरा करने का संकल्प लेने तथा सामाजिक सरोकार को बढ़ावा देने के लिए आगे आने का आव्हान किया। डॉ. मांडविया ने इस अवसर पर श्री विष्णु देव साय के आग्रह पर जशपुर नगर में सर्वसुविधायुक्त स्पोर्ट्स स्टेडियम का निर्माण कराए जाने की घोषणा की।

श्री विष्णु देव साय ने 'माटी के वीर' पदयात्रा के शुभारंभ कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह छत्तीसगढ़ और जशपुर के लिए सौभाग्य की बात है कि भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में यह कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। उन्होंने इस मौके पर भगवान बिरसा मुंडा की जयंती 15 नवंबर को देश में जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाए जाने की घोषणा के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने जनजातियों को गौरव करने का एक और बड़ा अवसर प्रदान किया है।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि जब-जब संस्कृति पर हमला हुआ है, जनजातीय समाज ने इसका तीव्र प्रतिकार किया है। जनजातीय संस्कृति प्रकृति से प्रेम करने की संस्कृति है। यह संस्कृति सौहार्द्र, शांति और सद्भाव की संस्कृति है। कलाओं से प्रेम करने वाली यह संस्कृति हमारी जनजातीय सनातन संस्कृति का उद्गम है। जनजातीय संस्कृति को बचाने की चिंता सनातन संस्कृति (शेष पृष्ठ 6 पर...)

आज से दो दिनों तक बिखरेगी आदिवासी लोक नृत्यों की छटा

रायपुर (दावा)। राजधानी रायपुर के साइंस कॉलेज मैदान में दो दिवसीय जनजातीय गौरव दिवस के भव्य आयोजन में देश के विभिन्न राज्यों के साथ पूर्वोत्तर राज्यों के कलाकार भी अपनी संस्कृति की झलक बिखेरेंगे।

14-15 नवम्बर को आयोजित कार्यक्रम में प्रस्तुति देने पूर्वोत्तर भारत के पांच राज्यों मेघालय, मिजोरम, असम, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम के कलाकार रायपुर पहुंच चुके हैं। रायपुर रेलवे स्टेशन पर कलाकारों का पुष्पाहार और तिलक लगाकर स्वागत किया गया। पूर्वोत्तर राज्यों से आए ये कलाकार वांगला-रुंगला, रेट-किनॉन्ग, गेह पदम ए ना-न्यी ई, सोलकिया जैसे लोक नृत्यों की प्रस्तुति से अपनी संस्कृति के विविध रंग बिखेरेंगे। फसल कटाई के बाद गारो आदिवासी करते हैं वांगला-रुंगला नृत्य, देवता मिस्सी सालजोंग का करते हैं धन्यवाद जनजातीय गौरव दिवस पर प्रस्तुति देने मेघालय से 20 सदस्यों की टीम रायपुर आई है। यह दल गारो जनजाति द्वारा फसल कटाई के बाद किया जाने वाला वांगला-रुंगला लोक नृत्य प्रस्तुत करेगी। इसके कलाकार मेघालय की राजधानी शिलांग से करीब 200 किलोमीटर दूर नॉर्थ कर्व हिल्स से आए हैं। दल का नेतृत्व कर रहे मानसेन मोमिन ने बताया कि वांगला गारो जनजाति का लोकप्रिय त्योहार है। (शेष पृष्ठ 6 पर...)

रायपुर दक्षिण उपचुनावः 50 प्रतिशत मतदान, पोलिंग बूथ पर बीजेपी कार्यकर्ता-पुलिसकर्मियों में झड़प, कांग्रेसियों से भी बहस

रायपुर। छत्तीसगढ़ की रायपुर दक्षिण विधानसभा सीट पर उपचुनाव में सुबह 7 बजे से शुरू हुई वोटिंग शाम 6 बजे तक चली। इस चुनाव में भाजपा और कांग्रेस के बीच कड़ा मुकाबला है। रायपुर दक्षिण की जनता अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिए बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इलेक्शन कमीशन ने शाम तक की वोटिंग का आंकड़ा जारी कर दिया। इसके अनुसार रायपुर दक्षिण पर शाम 6 बजे तक 50 प्रतिशत मतदान हो चुका था। सुबह 7 बजे से ही मतदान केंद्रों पर लोगों की कतारें लगनी शुरू हो गई थीं। पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं में भी मतदान को लेकर खासा उत्साह देखने को मिला। 2 लाख 71 हजार से ज्यादा मतदाता अपने वोट की ताकत दिखाने के लिए मतदान केंद्रों पर पहुंच कर वोटिंग की।

सहायक मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने परिवार सहित डाला वोट

रायपुर दक्षिण विधानसभा उप-चुनाव में सहायक मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी छत्तीसगढ़ शारदा अग्रवाल ने अपने परिवार सहित वोटिंग किया।

महिलाओं के लिए बना संगवारी पोलिंग बूथ

रायपुर दक्षिण विधानसभा उपचुनाव में महिलाओं के लिए संगवारी मतदान केंद्र बनाए। इसमें सभी मतदानकर्मी महिलाएं है। इस मतदान केंद्र में सभी मतदाताओं के लिए सेल्फी जोन, पेयजल, बैठक व्यवस्था और पीने के पानी जैसी सुविधाएं उपलब्ध है।

उपचुनाव में वोटिंग को लेकर दिखा कम उत्साह

छत्तीसगढ़ में शाम 5 बजे तक मतदान हुआ। 2023 विधानसभा चुनाव के मुकाबले इस बार उपचुनाव में (शेष पृष्ठ 6 पर...)

सुप्रीम कोर्ट की बुलडोजर एक्शन पर रोक, कहा- आरोपी का घर नहीं गिरा सकते

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार 13 नवंबर को बुलडोजर एक्शन मामले पर सुनवाई पर बड़ा बयान सामने आया है। कोर्ट ने कहा कि आरोपी के अपराध की सजा घरवालों की नहीं दी जा सकती है। सरकारी शक्ति का दुरुपयोग नहीं किया जा सकता है।

जज अभी फैसला पढ़ रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट का मानना है कि राज्य और उसके अधिकारी मनमाने और अत्यधिक कदम नहीं उठा सकते। सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि कार्यपालिका किसी व्यक्ति को दोषी घोषित नहीं कर सकती और जज बनकर किसी आरोपी व्यक्ति की संपत्ति को ध्वस्त करने का फैसला नहीं कर सकती।

नागरिक अधिकारों की रक्षा जरूरी

सुनवाई के दौरान जज ने कहा कि सभी दलीलों को सुनने के दौरान हमने लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर विचार किया है। न्याय के सिद्धांतों और पूर्व में आए फैसलों जैसे इंदिरा गांधी बनाम राजनारायण और जस्टिस पुत्तास्वामी को ध्यान में रखकर हम फैसला करने वाले हैं। जज ने यह भी कहा कि यह सरकार की जिम्मेदारी है कि समाज में कानून का शासन बना रहे, लेकिन उसके साथ यह भी समझना होगा कि नागरिक अधिकारों की रक्षा भी संवैधानिक लोकतंत्र में जरूरी है।

बिना मुकदमे अपराधियों को नहीं ठहरा सकते दोषी

सुनवाई के दौरान जज ने कहा कि नागरिकों के अधिकारों को बिना कारण छीना नहीं जा सकता है। सरकारी शक्ति का दुरुपयोग नहीं किया जा सकता है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि बिना मुकदमे के (शेष पृष्ठ 6 पर...)

आईपीएस जीपी सिंह को बड़ी राहत : हाईकोर्ट ने राजद्रोह केस में प्रोसिडिंग को किया रद्द, कांग्रेस सरकार में दर्ज हुई थी एफआईआर

बिलासपुर (दावा)। बर्खास्त आईपीएस जीपी सिंह के खिलाफ पूर्व कांग्रेस सरकार द्वारा दर्ज की गई तीनों एफआईआर को हाईकोर्ट ने रद्द कर दिया है। बुधवार को हाईकोर्ट की डिवीजन बेंच में हुई सुनवाई में तीनों एफआईआर को द्वेषपूर्ण कार्यवाही का हिस्सा मानते हुए रद्द करने का आदेश दिया है। 1994 बैच के आईपीएस जीपी सिंह वर्तमान में बर्खास्त हैं। उनके खिलाफ एंटी करप्शन ब्यूरो में आय से अधिक संपत्ति का मामला दर्ज किया गया था। इसके अलावा भिलाई के सुपेला थाने में एक्सटॉर्शन का मामला और रायपुर में राजद्रोह का मामला भी दर्ज किया गया था।

मामले की गंभीरता को देखते हुए उन्हें सेवा से बर्खास्त कर दिया गया था। तीनों मामलों में जीपी सिंह 120 दिन जेल में भी रहे थे। सभी मामलों को रद्द करने के लिए हाईकोर्ट में जीपी सिंह ने अपने अधिवक्ता के माध्यम से हाई कोर्ट में याचिका दायर की थी। बुधवार को चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा और जस्टिस रविन्द्र अग्रवाल की डिवीजन बेंच में मामले की सुनवाई हुई। सुनवाई में चंडीगढ़ के सीनियर काउंसिल वर्चुअल उपस्थित हुए।

आईपीएस जीपी सिंह के खिलाफ दर्ज सभी एफआईआर रद्द

जीपी सिंह के अधिवक्ताओं ने आय से अधिक संपत्ति के मामले में बताया कि जिस व्यक्ति से गोल्ड सीज हुआ है उस व्यक्ति को एसीबी ने आरोपी नहीं बनाया है, जबकि उक्त गोल्ड को जीपी सिंह का बता उन्हें आरोपी बना दिया गया। जिस स्कूटी से गोल्ड की जब्ती बनाई गई है वे भी जीपी सिंह और उनके परिजनों के नाम पर रजिस्टर्ड नहीं है। इसके अलावा सुपेला में दर्ज एक्सटॉर्शन के मामले में बताया गया कि यह सालों बाद बदले की कार्यवाही के तहत दर्ज करवाई गई है।

कई सालों बाद मामला दर्ज होने से मामला समझ से परे है। राजद्रोह के मामले में अधिवक्ता ने अदालत को बताया कि जिन कटे फटे कागज के जीपी सिंह के ठिकाने से मिलने के आधार पर उन्हें राजद्रोह का आरोपी बनाया गया है। उन कागजों से कोई भी षड्यंत्र परिलक्षित नहीं होता। एंटी करप्शन ब्यूरो द्वारा अदालत में पेश किए गए जवाब में भी स्पष्ट है कि उक्त कागज के टुकड़ों की रेडियोग्राफी में कोई भी स्पष्टता नहीं है। मामले की सुनवाई के बाद डिवीजन बेंच ने जीपी सिंह के खिलाफ दर्ज तीनों मामलों को रद्द कर दिया। (शेष पृष्ठ 6 पर...)

जनजातीय गौरव दिवस 2024 के अवसर पर कलेक्टोरेट सभाकक्ष में संगोष्ठी का हुआ आयोजन

राजनांदगांव (दावा)। कलेक्टर संजय अग्रवाल की उपस्थिति में धरती आबा जनजाति ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत जनजातीय गौरव दिवस 2024 के अवसर पर कलेक्टोरेट सभाकक्ष में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में आदिवासी समाज के प्रमुख एवं पदाधिकारी शामिल हुए। कलेक्टर अग्रवाल ने कहा कि आदिवासी समुदाय के हितग्राहियों तक शत प्रतिशत शासकीय योजनाएं पहुंच सके इस दिशा में कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जिले में सभी समुदाय की समस्याओं के समाधान के लिए समस्या समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति तक शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं को पहुंचाने एवं लाभान्वित करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।

कलेक्टर अग्रवाल ने बताया कि जिला स्तरीय जनजातीय गौरव दिवस का आयोजन 15 नवंबर को पद्मश्री गोविंदराम निर्मलकर ऑडिटोरियम गौरव पथ राजनांदगांव में किया जाएगा। उन्होंने सभी आदिवासी समाज प्रमुखों एवं पदाधिकारियों को जिला स्तरीय जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम में शामिल होने कहा। संगोष्ठी में बताया गया कि जनजाति समाज की पुरातात्विक ऐतिहासिक धरोहर भाषा, संस्कृति, धर्म और इतिहास रहा है। गोंडवाना संस्कृति एवं इसकी धरोहर साहित्य के माध्यम से वर्ष 1980 के बाद परिलक्षित होती है। गौरव दिवस के अवसर पर आदिवासी समाज के प्रमुखों ने विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित विचारों को संगोष्ठी में व्यक्त किया। संगोष्ठी में गोंडी भाषा के संरक्षण तथा वन, जंगल, जल व जमीन की सुरक्षा की आवश्यकता को व्यक्त किया।

संगोष्ठी में बताया गया कि विश्व आदिवासी दिवस के आयोजन में 9 अगस्त को बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी होती है, ऐसे ही बड़ी भागीदारी के बीच शासन की योजनाओं को लोगों तक आसानी से पहुंचाया जा सकता है।

दूरस्थ अंचल के लोगों तक शासन क योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए कार्य करने पर चर्चा की गई। आदिवासी समुदाय से परामर्श समिति के विचार लेने, जिला स्तर पर आदिवासी संग्रहालय के निर्माण, वाचिक परंपरा के तहत लिए गए साहित्य का प्रकाशन के संबंध में चर्चा की गई। आदिवासी समाज के प्रमुख एवं पदाधिकारियों ने जनजातीय समाज की विभिन्न आवश्यकताओं तथा अपेक्षाओं को संगोष्ठी के माध्यम से जिला प्रशासन के समक्ष प्रस्तुत किया। अपर कलेक्टर सीएल मारकण्डेय ने जिला प्रशासन द्वारा आदिवासी समुदाय के लिए किए जा रहे कार्यों से अवगत कराया गया। सहायक आयुक्त दीक्षा गुप्ता द्वारा जनजातियों के लिए आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी दी। द्व

दुधिया रौशनी में आज से खेली जाएगी 7ए साइड हॉकी प्रतियोगिता

राजनांदगांव (दावा)। जिला हॉकी संघ राजनांदगांव के मार्गदर्शन में सीनियर मॉर्निंग हॉकी ग्रुप द्वारा अंतर्राष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम गौरव पथ में दिनांक 14 से 20 नवम्बर तक स्व. सुरजीत कौर भाटिया 7 ए साइड हॉकी प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। जिसका आज उद्घाटन समारोह संध्या 6 बजे से विशिष्ट अतिथियों की उपस्थित में सम्पन्न होगा। हॉकी नर्सरी कहे जाने वाले राजनांदगांव में बहुत लंबे समय के अंतराल बाद फ्लड लाईड में हॉकी प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। उक्त प्रतियोगिता में शहर की जानी मानी 8 स्थानीय टीमें भाग ले रही है। इस स्पर्धा में भाग ले रही हॉकी टीमो में वरिष्ठ हॉकी खिलाड़ी जिसमें कई सेवानिवृत्त हो चुके है तथा सीनियर और जूनियर खिलाड़ी शामिल रहेंगें। स्पर्धा लीग पद्धत्ति से खेली जाएगी। स्पर्धा के तहत कल दो मैच खेला जाएगा जाएगा जिसमें पहला मैच लालबाग क्लब विरुद्ध एम सी इलेवन के मध्य संध्या 6.30 बजे तथा सिटी क्लब विरुद्ध दिग्विजय क्लब के मध्य 7.30 बजे से खेला जाएगा।

स्व. सुरजीत कौर स्मृति 7ए साइड हॉकी प्रतियोगिता का कल से रंगारंग शुभारंभ

हत्या करने के नीयत से सर्जिकल ब्लेड से वार करने वाला आरोपी गिरफ्तार

आपस में विवाद के चलते घटना को दिया गया अंजाम

राजनांदगांव (दावा)। डोंगरगांव पुलिस ने अपने थाना क्षेत्र में एक व्यक्ति की हत्या करने की नीयत से सर्जिकल ब्लेड से वार करने वाले आरोपी को गिरफ्तार किया है, और उसे ज्यूडिशियल रिमांड में जेल की सीखचों के पीछे भेज दिया है।

डोंगरगांव थाना प्रभारी उपेंद्र कुमार शाह ने बताया कि क्षेत्र में चोरी, लूट, अवैध शराब बिक्री व संवेदनशील मामलों के गतिविधियों पर नजर रखी जा रही है। 3 नवंबर को भागवत निषाद पिता समारू निषाद, उम्र 60 वर्ष, निवासी ग्राम रातापायली के द्वारा थाने आकर बताया गया है उसके बेटे को अनावेदकगणों के द्वारा गंदी-गंदी गाली-गलौच करते हुये जान से मारने की धमकी देकर सर्जिकल ब्लेड से वार कर दिया है।

प्रार्थी की रिपोर्ट पर थाना डोंगरगांव में अपराध क्र. 270/2024, धारा 296, 115(2), 351(2), 109(1), 3(5) बीएनएस कायम कर विवेचना में लिया गया। विवेचना के दौरान आरोपी रीतेश निषाद पिता धनसाय निषाद, उम्र-22 साल, जाति केंवट, पता स्कूल पारा रातापायली को गिरफ्तार कर ज्यूडिश्यल रिमांड पर भेजा गया। श्री शाह ने बताया कि प्रकरण के अन्य दो फरार है जिनकी पता साजी की जा रही है। उक्त कार्यवाही में पुलिस स्टाफ डोंगरगांव का विशेष भुमिका है।

बैगा ग्रुप की अनूठी पहल, छत्तीसगढ़ की संस्कृति व परंपरा को रखा जीवंत

राजनांदगांव (दावा)। छत्तीसगढ़ की लोक कलाकारों और लोक संस्कृति को सजोएं रखने में अपनी अहम भूमिका निभाने वाली संस्कारधानी की संस्था बैगाग्रुप राजनांदगांव द्वारा कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी 12 नवंबर मंगलवार को तुलसी विवाह के साथ ही पौराणिक व छत्तीसगढ़ की संस्कृति व मान्यताओं के अनुसार देवउठनी एकादशी के अवसर पर भूर्री जलाकर आने वाली ऋतु का स्वागत कल रात्रि में किया गया।

देवउठनी एकादशी व तुलसी विवाह पर भुर्री जलाकर तापी आग

बैगाग्रुप द्वारा जारी विज्ञप्ति में बताया कि महुवा झरे, नई माने काली, हर-हर भोला के साथ ही 40 से अधिक आडिओ और विडियो कैसेट सुवा, ददरिया, कर्मा, जस गीत एवं छत्तीसगढ़ी फिल्म जगत में मांग सजादे सजना के माध्यम से लोक संस्कृति व लोक कलाकारों को हमेशा आगे लाने वाली नगर की संस्था बैगाग्रुप ने अपने 33 साल से भी अधिक समय से छत्तीसगढ़ की पौराणिक परंपरा देवउठनी एकादशी पर भगवान सालिगराम व तुलसी माता के विवाह पश्चात छत्तीसगढ़ की संस्कृति व मान्यता अनुसार भूर्री जलाने की प्रथा को इस बार भी आयोजित किया। इस बार 12 नवंबर मंगलवार को देवउठनी एकादशी के अवसर पर पुरानी टोकनी, सुपा, झबहा को एकत्रित कर बैगाग्रुप ने अपने नियमित बैठक स्थल मानव मंदिर चौक सिनेमा लाईन मार्ग पर कल रात्रि में भूर्री प्रज्ज्वलित कर आने वाली ऋतु के आगमन का स्वागत किया। वहीं इस अवसर पर एक दूसरे को तुलसी विवाह व देवउठनी एकादशी की बधाई व शुभकामनाएं दी। एकादशी पर आयोजित भुर्री प्रज्ज्वलन के अवसर पर लोक कलाकारों व संस्कृति को संजोए रखने वाले बैगा ग्रुप के राजेश मारु के मार्गदर्शन में एवं गणेश प्रसाद शर्मा 'गन्नू' रचनाकार हर्ष कुमार बिंदू, स्वरधारा के संयोजक विष्णु कश्यप, संगीतकार योगेश टुक्का, पंकज महेश्वरी, पंकज शर्मा, मनोज सेन के साथ ही अन्य सदस्यगण भी उपस्थित थे।

चार सूत्रीय मांगों को लेकर शिक्षक मोर्चा ने मुख्यमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन

सरकार सुध ले, नही तो होगा उग्र आंदोलन

राजनांदगांव (दावा)। छत्तीसगढ़ शिक्षक संघर्ष मोर्चा ने 11 नवंबर को सभी ब्लॉक मुख्यालय में वेतन विसंगति, पूर्ण सेवा अवधि की गणना करने, लंबित मंहगाई भत्ता, क्रमोन्नत वेतनमान सहित चार सूत्रीय मांगों को लेकर अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) खेमलाल वर्मा राजनांदगांव को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया।

कर्मचारी मोर्चा के ब्लॉक संचालक रोशन साहू, जिला संयोजक छबू साहू, जिला उप संचालक द्वय हर्ष कुमार मेश्राम, अजय कड़व, राजेश साहू आदि ने अनुविभागीय अधिकारी कार्यालय में उपस्थित हुए और मुख्यमंत्री एवं अन्य प्रशासनिक जिम्मेदार लोगों के नाम ज्ञापन सौंपा। इस दौरान ब्लॉक संयोजक रोशन साहू ने बताया कि शिक्षक संवर्ग ने पहले भी 2 अक्टूबर को रायपुर में एवं जिला मुख्यालय में एक दिवसीय प्रदर्शन कर ज्ञापन दे चुके हैं तब भी सरकार शिक्षक संवर्ग की मांग को सुनकर भी अनसुना कर रही है। इसी के तहत सभी ब्लॉक मुख्यालय में ज्ञापन जा रहा है फिर भी अगर सरकार मोदी की गारंटी की मांगों पर विचार नहीं किया तो हमें उग्र आंदोलन करने के लिए बाध्य होना होगा जो छात्र हित, शिक्षा जगत के लिए कतई नहीं है।

सरकार को अपनी घोषणा 'मोदी की गारंटी' पर अमल करना चाहिए ताकि किसी भी प्रकार का छात्र हित पर कुठाराघात ना हो एवं शैक्षिक गुणवत्ता को हासिल किया जा सकें। इस अवसर पर राजनांदगांव विकासखंड के बहुत शिक्षक गण उपस्थित थे।

पूर्णिमा स्नान के लिये मोहारा नदी में आवश्यक व्यवस्था करने महापौर ने दिये निर्देश

मट्टी का दीया जलाने व गोबर से बने दीये का दीप दान करने नागरिकों से की अपील

राजनांदगांव (दावा)। महापौर श्रीमती हेमा सुदेश देशमुख ने कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर मोहारा स्थित शिवनाथ नदी में प्रातः स्नान के लिये आवश्यक व्यवस्था करने निगम के अधिकारियों को निर्देशित किये। साथ ही उन्होंने नागरिकों से अपील करते हुये कहा कि धार्मिक भावना व शुद्धता का प्रतीक गोबर से बने दिये से नदी में दीप दान करे एवं मिट्टी का दीया जलाये। महापौर श्रीमती देशमुख ने कहा कि कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर मोहारा स्थित शिवनाथ नदी के पास मेला का आयोजन किया जाता है, साथ ही इसी दिन प्रातः लोगों के द्वारा पूजा अर्चना कर दीप दान किया जाता है। उन्होंने मोहारा नदी के आसपास साफ सफाई कर विद्युत व्यवस्था तथा अन्य आवश्यक व्यवस्था करने अधिकारियों को निर्देशित किये ताकि पूजा अर्चना में किसी भी प्रकार की परेशानी न हो।

महापौर श्रीमती देशमुख ने कहा कि कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर प्रातःकालीन नदी के पास पूजा अर्चना कर दीप दान किया जाता है, उन्होंने नागरिकों से अपील करते हुये कहा कि मिट्टी का दीया जलावे व गोबर के दीये से दीप दान करे क्योंकि गोबर धार्मिक कार्यो के साथ साथ शुद्धता का प्रतीक है और यह नदी में मछली के चारा के रूप में भी उपयोग होगा, जिससे नदी में गंदगी नहीं होगी। प्लास्टिक व डिस्पोजल दीये से गंदगी फैलती है तथा पर्यावरण के लिये भी नुकसानदायक है। उन्होंने तीन दिवसीय आयोजित मेले में दोपहर में घुमकर मेले का आनंद लेने की अपील की है।

साम्प्रदायिक सद्भाव अभियान सप्ताह 19 से 25 नवम्बर तक एवं 25 नवम्बर को झंडा दिवस

राजनांदगांव (दावा)। राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भाव प्रतिष्ठान नई दिल्ली के निर्देशानुसार 19 से 25 नवम्बर तक साम्प्रदायिक सद्भाव अभियान सप्ताह एवं 25 नवम्बर को झंडा दिवस मनाया जाएगा। इस संबंध में जिले के सभी अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए हैं।

आपरेशन मुस्कान के तहत् नाबालिक को महाराष्ट्र से किया गया आरोपी से बरामद

राजनांदगांव (दावा)। नाबालिक पीड़िता को बहला-फुसलाकर ले जाकर उसके साथ शादी करने का झांसा देकर लगातार शारीरिक संबंध बनाने वाले आरोपी को थाना गैंदाटोला पुलिस को गिरफ्तार करने में सफलता मिली।

मामले का विवरण इस प्रकार है कि प्रार्थी ने दिनांक 28 अगस्त 2024 को थाना आकर रिपोर्ट दर्ज कराया कि उसकी नाबालिक लड़की को किसी अज्ञात आरोपी बहला फुसला कर अपने साथ भागा कर ले गया है। रिपोर्ट पर थाना गैंदाटोला द्वारा पूर्व में 72/2024 धारा 137(2) बीएनएस के तहत अपराध पंजीबद्ध कर अपहृता व अज्ञात आरोपी का पतासाजी एवं विवेचना किया जा रहा था। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग द्वारा आपरेशन मुस्कान के तहत प्रकरण के अपहृता व अज्ञात आरोपी का पातासाजी कर शीघ्र दस्तयाब एवं अज्ञात आरोपी को गिरफ्तार करने निर्देश दिया गया था, जो सायबर सेल से तकनीकी सहायता प्राप्त कर थाना प्रभारी गैंदाटोला निरीक्षक रमेश पटेल व सहायक उप निरीक्षक मेघनाथ सिन्हा के नेतृत्व में थाना गैंदाटोला पुलिस के द्वारा अपहृता को आरोपी शिवाराम पटेल पिता रमेश पटेल उम्र 26 निवासी ग्राम मिनमिनिया थाना बोड़ला के कब्जे से उरली कंचन पुणे, महाराष्ट्र राज्य से दिनांक 11/11/2024 को बरामद कर परिजन के साथ थाना लाया गया, नाबालिग अपहृता का महिला पुलिस अधिकारी एवं न्यायालय से कथन एवं डाक्टर से डॉक्टरी परीक्षण कराया गया जो मामले में आरोपी द्वारा धारा 64 (2)(ड), 69, 87 बीएनएस एवं 4, 6 पॉक्सो एक्ट का अपराध घटित करना पाए जाने पर मामले में उक्त धाराएं जोड़ी गई तथा आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेजा गया है।

आम सूचना

जिला राजनांदगांव के निम्नलिखित सहकारी समितियों को छ.ग. सहकारी सोसायटी अधिनियम 1960 के अंतर्गत परिसमापन में लाया गया जिसके अंतर्गत संबंधित सोसायटी के लिए परिसमापक नियुक्त किया गया है। अतः छ.ग. सहकारी सोसायटी नियम 1962 के नियम के अनुसार सूचना सर्व साधारण की जानकारी हेतु प्रकाशित की जाती है कि निम्नलिखित समितियों के विरूद्ध जो भी लेनदारियां तथा ऋण लेना बकाया निकलता है वे प्रमाण सहित अपने दावे यदि कोई हो तो इस सूचना के प्रकाशित होने के दिनांक से दो माह की अवधि के भीतर परिसमापक को कार्यालय उप पंजीयक सहकारी संस्थाएं राजनांदगांव में कार्यालयीन समय में प्रस्तुत कर सकते हैं। उक्त अवधि के पश्चात दावों पर कोई भी उत्तरदायी मान्य नहीं होगी और संस्था की उपलब्ध लेखा पुस्तकों में लेखबद्ध समस्त दायित्वों को उक्त कथित नियम के अंतर्गत परिसमापक को विधिवत प्रस्तुत किया गया हैं ऐसा समझा जावेगा एवं जिस समितियों के रिकार्ड उपलब्ध नहीं है उनमें कुछ लेनदेन नहीं है ऐसा समझा जावेगा।

उप आयुक्त सहकारिता एवं उप पंजीयक सहकारी संस्थाएं राजनांदगांव अंतर्गत परिसमापनाधीन समितियों की जानकारी

क्र.	समिति का नाम	पंजीयन क्रमांक	परिसमापन का आदेश क्र.	आदेश दिनांक	परिसमापक का नाम	नगर
1	मां बम्लेश्वरी खाद्य पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. सोनेसरार	757	1852	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
2	जय मा दुर्गा खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. बरबसपुर	761	1853	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
3	पदम् जय मां शीतला खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. बेगाटोला	771	1854	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
4	जोगी बाबा खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. कटंगी	783	1855	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
5	इंदिरा शक्ति खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. पाड़ादाह	826	1856	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
6	मां बम्लेश्वरी खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. मुहडबरी	828	1857	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
7	मां धनलक्ष्मी खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. लालपुर	847	1858	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
8	इंदिरा शक्तिखाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. गर्रापार	851	1859	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
9	इंदिरा शक्ति खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. रूस	882	1860	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
10	इंदिरा शक्ति खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. चारभाठा	883	1861	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
11	इंदिरा शक्ति खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. कलकसा	894	1862	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
12	इंदिरा शक्ति खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. चिचोला	894	1863	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
13	इंदिरा शक्ति खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. परसाही	895	1864	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
14	शिवम खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. बढ़ईटोला	942	1865	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
15	इंदिरा शक्ति खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. महरूमकला	962	1866	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
16	इंदिरा शक्ति खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. तुलसीपुर	995	1867	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
17	इंदिरा शक्ति खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. टोलागांव	996	1868	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
18	इंदिरा शक्ति खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. ठेलकाडीह	1008	1869	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
19	नारी शक्ति खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. बिरनपुर खुर्द	1009	1870	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
20	इंदिरा शक्ति खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. कुशियारी	1031	1871	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
21	इंदिरा शक्ति खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. मदनपुर	1040	1872	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़
22	इंदिरा शक्ति खाद्य सुरक्षा पोषण एवं उपभोक्ता सहकारी समिति मर्या. करेला	1051	1873	04-10-2023	श्री मनोज तारम, व.स.नि.	खैरागढ़

आगे यह भी प्रकाशित किया जाता है कि जिस व्यक्ति, समिति के सदस्य या भूतपूर्व पदाधिकारी या कर्मचारी के पास उक्त सहकारी समितियों से संबंधित कोई भी कागजात, सामान एवं रोकड़ आदि हो तो वे प्रकाशन तिथि से 15 दिन के भीतर परिसमापक के पास जमा करें या लिखित में सूचना देवें अन्यथा निश्चित समय उपरांत यदि किसी व्यक्ति के पास उक्त समितियों का कोई भी रिकार्ड या सामान आदि होने की जानकारी मिली या वैसा होना सिद्ध हुआ तो उनके विरूद्ध कानूनी कार्यवाही की जावेगी जिसके लिए स्वयं की व्यक्तिगत रूप से जवाबदेही होगी।

यह सूचना आज दिनांक 13/10/2024 को सर्वसाधारण की जानकारी हेतु प्रकाशित की जाती है।

(पदमुद्रा)
परिसमापक
उप आयुक्त सहकारिता राजनांदगांव (छ.ग.)

कमला कॉलेज में स्वधायी प्रथम सेमेस्टर, छात्राओं की कक्षाएं प्रारंभ

राजनांदगांव (दावा)। शासकीय कमलादेवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव स्वधायी (अमहाविद्यालयीन/प्राईवेट) पंजीकृत छात्राओं की संपर्क कक्षाएं प्रारंभ हो गयी है। छात्राएं अविलंब संबंधित विषय एवं विभाग में उपस्थित होकर अध्यापन कक्षाओं का लाभ उठावें। निर्धारित अध्यापन अवधि के दौरान ही सतत् आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा (सीईए-01एंड 02) एवं असाइंटमेंट दिया जावेगा, जिससे सभी पंजीकृत छात्राओं की सहभागिता नियमानुसार अनिवार्य है। इस संबंध में विस्तृत सूचना महाविद्यालय के नोटिस बोर्ड एवं कॉलेज के वेबसाइट में जारी की गई है।

dt श्री कृष्णा (एयरकुल) में
आज ता. 14 से शुभारंभ, रोजाना 4 खेलों में
बाल्कनी की एडवांस बुकिंग प्रारंभ है।
समय : 12,3, 6 व 9 बजे रात्रि
कंगूवा
कलाकार - सूर्या, बॉबी देओल, दिशा पटानी, जगपती बाबु, योगी बाबू, रेडिन किंग्सले, नटराजन सुब्रमण्यम, कोवई सरला, आनंदराज, केएस रविकुमार आदि

ऑनलाईन बुकिंग paytm & bookmyshow.com

paytm book my show
SILVER SCREEN MULTIPLEX
14 November 2024
silver SCREEN

Kanguva (Hindi) - 12:00, 03:00, 06:00 and 09:00
Singham Again - 12:15, 03:15, 06:15 and 09:15 pm
Bhool Bhulaiyaa 3 - 12:30, 03:30, 06:30 and 09:30 pm
Sumeet Mandi Mall, Rajnandgaon (C.G) 8085600200

छत्तीसगढ़ शासन वन विभाग कवर्धा वनमंडल, कवर्धा (छत्तीसगढ़)

सर्वसाधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि कवर्धा वनमंडल कवर्धा के अंतर्गत अ. डिपो लालपुर खैरबना (कवर्धा) में एकत्रित ईमारती काष्ठ एवं विभिन्न अस्थाई जलाऊ डिपो में एकत्रित जलाऊ चट्टों का नीचे दर्शित तिथि एवं समय में नीलाम किया जावेगा। इच्छुक क्रेता नीलाम में भाग ले सकते है। नीलाम की शर्तें एवं अन्य जानकारी कार्यालयीन समय में अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

नीलाम दिनांक - 19.11.2024
नीलाम स्थल - कवर्धा डिपो
समय - 9.00 बजे प्रातः से

प्रजाति	वनोपज की अनुमानित मात्रा निम्नानुसार है		
	अनविके काष्ठ		
	घ.मी.	बल्ली	डेंगरी
सागौन	163.888	814	543
साल	27.730	-	-
बीजा	0.336	-	22
साजा	9.153	-	-
धावड़ा	7.148	-	-
ह.मु.	0.342	-	-
अन्य	7.527	-	-
योग:-	216.124	814	565

टीप - (1) दिनांक 19.11.2024 को कवर्धा काष्ठागार में अ.डिपो लालपुर खैरबना के ईमारती काष्ठ के नीलामी पश्चात विभिन्न अस्थाई जलाऊ डिपो में एकत्रित जलाऊ चट्टों का नीलाम किया जावेगा। विवरण निम्नानुसार है :-
(अ) अ.ज.डिपो रामपुर में एकत्रित साल प्रजाति के 60 चट्टा, बानो डिपो में एकत्रित मिश्रित प्रजाति के 10 चट्टा, सलिहा प्रजाति के 74, बोड़ला डिपो में एकत्रित सागौन प्रजाति के 08, सलिहा प्रजाति के 05 चट्टा, अ.डि. लालपुर खैरबना में एकत्रित सागौन प्रजाति के 20 प्रतिशत मिश्रित प्रजाति के 2 प्रतिशत चट्टा कुलयोग 189 जलाऊ चट्टा।
(ब) व्यापारी पंजीयन प्रमाण पत्र एवं प्रस्तुत करना अनिवार्य है।
किसी भी व्यक्ति को नीलाम में बोली लगाने के पूर्व नीलाम की शर्तों का पालन करने के करार के प्रतीक स्वरूप विक्रय सूचना पर हस्ताक्षर करना होगा तथा प्रत्येक लॉट के संबंध में बोली लगाने के पूर्व जिस सीमा तक वह बोली लगाना चाहता है, उसके 10 प्रतिशत के बराबर या 1000/- रू. इनमें से जो अधिक हो, बयाने की राशि जमा करना होगा।

वन मंडलाधिकारी
कवर्धा, वनमंडल कवर्धा
जी-242503732/2

हैहयवंशीय ताम्रकार समाज ने मनाई सहस्त्रबाहु जयंती

राजनांदगांव (दावा)। सहस्त्रबाहु जयंती का कार्यक्रम हैहयवंशीय ताम्रकार समाज द्वारा दिनांक 8 नवम्बर शुक्रवार को महिला अध्यक्ष श्रीमती सुलोचना ताम्रकार के निवास स्थान गायत्री कालोनी में मनाया गया। अध्यक्ष सुशील ताम्रकार द्वारा दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम शुभारंभ किया गया इस अवसर पर महिला व पुरूष, युवा सभी लोग उपस्थित थे। सभी लोग पूजा पाठ करके, प्रसादी के साथ स्वल्पाहार ग्रहण किया। आभार प्रकट युवा सारंग ताम्रकार द्वारा किया। यह कार्यक्रम देर रात तक चलता रहा।

शुभांक

अनुमानित
बी. के
2-7-0
257-4 137-1
राजधानी
3-6-9
890-7 138-2

चेतावनी:-इस पत्र में प्रकाशित सर्वत्र शुभ राशियां ज्योतिष एवं ग्रह नक्षत्र के आधार पर धारणा मात्र है। इसका सट्टे आदि से कोई संबंध नहीं है, दुरूपयोग न करें। दुरूपयोग करने पर प्रकाशक की कोई जवाबदारी नहीं होगी। -सम्पादक

आज से तीन दिनों तक भरेगा मोहारा-मेला, धार्मिक एवं लोक सांस्कृतिक आयोजनों की रहेगी धूम

राजनांदगांव (दावा)। अविभाजित राजनांदगांव जिले का सर्वाधिक लोकप्रिय व अंचल भर में चर्चित मोहारा-मेला आज 14 नवंबर से 16 नवंबर तक तीन दिनों तक भरने जा रहा है। स्थानीय प्रशासन द्वारा इस भव्य मेले की पूरी तैयारी कर ली गई है। शहर की जीवन दायिनी नदी शिवनाथ के तट पर तीन दिनों तक भरने वाले इस धार्मिक आस्था के मेले में नदी तट पर स्थित भगवान शिव की पूजा- अर्चना सहित छत्तीसगढ़ी लोक सांस्कृतिक आयोजनों की धूम रहेगी। मेले में मनोरंजन के साधन हवाई झूले, सर्कस, खेल- तमाशे, रइचूली, ढेलवा, जंपिंग नेट, बच्चों का झूला, ट्राय ट्रेन आदि सहित मनिहारी दुकान, चाट ठेले, होटल, मिष्ठान भंडार, चाय-पानी ठेले, साक- सब्जी, सिंघाड़े, पिड़ी कांदा, गन्ना दुकान आदि सब सज गए।

0 गजकेसरी, बुधादित्य व शश राजयोग के बीच कल होगा कार्तिक पूर्णिमा पूण्य स्नान
0 50 साल से भराते आ रहे मोहारा मेले में पूजा-अर्चना के बीच मेला-मंडई की बिखरेगी छटा

तीन राजयोगों के साथ, कल होगा कार्तिक पून्नी स्नान

कार्तिक पूर्णिमा के दिन नदी-सरोवरों में पूण्य स्नान-ध्यान किए जाने का बड़ा महत्व है। इस दिन रात में चंद्रमा पूरी तरह प्रकाशमान होकर उजियारा फैलाता है। जिसके कारण इसे प्रकाश पर्व भी कहा जाता है। इस दिन चारू चंद्र की चंचल किरणें अपने सुधांशु का अंश नदी-सरोवरो के जल में मिश्रित कर देती है जो अमृत तुल्य होता है। (जस्ट लाईक शरद पूर्णिमा) और जब ऐसे समय में ग्रह- नक्षत्रों का शुभ योग बन जाए तो वह सोने में सुहागा और अति शुभंकर हो जाता है।

शहर के युवा ज्योतिषाचार्य दिवाकर बाजपेई ने बताया कि कल 15 नवंबर कार्तिक पूर्णिमा के दिन मंगल और चंद्रमा दोनों एक राशि पर रहने वाले हैं इससे देर रात गजकेसरी योग बन रहा है। इसी तरह शनि 30 साल बाद कुंभ राशि में गोचर करने जा रहा है व कार्तिक पूर्णिमा के दिन बुधादित्य राजयोग और उसके बाद शश राजयोग बन रहा है जो काफी महत्वपूर्ण राजयोग है। चूंकि ऐसा 30 वर्षों बाद हो रहा है इसलिए इस दिन का महत्व और भी कई गुना बढ़ गया है। इस दिन नदी - सरोवरों के जल में स्नान भगवान शिव व श्री हरि विष्णु की पूजा-अर्चना के बाद दान- पूण्य करने से कई गुना फल की प्राप्ति होती है। पापों का नाश व मृत्यु उपरांत मोक्ष हासिल होता है।

डेढ़ सौ साल से भर रहा है मोहारा मेला

कार्तिक पूर्णिमा पर शिवनाथ नदी के तट पर हर साल भरने वाला मोहारा मेला लगभग डेढ़ सौ साल से राजा के जमाने से भराते आ रहा है। उस समय भी 25 से 30 कि.मी. दूर से लोग मेला देखने आते थे। दूर-दूर के व्यापारी और दुकान दार पहुंचते थे। राजनांदगांव गंज मंडी की प्रसिद्ध दूर-दूर तक पहुंचने और 100-100 कि.मी. दूर से यहां माल पहुंचने से इस मेले की प्रसिद्धी और बढ़ गई। म्युनिस्पाल्टी के समय सन् 1987 में मोहारा मेले का जिक्र किया गया है कि इस मेले में बहुत खर्च होता है इसलिए इसे बंद कर देना चाहिए। शहर के अशोक चौधरी ने बताया कि यह बात जब पार्षद के माध्यम से महंत राजा बलराम दास के पास पहुंची तो राजा जी ने कहा कि मेला बिल्कुल ही बंद न किया जाए, जो भी घाटा हो रहा है वह राजकोष से पूरा किया जाएगा। इस तरह भगवान श्री कृष्ण को मानने वाले बैरागी राजा के उक्त सहयोग से अंचल का सुप्रसिद्ध मोहारा मेला बंद होने से बचा रह गया।

इससे पता चलता है कि मोहारा मेला 1887 से और भी पहले भराते आ रहा था जिससे नगर पालिका को घाटा हो रहा था। इससे इसकी अवधि सन् 1878 -80 तक जा पहुंचती है। जो लगभग 150 साल जा ठहरता है। शिवनाथ नदी के तट पर राजा के जमाने से भरते आ रहे इस मेले में विशेष कर भगवान शिव की पूजा होती है। राजा द्वारा निर्माण किए गए प्राचीन शिव मंदिर नदी के काफी किनारे पर था जो नदी के पानी का कटाव से जीर्ण- शीर्ण हो गया था। बताया जाता है कि सन् 1940 के आसपास आई बाढ़ में वह मंदिर बह गया। बाद में इसका नदी के किनारे पुनर्निर्माण किया गया जो आज के रूप में अवस्थित है। इसके अलावा और भी मंदिर बन गए है जहां कार्तिक पूर्णिमा के दिन विशेष पूजा-अर्चना होती है।

तीन दिवसीय मेले का आयोजन

आज से लगभग 15 बरस पहले मोहारा मेला केवल एक दिवसीय होता था। कार्तिक पूर्णिमा स्नान के दिन ही मेला भरता था। लोग कार्तिक पूर्णिमा पर ब्रह्ममुहुर्त में यहां स्नान के लिए पहुंचते थे। नदी में दीप ज्योति छोड़े जाते थे जिसे झलमला कहा जाता है। बाद में शहर के कुछ उत्साही युवकों संस्था पत्र लेखक मंच की इस ओर दृष्टि गई और नए बने शिव मंदिर के चबूतरे से सूर्य की ओर कई घंटे तक एक टक देखने वाले योगी पुरुष का कार्यक्रम कराया गया जिसे देखने लोगों की भीड़ उमड़ी रही। उसके बाद और कुछ उत्साही लोगों व पत्र लेखक मंच के डीसी जैन के जुड़ने के बाद से मेला तीन दिवसीय होना शुरू हुआ। अब इसकी शिवनाथ तट रक्षण समिति के माध्यम से शोर- खबर ली जा रही है। इससे मेला स्थल पहुंच मार्ग व नदी में घाट निर्माण कुछ अतिरिक्त मंदिर निर्माण आदि जैसे अन्य वैकासिक कार्य हुए हैं। इस मेले में चार चांद लगाने के लिए रायपुर के महादेव घाट की तरह मेला स्थल से लेकर आक्सीजोन तक नदी के उपर लक्ष्मण झूला बनाए जाने की मांग हो रही है।

फिलहाल नगर निगम व जिला प्रशासन के सहयोग से सड़क बिजली पानी से लेकर अन्य सुविधाएं व मेले के दौरान तीन दिनों तक यातायात पुलिस व बसंतपुर एवं कोतवाली पुलिस की तगड़ी सुरक्षा व्यवस्था लोगों को सुरक्षित व व्यवस्थित बनाए रखने की सुविधा उपलब्ध कराता है। नदी में पून्नी-स्नान के समय सुरक्षा व्यवस्था की दृष्टि से गोताखोरों, बेरिकेडिंग के अलावा जगमग प्रकाश व्यवस्था व रात में आयोजित होने वाले लोक सांस्कृतिक कार्यक्रम में व्यवस्था बनाए रखने के लिए नगर निगम से लेकर स्थानीय प्रशासन की विशेष भूमिका रहती है।

भाजपा सरकार किसानों के घर आज से करेगी खुशियों की बारिश - राजेश श्यामकर

राजनांदगांव (दावा)। जिला पंचायत सदस्य एवं जुझारू भाजपा नेता राजेश श्यामकर ने अपने एक जारी बयान में कहा है कि जिले सहित छत्तीसगढ़ में इस वर्ष धान का विपुल उत्पादन देखा जा रहा है। इससे किसानों में प्रसन्नता व्याप्त है साथ ही भाजपा सरकार द्वारा एक मुस्त 3100 रुपए भुगतान किए जाने की घोषणा से भी खुशियों का ठिकाना नहीं रहा हैं।

कहा - इस वर्ष विपुल उत्पादन और एक मुस्त भुगतान तथा सोसाइटी कर्मचारियों की हड़ताल खत्म होने से प्रसन्नता का माहौल

इतना ही नहीं ऐन धान खरीदी सीजन में समिति कर्मचारियों की हड़ताल खत्म होने से भी खुशी की लहर है। भाजपा नेता राजेश श्यामकर ने केंद्र और राज्य की भाजपा सरकार की प्रशंसा करते हुए कहा कि डबल इंजन की सरकार किसानों की सदैव हितैषी रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसानों के खाते में दो-दो हजार करके सालाना 6000 रुपये प्रदान करने से किसान पहले ही खुश है और यह राशि उनकी खेती की दशा सुधारने के लिए सहायक है।

राज्य के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय नीत भाजपा सरकार आगामी 14 नवंबर से सेवा सहकारी समितियां उनके उपार्जन केंद्रों में 3100 रुपये क्विंटल के हिसाब से धान खरीदी करने जा रही है। यह राशि भी बहुत जल्द मिलेगी और किसान पुराना कर्ज छूट सकेंगे कर्ज नहीं है तो कोई बड़ा कृषि यंत्र ट्रैक्टर ट्राली रिपर हार्वेस्टर आदि खरीद सकेंगे। श्री श्यामकर ने कहा कि किसान भाई बहन इन दिनों हरुना और माई धान की फसल काट मिज कर घरों में सहेजकर रख रहे हैं। ताकि 14 नवंबर से सेवा सहकारी समिति कार्यालय एवं उनके धान उपार्जन केंद्र खुलने के साथ टोकन लेकर बेचा जा सके फिलहाल जिन किसानों को तुरंत नगद राशि चाहिए वह मंडी में अच्छे कीमत पर बेच पा रहे हैं। इसलिए किसानों में रेट को लेकर प्रसन्नता व्याप्त है।

प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी 2.0 के तहत सबके लिये आवास

योजना में आवासहीन कमजोर व मध्यम वर्ग के परिवारों का होगा सपना पूरा

राजनांदगांव (दावा)। प्रधानमंत्री आवास योजना के द्वितीय चरण 2.0 के क्रियान्वयन के लिये आज नगरीय प्रशासन विभाग के सचिव के द्वारा एक विशेष बैठक वर्चुवल तौर पर ली गई बैठक में केन्द्र सरकार की सबके लिए आवास मिशन योजना के दिशानिर्देश के संबंध में निकायवार व्यक्तिगत चर्चा की गयी और शहरी क्षेत्र में निवासरत कमजोर वर्ग व मध्यम वर्ग के परिवारों का स्वयं के आवास का सपना साकार करने प्रधानमंत्री आवास योजना के द्वितीय चरण की शुरूवात की जा रही है। वर्चुवल बैठक में शासन के प्राप्त निर्देशों के अनुसार दिनांक 15 नवम्बर 2024 से इसके प्रचार प्रसार के साथ-साथ प्रत्येक वार्डवार सर्वेक्षण कर नये आवेदन एकत्रित करने के लिए एक प्रभावकारी रूपरेखा तैयार कर नवीन आवेदन फार्म एकत्रित करने के लिए दिशा निर्देश दिये गये।

नगरीय क्षेत्र में क्रियान्वयन के लिये दिये गये दिशा निर्देश के अनुसार निगम आयुक्त अतुल विश्वकर्मा ने बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना के द्वितीय चरण में कमजोर एवं मध्यम वर्ग के आवासहीन परिवार का स्वयं के आवास का सपना साकार करना है। जिसके तहत सभी पात्र लभार्थी/परिवारों/कार्यान्वयन एजेन्सी को किफायती लागत पर आवास के निर्माण, खरीद या किराये के लिये राज्यो/संघ राज्य क्षेत्रों/प्राथमिक ऋणदाता संस्थानों (पी.एल.आई.) के माध्यम से केन्द्रीय सहायता प्रदान की जायेगी। योजना 4 घटकों के माध्यम से लागू किया जायेगा- लाभार्थी आधारित निर्माण (बी.एल.सी.) 2. भागीदारी से किफायती आवास (ए.एच.पी.), 3. किफायती किराया आवास (ए.आर.एच.) 4. ब्याज सब्सिडी योजना (आईएसएस)

आयुक्त श्री विश्वकर्मा ने बताया कि पात्रता के लिये आवेदक का 31 अगस्त 2024 से निकाय क्षेत्र में रहवासी होना अनिवार्य है। आवेदक के परिवार की वार्षिक आय 03 लाख से कम हो। संपूर्ण भारत देश में कहीं पर भी उसे परिवार का कोई आवास यवासीय भूमि ना हो प्रधानमंत्री आवास योजना के अनुसार पति पत्नी और विवाहित बच्चे एक परिवार होते हैं।

आयुक्त श्री विश्वकर्मा ने निकाय क्षेत्र में आवासहीन परिवारों को एवं आवास निर्माण करने वाले परिवारों से अपील की है कि वह सभी आवास योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए आवश्यक दस्तावेज की मूल प्रति एवं छाया प्रति अपने पास रखें आवश्यक दस्तावेज पूरे परिवार का आधार कार्ड मतदाता परिचय पत्र बैंक पासबुक राशन कार्ड जाति प्रमाण पत्र आय प्रमाण पत्र जमीन के दस्तावेज, आदि दस्तावेज का सर्वेक्षण के दौरन सत्यापन कर आवास योजना हेतु फार्म भरे जायेगे। उन्होंने बताया कि आवास योजना का लाभ देने वार्डो में सम्पर्क किया जावेगा। साथ ही निगम के आवास कार्यालय में भी आवेदन की प्रक्रिया की जावेगी। उन्होंने नागरिकों से अपील की है कि योजना का लाभ लेकर अपने स्वयं के आवास का सपना साकार करें।

खाटूश्याम बाबा की निशान यात्रा व श्री दासीश्याम प्रभु शोभायात्रा का भव्य आतिशबाजी व भव्य पुष्प वर्षा से खंडेलवाल युवा कल्याण संगठन ने किया स्वागत

राजनांदगांव (दावा)। खंडेलवाल युवा कल्याण संगठन के उपाध्यक्ष प्रतीक खंडेलवाल ने बताया कि संस्कारधानी राजनांदगांव की सदैव सेवा कार्यों में समर्पित संस्था खंडेलवाल युवा कल्याण संगठन द्वारा सेवाभावी अध्यक्ष अर्पण खंडेलवाल के नेतृत्व में श्री खाटूश्याम बाबा की निशान यात्रा एवं श्री दासी श्याम प्रभु कि दिव्य भव्य शोभायात्रा का स्वागत भव्य आतिशबाजी व भव्य पुष्प वर्षा से शोभायात्रा का स्वागत करने का सौभाग्य संस्कारधानी राजनांदगांव के खंडेलवाल युवा कल्याण संगठन को प्राप्त हुआ शोभायात्रा में हजारों की संख्या में उपस्थित भक्तों का स्वागत पुष्प वर्षा कर किया गया इस अवसर पर खंडेलवाल युवा कल्याण संगठन के अध्यक्ष अर्पण खंडेलवाल, उपाध्यक्ष प्रतीक खंडेलवाल सचिव चिराग खंडेलवाल, कोषाध्यक्ष पराग खंडेलवाल, विशेष आमंत्रित सदस्य मुकेश खंडेलवाल, नरेंद्र खंडेलवाल मीडिया प्रभारी निकुंज खंडेलवाल, चिकित्सा प्रभारी परिवेश खंडेलवाल, सोशल मीडिया प्रभारी पवन खंडेलवाल एवं कार्यकारणी सदस्य नीरव खंडेलवाल तनय खंडेलवाल, सारांश खंडेलवाल एवं खंडेलवाल युवा कल्याण संगठन के पूर्व विशेष आमंत्रित सदस्य सौरभ दुसाद सहित अन्य युवा साथियों को पुष्प वर्षा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह जानकारी संगठन के मीडिया प्रभारी निकुंज खंडेलवाल ने दी।

मुख्य सचिव ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से धान खरीदी, घुमंतू पशुओं के नियंत्रण, शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता की स्थिति के संबंध में की समीक्षा

धान उपार्जन केन्द्रों में किसानों की सुविधा का विशेष ध्यान रखने के दिए निर्देश

राजनांदगांव (दावा)। मुख्य सचिव अमिताभ जैन ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राज्य में धान खरीदी, स्वच्छता, सड़क सुरक्षा, जीयो रिफ्रेसिंग कार्य, जल जीवन मिशन के संबंध में कमिश्नर और जिला कलेक्टरों की बैठक में समीक्षा की। कलेक्टर संजय अग्रवाल, सीईओ जिला पंचायत सुश्री सुरूचि सिंह वीडियो कांफ्रेसिंग के माध्यम से एनआईसी कक्ष राजनांदगांव से जुड़े रहे। मुख्य सचिव अमिताभ जैन ने कहा कि धान खरीदी शासन की सबसे महत्वपूर्ण योजना है। उन्होंने सभी अधिकारियों को धान खरीदी के कार्य को गंभीरतापूर्वक करने के लिए कहा। मुख्य सचिव ने धान उपार्जन केन्द्रों में किसानों की सुविधा का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी धान उपार्जन केन्द्रों में धान खरीदी शत प्रतिशत होनी चाहिए। धान उपार्जन केन्द्रों में बारदाने की व्यवस्था, किसानों को भुगतान के लिए पर्याप्त राशि, खरीदी केन्द्र से धान का उठाव, खसरा सत्यापन सहित आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने कहा। मुख्य सचिव श्री जैन ने शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में घुमंतू पशुओं के कारण होने वाले सड़क दुर्घटनाओं के नियंत्रण के लिए कार्ययोजना बनाकर कार्य करने कहा। इसके लिए शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवस्थित स्थान का चयन कर घुमंतू पशुओं का व्यवस्थापन करने कहा। उन्होंने कहा कि जन्म और मृत्यु का शत प्रतिशत पंजीयन होना चाहिए। इसके लिए संबंधित विभागों को निर्देशित करने कहा। प्रमुख सचिव ने शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता, जल जीवन मिशन के कार्यों की समीक्षा की। इस अवसर पर अपर कलेक्टर श्रीमती इंदिरा नवीन प्रताप सिंह तोमर, नगर निगम आयुक्त अतुल विश्वकर्मा, एसडीएम राजनांदगांव खेमलाल वर्मा सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

घुमंतू पशुओं के कारण होने वाली सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए कार्ययोजना बनाकर कार्य करने कहा

मठ मंदिर, संस्कृति, हिन्दू समाज और गौ-माता की रक्षा के लिए मनेरी में हुआ विश्व हिन्दू परिषद-बजरंग दल का गठन

राजनांदगांव (दावा)। हिंदुओं के संरक्षण के उद्देश्य से कार्यरत एकमात्र संगठन विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल अपने विस्तार को तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है।

हिंदू समाज को सशक्त बनने एवं युवा पीढ़ी में सेवा सुरक्षा संस्कार का संस्कार जगाने के उद्देश्य से बजरंग दल के पदाधिकारी ग्राम-ग्राम तक पहुंच समिति निर्माण कर रहे है, जिसमें ग्राम मनेरी में विहिप, बजरंग दल ने ग्राम समिति की घोषित की, जिसमें बजरंग दल खंड संयोजक युवराज साहू, सह संयोजक पुरंजय चंद्र साहू, गौ-रक्षा प्रमुख प्रतीक साहू, बलोउपासना (अखाड़ा) प्रमुख डोगेन्द्र साहू, सुरक्षा प्रमुख टूमेश साहू, चुम्मन मंडावी, विद्यार्थी प्रमुख ईश्वर डहरे, छवि साहू, साप्ताहिक मिलन प्रमुख प्रकाश, नागेश चुने गए। उक्त स्थान पर विहिप पदाधिकारी प्रांत सहमंत्री नंदूराम साहू, विभाग मंत्री अरुण गुप्ता, बजरंग दल जिला संयोजक सुनीन सेन, जागेश्वर यादव जनपद सदस्य, भाजपा नेता जनक साहू, टोवा राम साहू ग्राम सियान सहित हिन्दू जन गिरवार साहू, यशवंत साहू, गोल्ड़ी साहू, गोविंद साहू, लुकेंद, छबील, सुरेश कोठारी, बोधन साहू, ताराचंद साहू, लोकेश निषाद, हरीश कुमार साहू, राजकुमार निषाद, रोहन साहू, किशन लाल एवं भारी संख्या में हिन्दूजन की उपस्थिति रही।

रायपुर से बैंगलोर ले जाई जा रही थीं गायें: भिलाई में बजरंगियों ने ट्रकों का पीछा किया, सुपेला पुलिस ने पकड़ा

दुर्ग(दावा)। सुपेला पुलिस ने सुपेला टोल नाका के पास तमिलनाडु पासिंग की दो ट्रक चालकों को गिरफ्तार किया है। दोनों चालक अपने ट्रक में मवेशियों को भरकर बैंगलोर कत्लखाने ले जा रहे थे। इसकी जानकारी बजरंगियों को लगी, तो उन्होंने ट्रकों का पीछा किया और पुलिस को सूचना दी। सुपेला थाना प्रभारी राजेश मिश्रा ने बताया कि, उनकी टीम ने मंगलवार देर रात सुपेला टोल नाका से दो ट्रक टीएन 73 एजे 0178 और टीएन 29 सीडब्ल्यू 7345 पकड़ा था। तलाशी लेने पर उसके अंदर 16 मवेशी मिले। इसमें एक ट्रक में 4 गाय, दो बछिया और दो बछड़े थे। इसी तरह दूसरे ट्रक में भी 8 मवेशी भरे थे। पुलिस ने वाहन को जब्त कर लिया है। पूछताछ करने पर आरोपियों ने बताया कि, वो लोग रायपुर के आगे से इन मवेशियों को खरीदकर ला रहे थे। इसके बाद वो इन्हें बैंगलोर लेकर जाते और कत्लखाने में छोड़ने वाले थे। ट्रक चालकों ने बताया कि उनके यहां से ही मवेशियों की तस्करी की जाती रही है।

ज़मीन बँटवारे के नाम पर बड़े भाई की हत्या, हत्यारे भाई को आजीवन कारावास

राजनांदगाँव(दावा)। न्यायालय माननीय जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजनांदगाँव 'श्रीमति सुषमा सावंत' द्वारा जमीन बंटवारे के नाम पर अपने बड़े भाई की हत्या करने के मामले में संपूर्ण विचारण के बाद फैसला सुनाते हुये अभियुक्त रामप्रसाद मण्डावी आ. स्व. ठुबाराम मंडावी, उम्र 32 वर्ष, निवासी ग्राम कोसमी, साहू पारा, वार्ड नं. 01, थाना खड़गाँव को अपने भाई ओमप्रकाश मंडावी, उम्र 36 साल की हत्या करने का दोषी साबित पाते हुए भारतीय दण्ड विधान की धारा 302 के तहत् आजीवन कारावास तथा 1000 रूपये का अर्थदंड, अर्थदंड की राशि अदा न किये जाने की स्थिति में छः माह का अतिरिक्त सश्रम कारावास की सजा से दंडित किये जाने का दंडादेश पारित किया गया।

मामले में छत्तीसगढ़ शासन की ओर से पैरवी करने वाले जिला लोक अभियोजक नारायण कन्नौजे ने बताया कि, रोहित मंडावी, ओमप्रकाश मंडावी व रामप्रसाद मंडावी सगे भाई हैं तथा ग्राम कोसमी के निवासी है। रोहित मंडावी अपने दोनों भाईयों ओमप्रकाश मंडावी व रामप्रसाद मंडावी से अलग निवास करता था। ओमप्रकाश एवं रामप्रसाद अपनी माँ सुरजा बाई के साथ रहते थे। ओमप्रकाश एवं रामप्रसाद के बीच जमीन बंटवारा को लेकर आये दिन विवाद होते रहता था। दिनांक 03.03.2023 को ग्राम कोसमी का मंडई था, उस दिन शाम 6.00 बजे ओमप्रकाश मंडावी ने अभियुक्त रामप्रसाद मंडावी से जमीन बंटवारे को लेकर झगड़ा किया था, दोनों आपस में झगड़ रहे थे, तब उनकी माँ सुरजा बाई बच्चों को लेकर मंडई नाचा देखने चली गई यह सोचकर की रोज की तरह दोनों भाईयों का झगड़ा-लड़ाई हो रहा है। माँ सुरजा बाई मंडई नाचा के अगले दिन सुबह घर वापस आयी तो उसने आंगन में खून के धब्बे देखें, घर के अंदर जाकर देखी तो रामप्रसाद के कमरे में ओमप्रकाश लहुलुहान हालत में चित पड़ा था तब सुरजा बाई ने अपने पुत्र रोहित मंडावी को जानकारी दी।

रोहित मंडावी ने घर आकर देखा कि भाई ओमप्रकाश खाट में चित अवस्था में पड़ा है, उसने थाना खड़गाँव जाकर ओमप्रकाश की मृत्यु की सूचना दी जिस पर थाना खड़गांव द्वारा मामला दर्ज कर प्रकरण जांच में लिया गया। जांच में पाया गया कि, मृतक ओमप्रकाश एवं रामप्रसाद का आये दिन जमीन बंटवारा को लेकर लड़ाई-झगड़ा होते रहता था इसी बात पर से घटना दिनाँक को अभियुक्त रामप्रसाद मंडावी एवं मृतक ओमप्रकाश के बीच लड़ाई-झगड़ा हुआ जिस पर अभियुक्त रामप्रसाद मंडावी द्वारा लड़ाई-झगड़े से परेशान होकर हाथ-मुक्का व ईट से ओमप्रकाश मंडावी के ऊपर प्राणघातक वार कर उसकी हत्या कर दिया। विवेचना के दौरान अभियुक्त रामप्रसाद मंडावी को गिरफ्तार कर जिला जेल भेजा गया था तथा संपूर्ण जांच उपरान्त भारतीय दण्ड विधान की धारा 302 के तहत् अभियोग पत्र विचारण हेतु न्यायालय के समक्ष पेश किया गया था।

धान खरीदी से पहले कलेक्टर का बड़ा एक्शन : 44 केंद्रों के प्रभारी हटाए गए, लापरवाही की मिली थी शिकायत

बलौदाबाजार (दावा)। छत्तीसगढ़ के बलौदाबाजार जिले में धान खरीदी से कलेक्टर ने बडा एक्शन लिया है। पिछले वर्ष धान खरीदी में लापरवाही की शिकायतों पर एक्शन लेते हुए 44 धान खरीदी केंद्रों के प्रभारियों को हटा दिया है। जिसमें कसडोल, पलारी और भाटापारा ब्लॉक के अलग- अलग प्रभारी के ऊपर कार्रवाई की गई है।

आज से शुरू होगी धान खरीदी

उल्लेखनीय है कि, राज्य में समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी आज 14 नवंबर से प्रारंभ होने जा रही है। प्रदेश के किसानों से धान खरीदी की योजना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता में हैं। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के दिशानिर्देश पर प्रदेश के सभी 2739 उपार्जन केन्द्रों में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी हेतु आवश्यक तैयारियां पूर्ण कर ली गई है। इस खरीफ सीजन के लिए प्रदेश में पंजीकृत कृषकों की संख्या 27 लाख 1 हजार 109 है। इस वर्ष 1 लाख 35 हजार 891 नये किसान पंजीकृत हुए हैं और 1 लाख 36 हजार 263 हेक्टेयर नवीन रकबों का पंजीयन किया गया है।

सभी उपार्जन केन्द्रों में बायोमैट्रिक डिवाईस के माध्यम से उपार्जन की व्यवस्था की गई है। छोटे, सीमांत और बड़े कृषकों के द्वारा उपजाये गए धान को निर्धारित समर्थन मूल्य में खरीदा जाएगा। इसके लिए 7 नवंबर से ही टोकन आवेदन की व्यवस्था आरंभ कर दी गई है। खरीदी सीजन में लघु एवं सीमांत कृषकों को अधिकतम 2 टोकन एवं बड़े कृषकों को 3 टोकन की पात्रता होगी।

खरीदी केंद्रों में तौल हेतु इलेक्ट्रानिक कांटे की व्यवस्था

धान खरीदी अवधि आज 14 नवंबर 2024 से 31 जनवरी 2025 के दौरान किसान अपना धान खरीदी केन्द्रों में लाकर समर्थन मूल्य पर विक्रय कर सकते है।

खरीदी केंद्रों में तौल हेतु इलेक्ट्रानिक कांटा-बांट की व्यवस्था की गई है। खरीदी केंद्रों से धान का उठाव मिलर एवं परिवहनकर्ता के माध्यम से समयानुसार कराने के निर्देश दिये गये है। सभी खरीदी केन्द्रों में पर्याप्त बारदाने की व्यवस्था से लेकर छांव, पानी आदि की व्यवस्था सुनिश्चित कर ली गई है।

अनमोल दावा

"जीवन में चाहे कितनी भी बुरी घटनाएँ घटें, अच्छा व्यवहार कभी न छोड़ें, विजय सत्य की ही होती है।

समस्या पर शोर मचे तो समाधान भी हो, बांग्लादेश से होने वाली घुसपैठ कब लगेगी रोक

कहना कठिन है कि देश में कितने बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठिए हैं लेकिन यह पक्का है कि वे ठीक-ठाक संख्या में हैं। प्रश्न यह है कि उनकी घुसपैठ थम क्यों नहीं रही और उन्हें बाहर निकालने में सफलता क्यों नहीं मिल रही है? केवल इतना ही पर्याप्त नहीं कि बांग्लादेशी घुसपैठियों को चुनावी मुद्दा बनाया जाए। इस मुद्दे का समाधान भी होना चाहिए और वह भी प्राथमिकता के आधार पर।

त्रिपुरा, असम और बंगाल में जब भी चुनाव होते हैं, तब अन्य अनेक मुद्दों के साथ बांग्लादेशी घुसपैठियों का मुद्दा अवश्य उठता है। इस बार ऐसा झारखंड में भी हो रहा है। बांग्लादेश से होने वाली घुसपैठ विधानसभा चुनावों में बड़ा मुद्दा बन गई है।

जहां भाजपा इस पर जोर देने में लगी हुई है कि बांग्लादेश से बंगाल के रास्ते आने वाले बांग्लादेशी न केवल झारखंड की जनसांख्यिकी (डेमोग्राफी) बदल रहे हैं, बल्कि आदिवासी लड़कियों से शादी कर रहे हैं और उनकी जमीन भी हड़प रहे हैं, वहीं सत्तारूढ़ झारखंड मुक्ति मोर्चा की मानें तो भाजपा जो कुछ कह रही है, वह सही नहीं। झामुमो नेताओं का कहना है कि यदि बांग्लादेश से घुसपैठ हो रही है तो फिर जवाबदेह केंद्र सरकार है, क्योंकि सीमा सुरक्षा उसके ही कंधों पर है।

पता नहीं चुनाव में झारखंड की जनता किसकी बातों को महत्व देगी, मगर इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि बांग्लादेशी घुसपैठियों का मसला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच चुका है। दो वर्ष पहले झारखंड हाई कोर्ट में जमशेदपुर के सैयद दानियाल दानिश की ओर से दायर जनहित याचिका में कहा गया था कि साहिबगंज, पाकुड़, गोड्डा, दुमका, जामताड़ा आदि जिलों में आदिवासी आबादी घट रही है, क्योंकि बांग्लादेशी घुसपैठियों को आदिवासियों की जमीन पर बसाया जा रहा है। वास्तव में भाजपा बांग्लादेशी घुसपैठियों को लेकर जो कुछ कह रही है, वह मोटे तौर वही है, जिसका उल्लेख दानिश की याचिका में किया गया है। इस याचिका पर सुनवाई करते हुए सितंबर में झारखंड हाई कोर्ट ने आदेश दिया कि बांग्लादेशी घुसपैठियों का पता लगाने के लिए केंद्र और राज्य के अधिकारियों की एक तथ्य खोजी यानी फैक्ट फाइंडिंग कमेटी बनाई जाए। झारखंड सरकार पहले तो इसके लिए तैयार हो गई, लेकिन फिर पीछे हट गई और हाई कोर्ट के आदेश के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंच गई।पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को अपना पक्ष रखने को कहा है। पता नहीं, सुप्रीम कोर्ट किस नतीजे पर पहुंचेगा, लेकिन यह एक सच्चाई है कि बांग्लादेश से घुसपैठ होती है। यदि बंगाल के रास्ते घुसे बांग्लादेशी झारखंड आकर बस गए हों तो हैरानी नहीं। वैसे भी यह सच है कि झारखंड के आदिवासी बहुल इलाकों में डेमोग्राफी बदली है। यह असम, त्रिपुरा और बंगाल में भी बदली है और अब तो टाटा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसेज की रिपोर्ट के अनुसार मुंबई में भी बांग्लादेशियों और रोहिंग्याओं के चलते आबादी का संतुलन बिगड़ रहा है। इस रिपोर्ट के अनुसार यदि यही हाल रहा तो 2051 तक मुंबई में हिंदू आबादी घटकर 54 प्रतिशत से भी कम हो जाएगी और बांग्लादेशी घुसपैठियों एवं रोहिंग्याओं के कारण मुस्लिमों की आबादी 30 प्रतिशत हो जाएगी। इस रिपोर्ट के अनुसार 2011 में मुंबई में हिंदुओं की आबादी 66 प्रतिशत और मुसलमानों की 21 प्रतिशत थी। इस रिपोर्ट में साफ कहा गया है कि कुछ राजनीतिक संगठन वोट बैंक की राजनीति के लिए अवैध अप्रवासियों का इस्तेमाल कर रहे हैं। चुनाव के चलते भाजपा ने इस रिपोर्ट का जोर-शोर से उल्लेख करना शुरू कर दिया है, लेकिन क्या इतना ही पर्याप्त है? बांग्लादेश से भारत में तबसे घुसपैठ हो रही है, जब वह पूर्वी पाकिस्तान था। 1971 में पूर्वी पाकिस्तान के बांग्लादेश बन जाने के बाद भी वहां से घुसपैठ जारी रही और अब भी हो रही है। बंगाल, असम, त्रिपुरा के रास्ते अवैध रूप से भारत आए बांग्लादेशी घुसपैठिए आए दिन देश के विभिन्न हिस्सों में पकड़े जाते हैं। कुछ समय पहले पुणे में 21 बांग्लादेशी घुसपैठिए गिरफ्तार किए गए। इनके पास नकली आधार, पैन और वोटर आइडी भी थे। इसी तरह हाल में अहमदाबाद में करीब 50 बांग्लादेशी गिरफ्तार किए गए।

इनमें से कई के पास फर्जी पहचान पत्र थे। इस पर चकित होने की जरूरत नहीं कि भारत में घुसने वाले बांग्लादेशी पुणे, अहमदाबाद तक कैसे पहुंच जा रहे हैं, क्योंकि पूर्वोत्तर राज्यों की सीमा में घुसकर रोहिंग्याओं ने दिल्ली, जम्मू, हैदराबाद तक में अपने ठिकाने बना लिए हैं। कहना कठिन है कि देश में कितने बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठिए हैं, लेकिन यह पक्का है कि वे ठीक-ठाक संख्या में हैं। प्रश्न यह है कि उनकी घुसपैठ थम क्यों नहीं रही और उन्हें बाहर निकालने में सफलता क्यों नहीं मिल रही है? केवल इतना ही पर्याप्त नहीं कि बांग्लादेशी घुसपैठियों को चुनावी मुद्दा बनाया जाए। इस मुद्दे का समाधान भी होना चाहिए और वह भी प्राथमिकता के आधार पर। भाजपा बंगाल और झारखंड के मुख्यमंत्रियों पर यह आरोप लगाती रहती है कि वे बांग्लादेशी घुसपैठियों को लेकर उदार हैं और उन्हें अपना वोट बैंक बनाने की ताक में रहते हैं। ऐसा ही आरोप रोहिंग्याओं को लेकर भी लगता है। इस नतीजे पर पहुंचने के पर्याप्त कारण हैं कि बांग्लादेशियों और रोहिंग्याओं की घुसपैठ कराकर उन्हें सुनियोजित तरीके से भारतीय नागरिक बनाया जा रहा है, लेकिन इस सवाल में भी दम है कि आखिर केंद्र सरकार घुसपैठ रोकने के लिए क्या कर रही है? सीमाओं की सुरक्षा के साथ घुसपैठियों की पहचान करना और उन्हें निकालना तो उसका ही काम है।

'बुलडोज़र एक्शन' पर सुप्रीम कोर्ट ने दिए ये दिशा-निर्देश

सुप्रीम कोर्ट की दो सदस्यीय बेंच ने बुधवार को देश में बुलडोज़र से संपत्तियों को तोड़े जाने को लेकर दिशा निर्देश जारी किए हैं.

जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस केवी विश्वनाथन की बेंच ने कहा है कि किसी व्यक्ति के घर या संपत्ति को सिर्फ़ इसलिए तोड़ दिया जाना कि उस पर अपराध के आरोप हैं, क़ानून के शासन के ख़िलाफ़ है. सुप्रीम कोर्ट ने ये दिशा-निर्देश घरों को बुलडोज़र से तोड़े जाने के ख़िलाफ़ दायर याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए दिए हैं.अपना आदेश सुनाते हुए जस्टिस गवई ने कहा, एक आम नागरिक के लिए घर बनाना कई सालों की मेहनत, सपनों और महत्वाकांक्षाओं का नतीजा होता है. कई राज्यों में प्रशासन ने ऐसे लोगों के घरों को तोड़ा है, जिन पर सरकार के ख़िलाफ़ विरोध-प्रदर्शनों में शामिल होने का शक़ था.

उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के शासन में बुलडोज़र का महिमामंडन भी किया गया है. उनके कई समर्थक राजनीतिक रैलियों में बुलडोज़र लेकर आते रहे.अपना आदेश सुनाते हुए जस्टिस गवई और जस्टिस विश्वनाथन की बेंच ने कहा, हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि अगर कार्यपालिका मनमाने ढंग से किसी नागरिक के घर को केवल इस आधार पर तोड़ देती है कि वह किसी अपराध का अभियुक्त है तो कार्यपालिका क़ानून के शासन के सिद्धांतों के ख़िलाफ़ कार्य करती है.अगर कार्यपालिका न्यायाधीश के रूप में कार्य करते हुए किसी नागरिक पर केवल अभियुक्त होने के आधार पर विध्वंस का दंड लगाती है तो यह शक्तियों के विभाजन के सिद्धांत का भी उल्लंघन है.

सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में ये भी कहा है कि ऐसे मामलों में जो अधिकारी क़ानून अपने हाथ में लेते हुए इस तरह की मनमानी कार्रवाई करते हैं, उन्हें भी जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए.

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इस तरह की मनमानी, एकतरफ़ा और भेदभावपूर्ण कार्रवाइयों को रोकने के लिए कुछ दिशा निर्देश ज़रूरी है.

अदालत ने ऐसी परिस्थितियों से निबटने के लिए कई दिशा-निर्देश भी जारी किए हैं.पूर्व में कारण बताओ नोटिस दिए बिना विध्वंस की कोई कार्रवाई नहीं की जानी चाहिए. इस नोटिस का उत्तर या तो स्थानीय नगरपालिका क़ानूनों में निर्धारित समय के अनुसार या नोटिस दिए जाने के पंद्रह दिनों के भीतर दिया जा सके. नोटिस पंजीकृत डाक से भेजा जाए और संपत्ति पर भी चिपकाया जाए. नोटिस में विध्वंस के आधार स्पष्ट हो. नोटिस को पूर्व तिथि पर जारी किए जाने के आरोपों से बचने के लिए, जैसे ही नोटिस संपत्ति के स्वामी या वहां रहने वालों को भेजा जाए, उसके बारे में जानकारी जिलाधिकारी कार्यालय या कलेक्टर ऑफ़िस में भी भेजी जाए.

देश की हर स्थानीय नगर पालिका प्राधिकरण को, इन दिशा निर्देशों के प्रकाशन के तीन महीनों के भीतर एक डिजिटिल पोर्टल बनाना करना होगा, जिस पर नोटिस दिए जाने, नोटिस चिपकाए जाने, नोटिस के जवाब और इस संबंध में जारी आदेश की कॉपी सार्वजनिक हो. प्रशासन को पीड़ित को सुनवाई का मौक़ा देना होगा और इसकी बैठक की रिकॉर्डिंग भी की जाए. विध्वंस के आदेश के ख़िलाफ़ अपील किए जाने और न्यायिक समीक्षा का अवसर भी होना चाहिए. विध्वंस के आदेश को डिजिटिल पोर्टल पर प्रदर्शित किया जाना चाहिए.

संपत्ति के स्वामी को अवैध हिस्से को पंद्रह दिनों के भीतर स्वयं गिराने का अवसर दिया जाना चाहिए और अगर अपील प्राधिकरण विध्वंस आदेश पर स्थगन आदेश ना दे, तब ही विध्वंस की कार्रवाई की जानी चाहिए. विध्वंस की कार्रवाई की वीडियोग्राफ़ी की जानी चाहिए और विध्वंस रिपोर्ट तैयार की जानी चाहिए. किसी भी निर्देश का उल्लंघन होने पर अवमानना की कार्रवाई की जाएगी. अगर विध्वंस की कार्रवाई में अदालत के निर्देशों का उल्लंघन पाया जाता है तो संबंधित अधिकारियों अपने निजी खर्च पर गिराई गई संपत्ति की पुनर्स्थापना कराएंगे. सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि ये आदेश ऐसे मामलों में लागू नहीं होंगे जहां सार्वजनिक स्थलों, जैसे कि सड़क पर कोई अवैध संरचना हो.किसी अदालत द्वारा दिए गए विध्वंस के आदेशों पर भी यह दिशा निर्देश लागू नहीं होंगे.इससे पहले अदालत ने अपने आदेश सुरक्षित करते हुए आश्वासन दिया था कि वह दोषी क़रार दिए गए अपराधियों की भी वैध निजी संपत्तियों की राज्य प्रायोजित दंडात्मक विध्वंस कार्रवाइयों से रक्षा करेगी.अदालत राजस्थान और मध्य प्रदेश में हुई बुलडोज़र कार्रवाई के ख़िलाफ़ दायर याचिकाएं पर सुनवाई कर रही थी.

राजस्थान और मध्य प्रदेश में मुसलमान किराएदारों के कथित अपराध में शामिल होने के बाद सांप्रदायिक तनाव हुआ था. जिसके बाद प्रशासन ने उन घरों को गिरा दिया था, जिनमें ये परिवार रह रहे थे.दिल्ली के जहांगीरपुरी इलाक़े में साल 2022 में हुई बुलडोज़र कार्रवाई के ख़िलाफ़ जमियत उलेमा ए हिंद ने भी याचिका दायर की थी.सुनवाई के दौरान इस याचिका को भी इन याचिकाओं के साथ शामिल कर लिया गया था. कई अन्य राज्यों में हुई बुलडोज़र कार्रवाई को भी अदालत में चुनौती दी गई थी.हाल ही में एक अन्य फ़ैसले में भी सुप्रीम कोर्ट ने बुलडोज़र एक्शन पर सख़्त रुख़ अपनाया था.

उत्तर प्रदेश में एक मकान ध्वस्त किए जाने से जुड़े मामले पर फ़ैसला देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि देश में बुलडोज़र जस्टिस की कोई जगह नहीं है.इस मामले में, भारत के तत्कालीन चीफ़ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा था, %क़ानून के शासन में बुलडोज़र न्याय की कोई जगह नहीं है.%उनका कहना था, अगर इसकी अनुमति दी गई तो अनुच्छेद 300ए के तहत संपत्ति के अधिकार की संवैधानिक मान्यता ख़त्म हो जाएगी.कोर्ट ने उत्तर प्रदेश सरकार को मुआवज़े के रूप में पीड़ित व्यक्ति को 25 लाख रुपये देने का निर्देश भी दिया है.उत्तर प्रदेश के महाराजगंज के रहने वाले मनोज टिबड़ेवाल आकाश का घर साल 2019 में सड़क चौड़ीकरण परियोजना के तहत ध्वस्त कर दिया गया था.सुप्रीम कोर्ट ने ये फ़ैसला 6 नवंबर को सुनाया था. इस फ़ैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि नागरिकों को संपत्तियों को नष्ट करने की धमकी देकर उनकी आवाज़ को नहीं दबाया जा सकता है.कोर्ट ने कहा कि बुलडोज़र न्याय न केवल क़ानून के शासन के ख़िलाफ़ है बल्कि यह मौलिक अधिकारों का भी उल्लंघन करता है.

अपने फ़ैसले में कोर्ट ने कहा, लोगों की संपत्तियों और उनके घरों को तोड़कर उनकी आवाज़ को नहीं दबाया जा सकता है. एक व्यक्ति के पास जो सबसे बड़ी सुरक्षा होती है, वह उसका घर ही है.सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सरकार को किसी भी व्यक्ति की संपत्ति ध्वस्त करने से पहले क़ानूनी प्रक्रिया का पालन करना चाहिए और उन्हें सुनवाई का मौक़ा देना चाहिए. कोर्ट का कहना है कि अगर किसी विभाग या अधिकारी को मनमाने और ग़ैर-क़ानूनी व्यवहार की इजाज़त दी जाती है तो इस बात का ख़तरा है कि प्रतिशोध में लोगों की संपत्तियों को ध्वस्त किया जा सकता है.

विचार सरिता

मन में बसे हैं राम - 313 : श्री राम, सीता और लक्ष्मण पहुंचे वेदश्रुति नदी के पार

डॉ. योगेंद्र कुमार पांडेय

श्री राम, सीता जी तथा लक्ष्मण जी ने सरोवर में स्नान के बाद भगवान सूर्य की पूजा की। तीनों ने पूर्वाभिमुख होकर सूर्यदेव को जल अर्पित किया। इसके बाद तीनों रथ पर पुनः आरूढ़ हुए और लगभग दो योजन की दूरी तयकर वेदश्रुति नदी (वर्तमान विसूही नदी) के तट पर पहुंचे। इस नदी को पार करने के बाद सीता जी को अनुभूति होने लगी कि वे अब अयोध्या से बहुत दूर जा रही हैं। श्री राम से विवाह और जनकपुर छोड़ने के बाद उनके लिए अयोध्या ही सर्वस्व है।उन्होंने अपने विवाह से पूर्व माता भवानी के मंदिर में अपने पिता राजा जनक द्वारा आयोजित किए जा रहे धनुष यज्ञ की सफलता की कामना की थी। यह एक अद्भुत संयोग था कि उन्हें दो राजकुमार जनकपुर में दिखाई दिए थे।तब श्री राम और लक्ष्मण जी से उनका परिचय नहीं हुआ था लेकिन उनके लिए हृदय से की गई मंगल कामनाएं फलीभूत हुई थीं। श्री राम ने एक कठिन परीक्षा दी थी और भगवान शिव के पिनाक धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने का सफल कार्य किया था।

आज वेदश्रुति नदी को पार करने के बाद सीता जी को अतः प्रेरणा हुई और एक वृक्ष के पास उन्होंने रथ को रुकवाया।

''सुमंत जी! रथ रोकिए!'' सीता जी ने कहा।

''क्या बात है सीते? क्या विश्राम की आवश्यकता है?'' श्री राम ने पूछा।

''नहीं! विश्राम की तो नहीं आर्यपुत्र, लेकिन मुझे अतः प्रेरणा हो रही है और मेरे मानस में माता गिरिजा की छवि बार-बार उभर रही है।'' सीता जी ने उत्तर दिया।

''उचित है सीते! नदियां माताएं हैं और जम्बूद्वीप की अधिकांश नदियां पर्वतों और पहाड़ियों से ही निकली हैं। पर्वत राज हिमालय की पुत्री होने के कारण इन नदियों का देवी पार्वती से स्वतः ही संबंध है। इस नदी के क्षेत्र में देवी गिरिजा का आशीर्वाद लेना उचित ही है।'' श्री राम ने मुस्कुराते हुए कहा।

(भगवान श्री राम की प्रेरक गाथा संस्कृत साहित्य में आदि कवि वाल्मीकि और हिंदी साहित्य में अवधी के महाकवि तुलसी से लेकर विश्व की अनेक भाषाओं की शताधिक रामायणों में लिखी गई है। लेखक ने इस रचना में श्री राम की महागाथा के विविध प्रसंगों से कथा प्रवाह की प्रेरणा प्राप्त की है। उन्होंने उन रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए श्री राम के जीवन के विविध प्रसंगों में अनेक स्थानों पर एक साधारण भक्त की अपनी नवीन रचनात्मक कल्पनादृष्टि का भी सहारा लिया है और रामकथा की मौलिक साहित्यिक प्रस्तुति का प्रयत्न किया है।)

14 नवंबर बाल दिवस, क्या है इस तारीख का महत्व

बाल दिवस भारत में हर साल 14 नवंबर को मनाया जाता है। यह देश के पहले प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को श्रद्धांजलि देने का दिन है। पंडित जवाहरलाल नेहरू का मानना था कि बच्चे राष्ट्र की सच्ची संपत्ति हैं। उन्होंने एक बार कहा था बच्चे बगीचे में कलियों की तरह हैं। पहले भारत में बाल दिवस 20 नवंबर को मनाया जाता था

बाल दिवस, जिसे 'बाल दिवस' के नाम से भी जाना जाता है, भारत में हर साल 14 नवंबर को मनाया जाता है। यह दिन बच्चों की सराहना करने और उन्हें स्वीकार करने के लिए मनाया जाता है क्योंकि वे देश का भविष्य हैं। यह देश के पहले प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को श्रद्धांजलि देने का दिन है। बच्चों के प्रति अपने स्नेह के लिए जाने जाने वाले पंडित जवाहरलाल नेहरू का मानना था कि बच्चे राष्ट्र की सच्ची संपत्ति हैं।

वह अक्सर उन्हें देश के ÷सबसे कीमती संसाधन÷ के रूप में संदर्भित करते थे। इसलिए, अपने युवा नागरिकों के जीवन की बेहतरी के प्रति राष्ट्र की प्रतिबद्धता की पुष्टि करने के लिए उनके जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है।

जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवंबर 1889 को इलाहाबाद, भारत में हुआ था। वह बच्चों के अधिकारों और एक शिक्षा प्रणाली के महान समर्थक थे, वे हर बच्चे को देश का भविष्य मानते थे और उनकी भरपूर सराहना करते थे। नेहरू ने अपने प्रसिद्ध भाषणों में से एक में कहा, ÷बच्चे बगीचे में कलियों की तरह हैं और उनका सावधानीपूर्वक और प्यार से पालन-पोषण किया जाना चाहिए, क्योंकि वे देश का भविष्य और कल के नागरिक हैं।

पहले, भारत में बाल दिवस 20 नवंबर को मनाया जाता था। जिस दिन संयुक्त राष्ट्र की तरफ से विश्व स्तर पर 'विश्व बाल दिवस' मनाया जाता है। हालांकि, साल 1964 में पंडित जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के बाद, संसद ने उनके जन्मदिन को देश में आधिकारिक बाल दिवस के रूप में स्थापित करने का प्रस्ताव जारी किया। तब से, भारत, भारत के पहले प्रधान मंत्री की जयंती मनाने के लिए बाल दिवस मनाता है। इस दिन को देश में 'बाल दिवस' के नाम से भी जाना जाता है।

क्यों मनाया जाता बाल दिवस?

इस दिन को मनाने के लिए बच्चों को ढेर सारा प्यार, उपहार और लाड़-प्यार दिया जाता है। देश भर के स्कूल बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रम और कार्यक्रम आयोजित करते हैं, जिन्हें गिफ्ट से भी नवाजा जाता है, जिसमें खाने की चीजें, किताबें और कार्ड शामिल होते हैं। वे खेल, वाद-विवाद, सेमिनार, नृत्य, संगीत, निबंध, भाषण और पेंटिंग प्रतियोगिताएं भी आयोजित करते हैं।

कविता

लइका तिहार

देश मा मनाथें बाल दिवस,
हमर छत्तीसगढ़ म लइका तिहार।
कका नेहरू ह भारत देश के,
रिहिस ओहर बड़ बुधियार।।
पहिली प्रधानमंत्री पंडित नेहरू,
लइका मनला करे बड़ पियार।
लइका मनहा जनम दिन मा,
दुकान लगाथें भेल खुशियार।।
नान्हें-नान्हें लइका मनला,
देवव गा सुग्घर के संस्कार।
इही मनहा आगु डहर चलके,
बनही देश के बड़का सरकार।।
पढ़ें-लिखें अउ आगु बन बढ़ें,
झन छिनव इनकर अधिकार।
लइकामन नइ करे इका दोषी,
सबो ल करथे बरोबर पियार।
राष्ट्र भकती हे सबले बढ़िया,
जेमा समाय हे, देश के सार।।

मदन मंडावी
ढारा, डोंगरगढ़, छत्तीसगढ़

कविता

//अंगों से सीख//

काले भूरे गोरे रंग। देखो कितने सुंदर अंग।।
नयन सदा ही खुलते संग। देखें दुनिया बढ़े उमंग।।
नेक काज करते हैं हाथ। इक दूजे का देते साथ।।
सीख हमें देते हैं बाल। रखो एकता बनो मिसाल।।
आगे बढ़ते जाते पैर। मिलकर करते जग की सैर।।
मुख से निकले मीठे बोल। जीवन में देता मधु घोल।।
करे इकट्ठा भोजन पेट। भरता तन में शक्ति समेट।।
नाक एक है लेती श्वास। सिखलाती जीवन है खास।।
सदा सोचता रहे दिमाग। बड़ा अहम यह तन का भाग।।
इसके बिन होता ना काम। तनिक नहीं करता आराम।।
चलो करें अंगों से प्यार। कभी नहीं होंगे बीमार।।
स्वस्थ रहें गर ये सब अंग।
करें नहीं जीवन भर तंग।।

- प्रिया देवांगन ''प्रियू''
राजिम जिला - गरियाबंद

शब्द सामर्थ्य -235

सू-दोकू क्र.235

	2			6			1	
3			4			2		
							6	
6					4			
	9		5			6		1
4		3			9			2
	8		2				7	
1		2		4		9		6

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक रख सकते है।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.234 का हल

8	7	6	9	5	1	2	3	4
1	3	9	2	8	4	5	6	7
4	5	2	3	7	6	9	1	8
2	8	5	4	6	7	1	9	3
3	1	7	8	9	2	4	5	6
6	9	4	1	3	5	7	8	2
9	4	1	6	2	8	3	7	5
7	2	8	5	1	3	6	4	9
5	6	3	7	4	9	8	2	1

राशिफल

मेष

आज आपका दिन उत्तम रहने वाला है। आज आप किसी बात को लेकर थोड़े उलझन में रहेंगे, जिसे आप अपने किसी खास मित्र से शेयर भी करेंगे आपको राहत मिलेगी। परिवार वालों के साथ बाहर मूवी का प्लान बन सकता है। दोस्तों की बर्थडे पार्टी मे जाएंगे जहां बाकी दोस्तों के साथ एंजॉय करने का मौका मिलेगा।

वृषभ

आज का दिन ठीक-ठाक रहने वाला है। आज ऑफिस में वर्कलोड बढ़ सकता है। जिसके लिए आपको ओवर टाइम करना पड़ेगा। रुपए-पैसों के मामले में लापरवाही न करें। टूर-ट्रैवल्स और मीडिया संबंधी बिजनेस में नया मोड़ आ सकता है। आप आर्थिक मामलों में किसी एक्सपर्ट से सलाह लेंगे।

मिथुन

आज आपके हर परेशानी का हल चुटकियों में निकल जाएगा। सरकारी कार्यों में आपको बड़े लाभ की संभावना है। आज आप अपनी संतान के साथ पिकनिक के लिए जा सकते हैं। उनके साथ आप अच्छा समय बिताएंगे। आज का दिन महिलाओं के लिए बहुत ही अनुकूल है।

कर्क

आज का दिन आपके लिए अच्छे परिणाम लाने वाला होगा। विद्यार्थियों को सफलता मिलने के योग बने हुए है, लेकिन पढ़ाई में और मेहनत करने की जरूरत है। आज घरवालों के साथ अच्छा समय बिताने को मिलेगा, जिससे परिवार का माहौल खुशनुमा रहेगा।

सिंह

आज आपका दिन बेहतर रहेगा। आपकी पहले से चली आ रही समस्याओं का समाधान मिलेगा, जिससे आपके मन में खुशी रहेगी। परिवार में धार्मिक काम की योजना बन सकती है। आज आप अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए कुछ अच्छे बदलाव करने की कोशिश करेंगे।

कन्या

आज आपका दिन बढ़िया रहेगा। बड़े निर्णय लेने के लिए दिन अच्छा है। किसी नयी बिजनेस डील के लिए ऑफर मिलेगा। आप जीवनसाथी के साथ घर के कार्यों को पूरा करने में व्यस्त रहेंगे। मेडिकल की पढ़ाई कर रहे छात्रों के लिए दिन अच्छा है। बेटी के ससुराल पक्ष से कोई बड़ी खुशखबरी मिलेगी।

तुला

आज आपका दिन अच्छे मूड से शुरू होने वाला है। कुछ दिनों से चल रही किसी के साथ अनबन आज खत्म होगी। राजनीति व सामाजिक क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए दिन फेवरेबल रहेगा। महिलाओं के लिए दिन शानदार रहेगा। बिजनेस मैन आज कोई जरूरी मीटिंग अटेंड कर सकते हैं।

वृश्चिक

आज आपका दिन मिला-जुला रहेगा। एकाग्र मन से किया गया काम लाभदायक साबित होगा। लवमेट के लिए आज का दिन बढ़िया है। साथ ही किसी अच्छे रेस्टोरेन्ट में भी जा सकते हैं। किसी जिम्मेदारी को अनदेखा करने से आपको बचना चाहिए। आपकी सेहत ठीक-ठाक रहेगी।

धनु

आज आपका दिन अच्छा रहने वाला है। घर खरीदने का विचार कर रहे लोगों के लिए आज का दिन शुभ है। आज आपका मन घरेलू काम काज में लगेगा। आज बॉस आपको किसी नए प्रोजेक्ट पर काम करने को कह सकते हैं। डिप्लोमा की तैयारी कर रहे छात्रों को आज ज्यादा पढ़ाई करने की जरूरत है।

मकर

आज आपका दिन खुशियों से भरा रहने वाला है। आपके दोस्त आपसे मदद की गुहार करेंगे, आप उन्हें निराश नहीं करेंगे। बिजनेस कर रहे लोगों को अच्छा मुनाफा होगा। आज आप शॉपिंग करने का मन बनायेंगे। आज आप अपनी बहन को कुछ गिफ्ट दे सकते हैं जिससे आपका रिश्ता मजबूत बनेगा।

कुंभ

आज का दिन शानदार रहने वाला है। आज आप अपने व्यापार को आगे बढ़ाने के लिए कुछ ऐसी भी योजनाएं बनाएंगे जिससे आपको फायदा ही फायदा होगा। आज अधिकतम समय आप धार्मिक और आध्यात्मिक गतिविधियों में व्यस्त रहेंगे। आप अपने कार्यों को जितनी तन्मयता और मेहनत से करेंगे।

मीन

आज परिवार का पूरा साथ मिलेगा। जो लोग बैंक में कार्य करते हैं वो आज अपना काम बहुत जल्द निपटा लेंगें। लवमेट आज साथ में समय बिताएंगे। सामाजिक कामों में अपना योगदान देने से आपकी पहचान बढ़ेगी। आपकी लोकप्रियता के साथ-साथ जनसंपर्क का दायरा बढ़ेगा।

माता देवाला दर्शन यात्रा का तीसरा चरण 15 नवम्बर से बिल्हरी अंचल में

डोंगरगढ़ (दावा)। माता देवाला दर्शन यात्रा के दूसरे चरण की सफलता के पश्चात डोंगरगांव विधानसभा क्षेत्र के अंतिम छोर में बसे गांव बिल्हरी से मातादेवाला दर्शन यात्रा का तीसरा चरण 15 नवम्बर से प्रारंभ होगा। विधायक दलेश्वर साहू के मार्गदर्शन में निकाली जा रही दर्शन यात्रा का शुभारंभ ग्राम बिल्हरी चैतु बाबा मंदिर प्रांगण से होकर ग्राम पुरैना, अन्यानवागांव से ग्राम रूवातला में यात्रा का समापन होगा।

डोंगरगांव विधानसभा क्षेत्र में माता देवाला यात्रा को प्रारंभ करने वाले विधायक दलेश्वर साहू ने एक जानकारी में बताया की यात्रा का उद्देश्य हमारे पुर्वजो द्वारा आदिकाल से सनातन धर्म के प्रतिक ग्रामीण क्षेत्र में विराजित देवी देवताओं के प्रति आस्था व श्रद्धा जगाने के साथ प्राचीन और पौराणिक संस्कृति व मान्यताओं को जनजन तक पहुंचाने के लिये माता देवाला दर्शन यात्रा निकाली जा रही है। जो पूरे प्रदेश में पहली मर्तबा निकली जा रही है। यात्रा के मार्गदर्शक व नेतृत्वकर्ता विधायक दलेश्वर साहू द्वारा की गई अनूठी पहल की आम जनों ने सराहना की है।

0 जस सम्राट दिलीप षंडंगी अपनी प्रस्तुति देंगे
0 नई युवा पीढ़ी ग्रामीण क्षेत्र में विराजित देवी देवताओं की मान्यताओं से अवगत होंगे - विधायक दलेश्वर साहू

नई युवा पीढ़ी ग्रामीण क्षेत्र में विराजित देवी देवताओ की मान्यताओं से अवगत होंगे - विधायक दलेश्वर साहू

श्री साहू ने आगे बताया कि यात्रा के माध्यम से नयी युवा पीढ़ी को ग्रामीण क्षेत्र में विराजित हमारे माता देवाला व ग्रामीण देवी देवताओं से संबंधित मान्यताओं और वैज्ञानिक कारणों से अवगत कराना है। साथ ही हम देखते है कि गांव में विभिन्न स्थानों पर नाना प्रकार के मूर्ति व चबुतरे तथा पत्थर लगे रहते है। जिन्हें हम देवी देवता मानकर नमन और वंदन करते है और यह परपंरा सदियों से चली आ रही है। लेकिन आज के पीढ़ी को यह नहीं मालुम होता है कि वे कौन से देवी देवता है। गांव के बुजुर्ग या सियान लोग भी इस संबंध में कम जानकारी रखते है। सभी देवी देवताओं का अपना अपना महत्व होता है। जिसे ग्रामीणजन ग्राम में त्यौहार मनाकर वंदन पुजन करते है। इन्हीं सब बातो को लेकर यह यात्रा निकालने का विचार आया और लगभग एक वर्ष से इस यात्रा के तैयारी किये है।

भविष्य में ग्रामीण क्षेत्र में स्थित माता देवालयों का जीर्णोद्धार होगा

यात्रा के दौरान ग्रामीण माता देवालयों का जीर्णोधर करवाने का कार्ययोजना भी तैयार की गई है। साथ ही यात्रा के संबंध में वरिष्ठ साहित्यकारों के माध्यम से पत्रिका का भी प्रकाशन किया जाएगा। यात्रा में माता देवाला में शीतला माता सहित अन्य ग्रामीण देवी देवताओं की प्रतिकृति झांकियां दिखायी जायेगी। बैरग, निशान के साथ शीतला माता, ठाकुर देव, सांहड़ादेव, बघरणपाठ, कुकरापाठ, भैसासुर, कंकालिन माता, राव देवता, गोसाई माता, अन्नकुमारी माता, रास माता, असरामाता, बमलाई माता, नागदेव, लैन माता, धरती माता, धुकिमाता, कुंवारपाठ, बहीतमाता, कुंवारीपाठ, सतबहिनी, बुंदमाता, घुमियार, झुनकी पाठ, कारीपाठ, गढ़माता आदि देवी देवता का झांकियां रहेंगें।

जस भजन सम्राट दिलीप षंडगी अपने सुमधुर आवाज से गायन करेंगे

यात्रा के साथ जस भजन व गीत संगीत की टोली के साथ जस भजन सम्राट दिलीप षंडगी अपने मधुर आवाज से गायन करेंगे।

यात्रा में जस झांकी व क्षेत्र के जस गायन मंडलियां भी अपनी प्रस्तुतियां देगें। यात्रा की पुरी तैयारी में विधायक दलेश्वर साहू के साथ किसान नेता गुलाब वर्मा, होमदत्त वर्मा, जयचंद ठाकुर, सुरज कौशल, राधेश्याम वर्मा, फगुवा वर्मा, मोतीलाल वर्मा सहित वरिष्ठ जनों की टीम द्वारा तैयारी को अंतिम रूप दिया जा चुका है।

एसडीएम ने छीरपानी मुक्तिधाम का किया औचक निरीक्षण

पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

डोंगरगढ़ (दावा)। अनुविभागीय अधिकारी मनोज मरकाम द्वारा छिरपानी स्थित मुक्तिधाम का औचक निरीक्षण किया गया। इस दौरान श्री मरकाम ने मुक्तिधाम समिति के सदस्यों की उपस्थिति में मुक्तिधाम का निरीक्षण भी किया। साथ ही वहां चल रहे विकास कार्यों पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि मां बमलेश्वरी की नगरी का मुक्तिधाम सुविधाजनक और आकर्षक होना चाहिए। श्री मरकाम ने चल रहे जीर्णोधार कार्य हेतु प्रशासन की ओर से हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया।

निरीक्षण के दौरान उपस्थित समिति के अध्यक्ष गोपाल खेमुका, वरिष्ठ नागरिक लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, सचिव कैलाश अग्रवाल, सेवानिवृत्ति पोस्ट मास्टर व समाजसेवी मनोज गुप्ता नगर पालिका के सफाई प्रभारी ने बारी-बारी विभिन्न कार्यों के संबंध में श्री मरकाम को जानकारी दी। और विभिन्न आवश्यकताओं के लिए उनसे सहयोग भी मांगा। बताया गया कि मुक्तिधाम में पर्यावरण को संरक्षित करने लकड़ी के स्थान पर छेने कन्डे का भी वैकल्पिक उपयोग किया जा रहा है। साथ ही कम ईधन में शवदहन के लिए लोहे का स्ट्रक्चर लगाकर उचित व्यवस्था भी की गई है। पेयजल की व्यवस्था के साथ-साथ पर्याप्त विद्युत व्यवस्था सीसीटीवी कैमरे नियमित साफ सफाई व चौकीदार की व्यवस्था भी समिति द्वारा की जा रही है। यह सब कार्य जन सहयोग से किए जा रहे हैं। सदस्यों ने बताया कि नगरपालिका का भी व्यापक सहयोग समिति को मिल रहा है। मुक्तिधाम से इलेक्ट्रिक के ट्रांसफार्मर को हटाने, टूट चुकी खंडित मूर्तियों को अलग करने तथा भविष्य में दुकान बनाकर लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने की जानकारी भी दी गई।

एसडीएम ने पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

निरीक्षण के पूर्व एसडीएम द्वारा मुक्तिधाम परिसर में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। इस दौरान एसडीएम को सदस्यों ने बताया कि, पौधारोपण कर गार्डन तैयार करने और बैठक के लिए उचित व्यवस्था सहित मुक्तिधाम में विभिन्न आवश्यकताओं की व्यवस्था के लिए प्रयास किया जा रहा है।

अनुविभागीय अधिकारी श्री मरकाम ने बेल पौधे का रोपण किया तथा आशा जताई कि पर्यावरण को सुरक्षित रखने समिति विशेष प्रयास करेगी।

पहला कॉलम...

आमगांव-देवरी विधानसभा में अध्यक्ष गीता घासी साहू मतदाताओं से रुबरु होकर केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं की दी जानकारी

राजनांदगांव(दावा)। प्रदेश भाजपा के नेतृत्व व निर्देशानुसार राजनांदगांव जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गीता घासी साहू महाराष्ट्र राज्य के प्रवास पर है जहां आमगांव-देवरी विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी संजय पुराम के पक्ष में श्रीमती साहू लगातार चुनावी सभा बैठक लेकर कार्यकर्ताओं से रूबरू हो रहे है। बता दें कि अध्यक्ष गीता घासी साहू को आमगांव-देवरी विधानसभा क्षेत्र की जिम्मेदारी मिली है तब से लगातार गाँव-गाँव जाकर भाजपा कार्यकर्ताओं को केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं से अवगत करा रहे है साथ ही आमजन से मुलाकात कर भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करने की अपील कर रहे हैं इसी क्रम में ग्राम ककोड़ी, चिपोटा, शंभूटोला, धोबाटोला में कार्यकर्ताओं के साथ बैठक लेकर चुनावी रणनीति पर विस्तार पूर्वक जानकारी लेकर कार्यकर्ताओं से चर्चा किया।

आज कार्तिक महोत्सव मेला

कछ्लूबंजारी (दावा)। समीपस्थ ग्राम दामाबंजारी में हर वर्ष की तरह इस वर्श भी कार्तिक महोत्सव मेला का आयोजन रखा गया है जिसमें इस मेला पर्व पर छत्तीसगढ़ी नाच पार्टी सुवरबोड बालोद जिला वालों का कार्यक्रम रखा गया है यह उत्सव समस्त ग्रामवासी द्वारा मनाया जाता है उक्त जानकारी पंचायत प्रतिनिधि रमेश चौधरी ने दी।

घुमका नगर पंचायत बनने की खुशी में ग्रामीणों और क्षेत्रवासियों ने बधाई दी

घुमका (दावा)। घुमका नगर पंचायत बनने से ग्रामीणों और क्षेत्रवासियों ने घुमका नगर पंचायत के वर्तमान भाजपा शासनकाल में पदस्थ लोगों को सम्मान के पात्र है। प्रदेश के मुखिया विष्णु देव साय मुख्यमंत्री, डिप्टी सीएम अरूण साव, पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह विधानसभा अध्यक्ष को घुमका के भाजपा कार्यकर्ताओं ने आभार व्यक्त किया। भाजपा कार्यकर्ता नोहेन्द्र सिंह, उपाध्यक्ष दिलीप पटेल, जनपद सदस्य बहरराम वर्मा, दीपक वर्मा, फागू यादव, किशन चंदेल, शैलेन्द्र वर्मा, अनिल सिंह, राजेश वर्मा, गगेश्वर वर्मा आदि लोगों ने सरकार को बधाई प्रेषित की।

घर के दरवाजे के सामने फ़टाखा फोड़ने से मना करने पर विवाद

डोंगरगढ़ (दावा)। प्रार्थी सालिक राम साहू ने पुलिस को बताया कि वह, बाजारपारा एल.बी. नगर चौकी चिचोला का निवासी है। टेलर एवं कृषि का कार्य करता हूँ। 12 नवंबर को गांव में गांव वाले तुलसी विवाह जेठीनी का त्योहार मना रहे थे। मैं अपने घर में था तभी रात्रि करीबन 09:30 बजे मेरे घर के सामने हल्ला-गुल्ला की आवाज सुनकर बाहर निकला। देखा तो मेरे पडोसी दीपक साहू द्वारा मेरे घर के सामने में घर के मुहाटी में तेज आवाज वाली फटाखा को फोड़ रहा था। जिसे मेरी पत्नि श्रीमती कुमारी बाई साहू और मेरी बहू रामबाई साहू द्वारा दीपक साहू को घर के दुआरी के सामने फटाखा फोड़ने से मना कर रहे थे कि छोटे-छोटे बच्चे लोग सो रहे है थोड़ा दूर में जाकर फटाखा फोड़ों, कहने पर दीपक साहू नहीं माना और मेरी पत्नि व बहु को मां बहन की गंदी-गंदी अश्लील गाली दे रहा था। जिसे मना करने पर नहीं माना और मेरे साथ हाथ मुक्का से मारपीट किया है और जान से मारने की धमकी दिया है। दीपक साहू द्वारा मेरे साथ मारपीट करने से मुझे बाये गाल बाये कान के नीचे व गला में चोट लगी। मारपीट करते समय मेरी पत्नि व मेरी बहू बीच बचाव किये व घटना को देखे सुने है।

आज बासुला में सांस्कृतिक लोक कला मंच की प्रस्तुति

ठेलकाडीह (दावा)। आज 14 नवंबर को रात्रि में स्वरधारा का सांस्कृतिक लोक कला मंच का कार्यक्रम रखा गया है जिसमें मुख्य अतिथि डोंगरगढ़ विधायक हर्षिता स्वामी बघेल अध्यक्षता भुनेश्वर बघेल पूर्व विधायक डोंगरगढ़ होंगे। विशिष्ट अतिथि खैरागढ़ विधायक यशोदा वर्मा, निखिल त्रिवेदी पूर्व पर्यटन मंडल सदस्य छत्तीसगढ़ शासन, नोमेश वर्मा सरपंच संघ अध्यक्ष, जिला भाजपा उपाध्यक्ष युवा कांग्रेस विधानसभा अध्यक्ष सौरभ वैष्णव, लोधी समाज अध्यक्ष उत्तम जंघेल, जनपद सभापति अमीन खान, जनपद सभापति ओमप्रकाश साहू, प्रखर श्रीवास्तव मंडल अध्यक्ष भाजपा, सरपंच कमलेश्वर सांडे, लोधी समाज के अध्यक्ष हुमन वर्मा, ग्राम पटेल मुरली शरण वैष्णव, मलीखम कोसरे सहित अन्य लोग उपस्थित रहेंगे। उक्त जानकारी स्वामी विवेकानंद युवा मंडल के अध्यक्ष तेजस्वी वर्मा ने दी।

गुरु कृपा पैलेस में पार्किंग व्यवस्था नहीं, राहगीरों को होती है परेशानी

अम्बागढ़ चौकी (दावा)। तहसील मुख्यालय अम्बागढ़ चौकी में शहर के अन्दर में संचालित गुरु कृपा पैलेस में शादी सामाजिक कार्यक्रमों से लेकर कई प्रकार के कार्यक्रम आयोजित होते हैं परन्तु उक्त भवन में वाहनों के लिए पार्किंग व्यवस्था नहीं होने के कारण राहगीरों को परेशानी से होकर गुजरना पड़ता है।

अम्बागढ़ चौकी नगर पंचायत क्षेत्र में संचालित गुरु कृपा पैलेस जो कि सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र व आईटीआई प्रशिक्षण केन्द्र जाने के मुख्य मार्ग पर स्थित है। इसी मार्ग से अस्पताल, आईटीआई प्रशिक्षण केन्द्र व गाँव जाने वालों का आवाजाही लगा रहता है। सुविधायुक्त भवन शहर के अन्दर में संचालित होने के कारण मांगलिक कार्यक्रम के अलावा राजनैतिक-सामाजिक कार्यक्रम का आयोजन होते रहते हैं। गुरु कृपा पैलेस में पार्किंग व्यवस्था नहीं होने के कारण कार्यक्रमों में आने वाले आगन्तुक अपने वाहन भवन से लेकर सड़क तक अव्यवस्थित ढंग से खड़ी कर देते हैं जिससे अस्पताल आईटीआई प्रशिक्षण केन्द्र जाने वाले छात्र छात्राओं व ग्रामीणों को परेशानी होती है। विशेषकर आपातकालीन स्थिति में अस्पताल पहुंचना हो तब ज्यादा परेशानी हो जाती है। वहीं नगर पंचायत के मुख्य नगरपालिका अधिकारी गिरीश चन्द्रा का कहना है गुरुकृपा पैलेस बनाने के पूर्व अनुमति संबंधी किसी प्रकार की दस्तावेज नहीं है भवन का निर्माण ही अवैध है।

रास्ता जाम के कारण युवक की गई जान

इसी प्रकार बीते रात को गुरुकृपा पैलेस में शादी उपरान्त आशीर्वाद समारोह आयोजित किया गया था जहां बाहर से भी आमंत्रित मेहमान के अलावा नगर के गणमान्य लोगों के साथ-साथ शासकीय सेवक व राजस्व विभाग में पदस्थ कर्मचारी का विवाह होने के कारण अनुविभागीय अधिकारी तहसीलदार सहित राजस्व विभाग का अमला भी आमंत्रण पर उपस्थित थे। कार्यक्रम में उपस्थित लोग पार्किंग के अभाव में जहां जगह मिली वहीं अपना वाहन खड़े किए थे। कार्यक्रम शानदार चल रहा था इसी दरम्यान सेलून व्यवसायी शैलेन्द्र सेन को दिल का दौरा पड़ने से युवक को निजी वाहन से इलाज के लिए लाया जा रहा था तथा दूसरे मरीज को राजनांदगाँव ले जाने के लिए एम्बुलेंस आ रही थी उक्त वाहन भी रास्ता जाम में फंस गया। यत्र तत्र गाड़ियां खड़े होने के कारण रास्ता क्लीयर कराने के लिए एक-एक क्षण महत्वपूर्ण था वहां आधा घंटा लग गया नगरवासियों के साथ शादी समारोह में आये अनुविभागीय अधिकारी हेमेन्द्र भुआर्य स्वयं वाहनों को हटवाने में लगे रहे। रास्ता खुलने पर युवक को अस्पताल पहुंचाया तब तक काफी विलम्ब हो चुका था, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में प्राथमिक उपचार के बाद स्थिति को देखते हुए उच्च इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज राजनांदगाँव रेफर किया गया गया लेकिन राजनांदगाँव पहुँचने से पूर्व युवक ने दम तोड़ दिया।

एसपी त्रिलोक बंसल के निर्देशन में 'समर्थ' के तहत शराब पीकर गाड़ी चलाने के ऊपर कारवाई

12 पिकअप कार मोटर साइकिल के ऊपर चालानी कार्रवाई

0 पिछले दो माह में 25 चालकों के ऊपर शराब पीकर चलने वाले गाड़ियों के ऊपर यातायात के द्वारा चालानी कार्रवाई की गई
0 न्यायालय द्वारा वाहन चालकों के ऊपर 10000-10000 रुपया की फाइन कुल 1 लाख 20 हजार का फाइन

खैरागढ़ (दावा)। पुलिस अधीक्षक त्रिलोक बंसल (भा.पु.से.) एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नितेश कुमार गौतम के दिशा निर्देश में यातायात नियमों का पालन नहीं करने वाले लोगों के ऊपर चालानी कार्यवाही जिसमें आज दिनांक 13.11.24 को कुल 25 प्रकरण समन सुल्क 7500 रुपया व शराब पीकर गाड़ी चलाने वाले 12 लोगों को आज न्यायालय प्रकरण इस्तखासा पेश किया गया जिसमें माननीय न्यायालय के द्वारा प्रत्येक चालकों के ऊपर 10000-10000 रुपया का फाइन किया गया। मामला कुल रकम 120000 रुपया यातायात नियमों का पालन करने एवं शराब पीकर वाहन चालकों के ऊपर आगे भी कार्यवाही निरंतर जारी रहेगी।

उपरोक्त कार्यवाही में निरीक्षक शक्ति सिंह, सउनि धनेश्वर साहू, प्रधान आरक्षक आशुतोष सिंह, गनूलाला साहू, आरक्षक रोमेंद्र वर्मा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

बस्तर ओलिंपिक : अबूझमाड़ में खेले जा रहे पारंपरिक खेल, खिलाड़ियों को मिल रहा प्रोत्साहन

रायपुर (दावा)। छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग के सभी जिलों में इन दिनों बस्तर ओलिंपिक का आयोजन हो रहा है। अबूझमाड़ जैसे बेहद पिछड़े इलाके में भी बच्चों से लेकर बुजुर्ग तक बस्तर ओलंपिक में हिस्सा ले रहे है। बस्तर ओलंपिक के शुभंकर मस्कट वनभैंसा और पहाडी मैना से बच्चें, युवा और आम नागरिक को आकर्षित हो रहे है।

सीएम विष्णुदेव साय की विशेष पहल पर बस्तर संभाग में बस्तर ओलंपिक का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य राज्य के जनजातीय बहुल क्षेत्रों के खिलाड़ियों की खेल प्रतिभा को निखारना है और उन्हें रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ना है। सीएम श्री साय ने बस्तर अंचल के लोगों से इन खेल प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की अपील की है। उन्होंने कहा है कि राज्य में खेल और खिलाड़ियों को लगातार प्रोत्साहन दिया जा रहा है और बस्तर अंचल में नई खेल अधोसंरचनाएं विकसित की जा रही है।

बस्तर ओलंपिक के आयोजन के तहत प्रथम चरण में 6 नवम्बर से 16 नवम्बर तक विकासखण्ड स्तरीय खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही है। दूसरे चरण में 19 नवम्बर से 26 नवम्बर तक जिला स्तरीय खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएगी। इसके बाद अंतिम चरण में संभाग स्तरीय खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएगी। बस्तर ओलंपिक में युवा खो-खो, कब्बडी, बालीबाल, ऊंची कूद, तवाफेक, फुटबाल, गोलाफेक, तीरदांजी, बैडमिन्टन जैसे खेलों का आयोजन किया जा रहा है।

बस्तर ओलंपिक में ऐसे खेल शामिल किए गए है जिसे ग्रामीणजन हमेशा से गांवों में खेलते आएं है। ग्रामीण परिवेश से जुड़े खेल होने के कारण बिना किसी हिचक के इन खेलों में उत्साह के साथ शामिल हो रहे है। इन आयोजनों में स्कूली बच्चों, ग्रामीण महिलाओं और बुजुर्गो को भी आनंद मिल रहा है। विशेषकर बुजुर्गो को अपने स्कूली जीवन और बचपन की याद ताजा हो रही है।

मिनीमाता कन्या पॉलीटेक्निक में जनजाति गौरव स्मृति कार्यक्रम संपन्न

राजनांदगांव (दावा)। मिनीमाता शासकीय कन्या पॉलीटेक्निक राजनांदगांव में 11 नवंबर को जनजाति गौरव स्मृति कार्यक्रम का मुख्य आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि तथा मुख्य वक्ता के रूप में राजेश खांडेकर सचिव वनवासी विकास समिति राजनांदगांव एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. शिवाजी लिमजे एसोसिएट प्रोफेसर पं. एस.के. सी.ए.आर.एस. सुरगी, राजनांदगांव शामिल हुए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था के प्राचार्य डॉ. एम.के.चौबे द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता, भगवान बिरसा मुंडा, रानी दुर्गावती, वीर नारायण सिंह के तैलचित्र पर माल्यार्पण व द्वीप प्रज्वलन कर किया गया। अतिथियों का स्वागत जनजाति सभ्यता के अनुरूप पीला साफा, श्रीफल एवं पौधा देकर किया गया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. सविता चौधरी द्वारा स्वागत उद्बोधन प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के छात्राओं द्वारा जनजाति पर आधारित नृत्य प्रस्तुत किया गया। जनजाति नायक कोमराम भीम पर आधारित आर आर आर फिल्म के गीत का भी प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम सह संयोजक नेहा ठाकुर ने कार्यक्रम का प्रस्तावना वाचन किया और कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य से अवगत कराया।

विशिष्ट अतिथि डॉ. शिवाजी लिमजे द्वारा राणा पूंजा भील व अमर बलिदानी गोविंद गुरु के योगदानों को याद किया गया तथा जनजाति समाज के जीवन शैली, रीति रिवाज एवं प्रकृति प्रेम के बारे में बताया गया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि राजेश खांडेकर द्वारा जनजाति समाज के बारे में फैलाई गई भ्रांतियों के बारे में बताया गया, उन्होंने अपने उद्बोधन में वीरांगना रानी दुर्गावती तथा भगवान बिरसा मुंडा के शौर्य व पराक्रम का वर्णन किया।

तत्पश्चात अतिथियों द्वारा जनजाति गौरव स्मृति कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता रहे छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। संस्था प्रमुख डॉ. एम.के.चौबे द्वारा अपने उद्बोधन में जनजाति नायक - नायिकाओं को याद करते हुए छात्राओं को उनसे प्रेरणा लेने की बात कही। प्रभारी विभागाध्यक्ष डॉ. के.के.कटेंद्र द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया। विभागाध्यक्ष डॉ. मृदुल रत्न चौरसिया एवं फेकल्टी हेमलता लहरे, डॉ. हरनीत कौर भाटिया, डॉ. हुमिका ताम्रकार, ईशान साहू, स्मिता सोनपिपरे, अनुराधा ध्रुव का विशेष सहयोग रहा।

अखंड रेल कर्मचारी संघ के पदाधिकारी द्वारा डोंगरगढ़ में प्रचार प्रसार

डोंगरगढ़ (दावा)। रेलवे में यूनियन की मान्यता के लिए चुनाव 11 वर्षों के अंतराल के बाद 4, 5, 6 दिसंबर को होना तय हुआ है जबकि यूनियन चुनाव प्रति 5 वर्ष में होता है। रेलवे कर्मचारीयों की प्रमुख मांगे पुरानी पेंशन के साथ अन्य मांगो को लेकर चुनावी मैदान में है भारतीय रेल में 17 जोन में अलग-अलग यूनियन अपना दावा पेश करते हुए चुनावी मैदान में है इसी कड़ी में इंडियन रेलवे एम्पलाई फेडरेशन के बैनर तले दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर जोन में अखंड रेल कर्मचारी संघ पुरजोर तरीका से अपना दावा पेश करते हुए रेलवे कर्मचारीयों के बीच जाकर अपना दावा मजबूत पेश कर रहा। अखंड रेल कर्मचारी संघ को जिताने के लिए रेलवे का सबसे केटेगरी वाइस ऐसोसिएशन दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ट्रैक मेंटेनर असोसिएशन, ऑल इंडिया लोको रनिंग स्टाफ एसोसिएशन, ऑल इंडिया गार्ड काउंसिल तथा अन्य केटेगरी वाइस एसोसिएशन चुनावी मैदान में है। अखंड रेल कर्मचारी संघ के पदाधिकारी द्वारा नागपुर मंडल के डोंगरगढ़ में प्रचार प्रसार किया गया।

पहला कॉलम...

कपास की आवक होने से बिनौला खल में आई गिरावट

जयपुर। उत्तर भारत की मंडियों में नए कपास की आवक होने से इन दिनों बिनौला खल में गिरावट का रुख देखा जा रहा है। दिवाली से अब तक करीब दो सप्ताह के अंतराल में बिनौला खल में 200 से 250 रुपए प्रति क्विंटल निकल चुके हैं। जयपुर मंडी में बुधवार को बिनौला खल 3850 से 4150 रुपए प्रति क्विंटल पर घटाकर बेची जा रही थी। पंजाब की बठिंडा मंडी में भी बिनौला खल मंदी में बिकने के समाचार हैं। देश में कपास का उत्पादन हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ तथा आंध्र प्रदेश आदि राज्यों में होता है। नया सीजन शुरू होने से एनसीडैक्स पर भी बिनौला खल दिसंबर डिलीवरी में नरमी का रुख बना हुआ है। जयपुर स्थित प्रमुख फर्म सत्य ट्रेडिंग कंपनी के दिनेश वैद ने बताया कि नवंबर के दौरान कैटल फीड मार्केट में सामान्य उतार-चढ़ाव रहने की संभावना है। वैद के अनुसार वर्तमान हालात को देखते हुए नए मालों की आवक का दबाव बढ़ने तक बिनौला खल की कीमतों में तेजी की संभावना नहीं है। उन्होंने कहा कि आवक दबाव बढ़ने पर बिनौला खल में और गिरावट देखने को मिल सकती है। इस बीच स्थानीय कैटलफीड मार्केट में लाल तिल पपड़ी 3600 रुपए तथा लाल तिल डली 5300 रुपए प्रति क्विंटल पर स्थिर बनी हुई थी। इसी प्रकार बंगाल तिल्ली के भाव 7500 रुपए प्रति क्विंटल के आसपास बोले जा रहे थे।

चीन ने पांचवीं पीढ़ी के दूसरे लड़ाकू विमान का किया अनावरण

बीजिंग। चीन ने अपने सबसे बड़े एयर शो में पांचवीं पीढ़ी का स्टेल्थ लड़ाकू विमान पेश किया है, जिसने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी पूरी खींचा है। इस विमान को शेनयांग जे-35 नाम दिया गया है। यह एक ट्विन-इंजन, सिंगल-सीटर सुपरसोनिक विमान है। बीजिंग द्वारा विकसित किया गया यह दूसरा पांचवीं पीढ़ी का स्टेल्थ लड़ाकू विमान है। इससे पहले जे-20 पेश किया गया था।

शेनयांग जे-35 का डिजाइन अमेरिकी लॉकहीड मार्टिन एफ-35 से काफी मिलता-जुलता है। हालांकि, दोनों के बीच मुख्य अंतर यह है कि जे-35 में दो इंजन हैं, जबकि, एफ-35 में एक ही इंजन होता है। चीन ने पहले भी कई अमेरिकी विमानों के डिजाइन की नकल की है। जैसे चीन के जे-20 और एफ-22 रैप्टर का डिजाइन काफी मिलता-जुलता है। इसी तरह चेंगदू जे-10 का डिजाइन अमेरिकी एफ-16 से मिलता-जुलता है। चीन के सरकारी मीडिया ग्लोबल टाइम्स के मुताबिक, जे-35 विमान का मुख्य उद्देश्य हवाई श्रेष्ठता हासिल करना और दुश्मन के चौथी और पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान और जमीन पर मौजूद एयर डिफेंस सिस्टम को नष्ट करना है। इसके अलावा, यह विमान दुश्मन के विमान, बमवर्षकों अ

प्रदूषित शहरों की लिस्ट पर भारत-पाकिस्तान के 2 शहर

नई दिल्ली। इन दिनों भारत समेत दुनिया के कई शहरों में लोगों को सांस लेने में तकलीफ हो रही है, कारण है यहां के एयर पॉल्यूशन। स्विस फर्म आईक्यूएयर ने इसे लेकर 121 देशों की लाइव रैंकिंग शेयर की है। इस रैंकिंग के मुताबिक, भारत व पाकिस्तान के 2 शहर में हालात काफी खराब हैं। 121 देशों की लिस्ट में भारत के 3 शहर हैं, इनमें राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली, कोलकाता और मुंबई है। 13 नवंबर को स्विस फर्म आईक्यूएयर की लाइव रैंकिंग में पहले नंबर पर राजधानी दिल्ली हैं। दिल्ली में आज एक्यूआई 515 तक दर्ज की गई है। वहीं, दूसरे नबंर पर पाकिस्तान का लाहौर जिला है। यहां कि एक्यूआई 432 मापी गई है। आईक्यूएयर की लाइव रैंकिंग में लाहौर की एक्यूआई 432 है। वहीं, पड़ोसी देश का कराची शहर भी इस लिस्ट में शामिल है। कराची को 147 एक्यूआई के साथ 14वें नंबर पर रखा गया है। दुनिया के प्रदूषित शहरों में कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य के किंशासा का तीसरे नंबर पर नाम है। यहां का एक्यूआई 193 मापा गया है। वहीं, मिस्र के काहिरा शहर को चौथे स्थान पर रखा गया, यहां का एक्यूआई 184 पाया गया। वहीं, रैंकिंग में पांचवें स्थान पर वियतनाम की राजधानी हनोई का नाम है।

वेस्टइंडीज और आयरलैंड के खिलाफ 9 मैच खेलेगी इंडिया विमेंस-नवी मुंबई, बड़ोदा और राजकोट में मुकाबले

स्पोर्ट्स डेस्क। टी-20 वर्ल्ड कप के बाद इंडिया विमेंस टीम के लिए बीसीसीआई ने 2 और टीमों से सीरीज रख दी है। टीम अब दिसंबर में वेस्टइंडीज के खिलाफ और अगले साल जनवरी में आयरलैंड के खिलाफ व्हाइट बॉल की सीरीज खेलेगी।

भारत ने इससे पहले टी-20 वर्ल्ड चैंपियन न्यूजीलैंड के खिलाफ 3 वनडे की सीरीज 2-1 से जीती थी। वेस्टइंडीज और आयरलैंड के खिलाफ 9 मुकाबले 15 दिसंबर से शुरू हो कर 15 जनवरी तक चलेंगे।

वेस्टइंडीज के खिलाफ दोनों फॉर्मेट की सीरीज इंडिया विमेंस टीम को वेस्टइंडीज के खिलाफ 3 वनडे और 3 टी-20 की सीरीज खेलनी है। 15, 17 और 19 दिसंबर को 3 टी-20 नवी मुंबई में होंगे। सभी मैच शाम 7 बजे से शुरू होंगे। वहीं 22, 24 और 27 दिसंबर को 3 वनडे बड़ोदा में होंगे। 2 मैच दोपहर 1.30 बजे शुरू होंगे, वहीं आखिरी मैच सुबह 9.30 बजे शुरू हो जाएगा। आयरलैंड से 3 वनडे अगले साल वेस्टइंडीज के बाद टीम इंडिया आयरलैंड के खिलाफ 3 वनडे खेलेगी। तीनों मुकाबले राजकोट में दोपहर 11 बजे से शुरू होंगे। मैच 10, 12 और 15 जनवरी को खेले जाएंगे। वर्ल्ड कप के बाद न्यूजीलैंड को हराया टीम इंडिया विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप के ग्रुप स्टेज को पार नहीं कर सकी। टीम को न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। जिसके बाद टीम सेमीफाइनल में भी एंट्री नहीं कर सकी। टूर्नामेंट के बाद भारत ने न्यूजीलैंड के खिलाफ अहमदाबाद में 3 वनडे खेले। सीरीज 2-1 से भारत के नाम रही। 2025 में वनडे वर्ल्ड कप भी 2025 में भारत में ही विमेंस वनडे वर्ल्ड कप भी होना है। टूर्नामेंट सितंबर से अक्टूबर के बीच राउंड रॉबिन फॉर्मेट में खेला जाएगा। इसमें भारत समेत 8 टीमें ही पार्टिसिपेट करेंगी। ऑस्ट्रेलिया टूर्नामेंट की डिफेंडिंग चैंपियन और सबसे ज्यादा 7 बार खिताब जीतने वाली टीम भी है।

क्या फिट होकर भारतीय टेस्ट स्क्वाड में कर सकते लेट एंट्री?

नई दिल्ली। भारतीय टीम के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ने काफी लंबे समय के बाद क्रिकेट के मैदान पर वापसी की है। शमी ने आखिरी बार अपना इंटरनेशनल मुकाबला 2023 वनडे विश्व कप फाइनल में खेला था। इसके बाद से वो टखने की चोट के कारण मैदान से दूर थे।

मार्च में उनकी सर्जरी हुई थी और फिर लंबे रिहैब के बाद उनकी वापसी हुई है। भारतीय टीम के पेसर बंगाल के खिलाफ रणजी ट्रॉफी मैच मध्य प्रदेश के खिलाफ खेलने उतरे हैं। उनके पूरी तरह फिट होकर उन्होंने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए भारत की स्क्वाड में अपनी लेट एंट्री की उम्मीदों को फिर से जगा दिया हैं।

दरअसल, भारतीय टीम के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी रणजी ट्रॉफी एलीट ग्रुप 'सी' गेम में बंगाल की तरफ से खेल रहे हैं। उन्होंने आज से क्रिकेट के मैदान पर 360 दिनों बाद एंट्री कर ली है। पिछले साल विश्व कप के दौरान टखने में चोट लगने के बाद शमी को मैदान से दूर होना पड़ा। शमी ने अपनी इंजरी की बाद में सर्जरी भी करवाई और घरेलू सत्र के दौरान वापसी की उम्मीद थी। हालांकि, इस महीने की शुरुआत में उन्हें घुटने में सूजन के कारण उनकी वापसी में देरी हुई। अब मध्यप्रदेश के खिलाफ रणजी मैच खेलने उतरे शमी की फिटनेस को देखते हुए उम्मीद कि जा रही है कि वह सीरीज के दूसरे चरण में ऑस्ट्रेलिया जा सकते हैं। अगर वह पूरी तरह से फिट हो जाते हैं, तो शमी ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज के दूसरे चरण में वापसी कर सकते हैं। शमी एडिलेड में दूसरे टेस्ट से पहले वापसी कर सकते हैं, जो पहले मैच के 9 दिन बाद शुरू होगा।

एआई युग में नई ऊंचाइयां छूने को तैयार भारत, 2028 तक 33.9 मिलियन नौकरियां होंगी जेनरेट

नई दिल्ली । आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस युग में आने वाले समय में नौकरियों के नए अवसर पैदा होने जा रहे हैं। बुधवार को आई एक लेटेस्ट रिपोर्ट के अनुसार, एआई के साथ भारत में 2023 में 423.73 मिलियन से 2028 तक 457.62 मिलियन तक वर्कफोर्स बढ़ने का अनुमान है। कुल 5 वर्षों में श्रमिकों की संख्या 33.89 मिलियन बढ़ जाएगी।

एआई प्लेटफॉर्म फॉर बिजनेस ट्रांसफॉर्मेशन सर्विसनाउ द्वारा किए गए नए शोध के अनुसार, नई टेक्नोलॉजी भारत के प्रमुख विकास क्षेत्रों में योग्यताओं को नई पहचान देगी, जिससे 2028 तक 2.73 मिलियन नई टेक्नोलॉजी से जुड़ी नौकरियां पैदा होंगी। दुनिया की अग्रणी कंपनी, पियर्सन द्वारा किए गए शोध से पता चला है कि रिटेल सेक्टर रोजगार वृद्धि का नेतृत्व करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। इस सेक्टर के विस्तार के लिए 6.96 मिलियन अतिरिक्त श्रमिकों की आवश्यकता है। रिटेल सेक्टर के बाद मैन्युफैक्चरिंग में 1.50 मिलियन, शिक्षा में 0.84 मिलियन और स्वास्थ्य सेवाओं में 0.80 मिलियन नौकरियों के अवसर पैदा होंगे। सर्विसनाउ इंडिया टेक्नोलॉजी एंड बिजनेस सेंटर के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और प्रबंध निदेशक सुमीत माथुर ने कहा, भारत के विकास में खासकर एडवांस टेक्निकल स्किल मामले में एआई अहम भूमिका निभाएगा। एआई के साथ न केवल पेशेवरों के लिए अधिक उच्च-मूल्य वाले अवसर पैदा होंगे बल्कि एआई उन्हें डिजिटल करियर बनाने में मदद भी करेगा। इंडस्ट्री में टेक्नोलॉजी से जुड़ी नौकरियां बढ़ रही हैं और इस ट्रेंड को सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन डेवलपर्स लीड कर रहे हैं, जिसमें 109,700 पदों की वृद्धि का अनुमान है। दूसरी भूमिकाओं में सिस्टम सॉफ्टवेयर डेवलपर्स (48,800 नई नौकरियां) और डेटा इंजीनियर (48,500 नई नौकरियां) शामिल हैं।

वेब डेवलपर्स, डेटा विश्लेषक और सॉफ्टवेयर परीक्षकों के लिए भी नए अवसर (जिनमें क्रमशः 48,500, 47,800 और 45,300 पदों का अनुमान) पैदा होंगे। रिपोर्ट के अनुसार इसके अलावा, डेटा इंटीग्रेशन विशेषज्ञ, डेटाबेस आर्किटेक्ट, डेटा साइंटिस्ट और कंप्यूटर और इंफोर्मेशन सिस्टम मैनेजर जैसे पदों में 42,700 से 43,300 तक बढ़ने की उम्मीद है।

एटीपी फाइनल्स: सिनर ने फ्रिट्ज़ को हराया

ट्यूरिन। विश्व के नंबर 1 जानिक सिनर की एटीपी फाइनल्स ट्रॉफी के साथ अपने शानदार सत्र का समापन करने की तलाश जारी रही, क्योंकि शीर्ष वरीय खिलाड़ी ने टेलर फ्रिट्ज़ पर 6-4, 6-4 से जीत दर्ज की, जिससे इली नास्तासे ग्रुप में उनकी 2-0 की बढ़त हो गई।

फ्रिट्ज़ ने प्रतियोगिता के शुरुआती चरणों में सिनर को कड़ी टक्कर दी। हालांकि, इतालवी ने एक घंटे, 40 मिनट की जीत दर्ज करने के लिए आवश्यक होने पर अपना खेल का स्तर बढ़ाया, जिससे जोड़ी की एटीपी हेड-टू-हेड सीरीज़ में 3-1 का सुधार हुआ।

सिनर, जो 2024 के अपने आठवें टूर-लीडिंग खिताब की तलाश में हैं, अब एक भी सेट नहीं हारने के कारण ग्रुप से आगे बढ़ने की प्रबल दावेदारी में हैं। वह गुरुवार को चौथी वरीयता प्राप्त दानिल मेदवेदेव से भिड़ने पर इली नास्तासे ग्रुप में अपने 2-0 के शानदार रिकॉर्ड को आगे बढ़ाने की कोशिश करेंगे।

फ्रिट्ज़, जो 1-1 पर हैं, का लक्ष्य दूसरी बार (2022) सेमीफ़ाइनल में पहुंचने के अपने प्रयास में एलेक्स डी मिनौर के खिलाफ़ एक महत्वपूर्ण जीत हासिल करना है।

सिनर पिछले साल ट्यूरिन में फ़ाइनल में पहुंचे थे। बारह महीने बाद इटालियन एटीपी रैंकिंग में नंबर 1 खिलाड़ी के रूप में लौटे, 2024 में ऑस्ट्रेलियन ओपन और यूएस ओपन में मेजर जीते। युगल में, पूर्व चैंपियन वेस्ले कूलहॉफ़ और निकोला मेकटिक की जोड़ी ने प्रतिष्ठित सीज़न के फाइनल्स में शुरुआती हार से वापसी करते हुए दूसरे वरीय मार्सेल ग्रैनोलर्स और होरासियो ज़ेबालोस को 4-6, 7-6(6), 10-8 से हराकर मैच पॉइंट बचाया। डच-ज़ोएशियाई जोड़ी ने मैच के अंतिम चरण में अपना संयम बनाए रखा और माइक ब्रायन ग्रुप में 1-1 की बराबरी कर ली। कूलहॉफ और मेकटिक की मैच टाई-ब्रेक जीत ने सुनिश्चित किया कि हैरी हेलियोवारा और हेनरी पैटन ट्यूरिन में सेमीफाइनल में जगह बनाने वाली पहली टीम बन गए। हेलियोवारा और पैटन ने इससे पहले एटीपी फाइनल्स में अपने पदार्पण मैच में पर्सेल और थॉम्पसन को 7-6(3), 7-5 से हराकर 2-0 की बढ़त हासिल की।

चैंपियंस ट्रॉफी ना खेलने पर पाकिस्तान को होगा अरबों का घाटा, झेल सकता है निलंबन

नईदिल्ली। अगले साल 50 ओवर प्रारूप में चैंपियंस ट्रॉफी का आयोजना होना है। जिसके लिए भारतीय क्रिकेट टीम पाकिस्तान का दौरा नहीं करने वाली है।भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड को सुरक्षा चिंताओं का हवाला देते हुए अपने मैच दुबई में खेलने की इच्छा जताई है।अब पीसीबी टूर्नामेंट का संभावित बहिष्कार करने को सोच रही है। अगर ऐसा होता है तो उनके लिए यह बड़े घाटे का सौदा होगा। वह निलंबन भी झेल सकते हैं।

इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) ने मेजबान पाकिस्तान को पत्र लिखकर कह दिया है कि भारत ने इस टूर्नामेंट के लिए पाकिस्तान जाने से इनकार कर दिया है।वहीं पीसीबी प्रमुख मोहसिन नकवी भी कह चुके हैं कि पाकिस्तान चैंपियंस ट्रॉफी के लिए हाइब्रिड मॉडल नहीं अपनाएगा। रिपोर्ट्स की माने तो पाकिस्तान सरकार अपनी टीम को टूर्नामेंट से हटाने पर विचार कर रही है। अगर ऐसा होता है तो आईसीसी पाकिस्तान क्रिकेट को निलंबित कर सकती है। रिपोर्ट के अनुसार यदि पीसीबी टूर्नामेंट का बहिष्कार करती है तो मेजबान पाकिस्तान को मेजबानी शुल्क की पूरी राशि जो 6.5 करोड़ डॉलर (लगभग 5 अरब रुपये) है, उससे वंचित होना पड़ेगा।साथ ही आईसीसी से मिलने वाली धनराशि में भी कटौती होगी।यदि पाकिस्तान हाइब्रिड मॉडल अपनाने का फैसला करता है तो आईसीसी पाकिस्तान बोर्ड को पूरी मेजबानी फीस और उसे अधिकांश मैच घर पर कराने का भी मौका देगा। एशिया कप 2023 की मेजबानी भी पाकिस्तान के पास थी, लेकिन बीसीसीआई ने दबाव बनाकर भारत के मैचों का आयोजन हाइब्रिड मॉडल के तहत कराया था।

वेस्टइंडीज क्रिकेट टीम में हुए बड़े बदलाव

नईदिल्ली। वेस्टइंडीज क्रिकेट टीम और इंग्लैंड क्रिकेट टीम के बीच खेली जा रही टी-20 सीरीज में कैरेबियाई टीम को बड़ा झटका लगा है।बाएं टखने में मोच के कारण आंद्रे रसेल बाकी बचे 3 मैचों से बाहर हो गए हैं। उनकी जगह शमर स्प्रिंगर को टीम में शामिल किया गया है।इसके अलावा अल्जारी जोसेफ की निलंबन के बाद वापसी हुई है। वह शमर जोसेफ की जगह टीम का हिस्सा बने हैं।आइए पूरी खबर पर नजर डालते हैं। पहले 2 टी-20 मुकाबले में वेस्टइंडीज का प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा है। उन्हें दोनों मुकाबलों में हार का सामना करना पड़ा है। ऐसे में वह तीसरे टी-20 मुकाबले में वापसी करना चाहेंगे।ऐसी है वेस्टइंडीज की टी-20 टीम- रोवमैन पॉवेल (कप्तान), रोस्टन चेज, मैथ्यू फोर्डे, शिमरोन हेटमायर, टेरेंस हिंड्स, शाई होप, अकील होसेन, अल्जारी जोसेफ, ब्रैंडन किंग, एविन लुईस, गुडाकेश मोती, निकोलस पूरन, शेरफेन रदरफोर्ड, रोमारियो शेफर्ड और शमर स्प्रिंगर। इंग्लैंड के खिलाफ खेले गए तीसरे वनडे मुकाबले के दौरान कप्तान शाई होप द्वारा निर्धारित फील्ड प्लेसमेंट से अल्जारी खुश नहीं थे। इससे गुस्सा होकर वह विरोध में मैदान छोड़कर बाहर चले गए थे।

प्रथम पेज का शेष

केन्द्रीय मंत्री मांडविया, सीएम साय ने लिया ...

को बचाने की चिंता ही है। जनजातीय संस्कृति का गौरवगान सनातन संस्कृति का गौरवगान ही है। श्री साय ने कहा कि धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान और पीएम जनमन अभियान जनजातीय समुदायों के कल्याण के लिए संचालित की जा रही है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने जनजातीय समुदायों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए एकलव्य विद्यालयों तथा आय में बढ़ोतरी के लिए वन-धन योजना प्रारंभ किया। आयुष्मान भारत योजना में जनजातीय समुदायों के लिए मुफ्त इलाज की सुविधा शुरू की गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज छत्तीसग? में डबल इंजन की सरकार है। हमने जनजातीय क्षेत्रों के विकास की रणनीति तय की है। हमारी सरकार जनजातीय समाज के प्राचीन गौरव और वैभव को वापस पाने के लिए काम कर रही है।

उन्होंने कहा, छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद अब अपनी अंतिम सांसें गिन रहा है। लोकतंत्र की जड़ें दुर्गम क्षेत्रों तक पहुंच रही हैं। अंदरूनी गांवों में भी नियद नेल्ला नार योजना के तहत सड़क, पेयजल, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार जैसी मूलभूत अधोसंरचनाएं पहुंच रही हैं। हमने विकसित भारत के निर्माण के लिए विकसित छत्तीसगढ़ निर्माण का संकल्प लिया है। सभी की सहभागिता से इस लक्ष्य को हासिल किया जाएगा। जनजातीय समुदायों की अधिक से अधिक सहभागिता इस कार्य में सुनिश्चित की जाएगी। 'माटी के वीर' पदयात्रा के शुभारंभ कार्यक्रम में धरती के आबा भगवान बिरसा मुंडा के जीवन वृत्त पर आधारित वीडियो फिल्म का भी प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में खेलकूद सहित अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने वाले जनजातीय युवाओं तथा माई भारत से जु? वॉलेंटियर को सम्मानित किया गया। मुंडा समाज के अध्यक्ष शंकर राम बारला ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया। माटी के वीर पदयात्रा कार्यक्रम के शुभारंभ स्थल पुरना नगर मैदान में जनजातीय नायकों के जीवन गाथा, जनजातीय संस्कृति एवं परंपराओं पर आधारित भव्य प्रदर्शनी लगाई गई।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री अरूण साव, आदिम जाति कल्याण मंत्री रामविचार नेताम, वित्त मंत्री एवं जशपुर जिले के प्रभारी मंत्री ओ.पी. चौधरी, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री टंक राम वर्मा, महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवा?, सांसद राधेश्याम राठिया एवं चिंतामणी महराज, विधायक गोमती साय, रायमुनि भगत, राम कुमार टोप्पो, सुशांत शुक्ला, राज्य महिला आयोग की सदस्य प्रियम्बदा सिंह जूदेव सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण एवं बड़ी संख्या में युवा और नागरिकगण भी उपस्थित थे।

आज से दो दिनों तक ...

यह जनजाति कृषि अर्थव्यवस्था पर निर्भर है। फसल कटाई के बाद उर्वरता के देवता मिसी सालजोंग को धन्यवाद देने के लिए वे यह नृत्य करते हैं। वे फसल उपलब्ध कराने के लिए भगवान को धन्यवाद देते हैं, उनकी पूजा कर नाच-गाकर प्रार्थना करते हैं और नई फसल का भोग लगाते हैं। देवता मिसी सालजोंग को धन्यवाद देने से पहले किसी भी कृषि उत्पाद का उपयोग नहीं किया जाता है। वांगला-रुंगला आदिवासी लोक नृत्य में महिला और पुरुष दोनों हिस्सेदारी करते हैं। पुरुष नर्तक अपना परंपरागत ढोल लेकर नृत्य करते हैं जिसे दामा कहा जाता है। वांगला-रुंगला लोक नृत्य में नर्तकों का नेतृत्व करने वाले को ग्रिकगिपा या तोरेंगिपा कहा जाता है। इसमें महिलाएं संगीत की धुन पर अपने हाथ हिलाती हैं, जबकि पुरुष अपने परंपरागत ढोल को बजाकर नृत्य करते हैं।

0 दुश्मनों पर जीत के जश्न का नृत्य है सोलकिया, मंत्रोच्चार जैसे स्वर संगीत के साथ होता है नृत्य- मिजोरम की राजधानी आईजोल से रायपुर पहुंची लोकनृत्य दल यहां सोलकिया नृत्य की प्रस्तुति देगी। इसके 20 सदस्यों के दल में 11 पुरूष और नौ महिलाएं शामिल हैं। यह नृत्य मुख्यतः मिजोरम की मारा जनजाति द्वारा किया जाता है। 'सोलकिया' का अर्थ दुश्मन के कटे हुए सिर से है। सोलकिया नृत्य मूल रूप से दुश्मनों पर जीत का जश्न मनाने के लिए किया जाता था। खासकर उस मौके पर जब विजेता द्वारा दुश्मन का सिर ट्रॉफी के रूप में घर लाया जाता था। लेकिन अब यह सभी महत्वपूर्ण अवसरों पर मिजो समुदायों के पुरुषों और महिलाओं द्वारा किया जाता है। मिजोरम के कलाकारों के दल का नेतृत्व कर रहे श्री जोथमजामा ने बताया कि सोलकिया नृत्य की शुरुआत पिवी और लाखेर समुदायों द्वारा की गई थी। इस लोक नृत्य के साथ आने वाला स्वर संगीत गायन की तुलना में मंत्रोच्चार के अधिक निकट है। ताल संगीत एक जोड़ी घड़ियों द्वारा प्रदान किया जाता है, जो एक दूसरे से बड़े होते हैं, जिन्हें डार्कहुआंग कहा जाता है। संगीत को बेहतर बनाने के लिए कई जोड़ी झांझ भी बजाए जाते हैं। जोथमजामा ने इस नृत्य को करने वाली मारा जनजाति के बारे में बताया कि यह एक कुकी जनजाति है जो मिजोरम की लुशाई पहाड़ियों और म्यांमार की चिन पहाड़ियों में रहती है। इन्हें लाखेर, शेंदु, मारिंग, जुत्लोसाई और खोंगजई नामों से भी जाना जाता है।

रायपुर दक्षिण उपचुनाव...

मतदान प्रतिशत कम रहा। छत्तीसगढ़ में अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों के मुकाबले शहरी क्षेत्र में अक्सर कम मतदान प्रतिशत दर्ज होता रहा है। मुख्य चुनाव के मुकाबले उपचुनाव में मतदाताओं में ज्यादा उत्साह नजर नहीं आया। कांग्रेस-भाजपा के उम्मीदवारों ने किया वोट- भाजपा प्रत्याशी सुनील सोनी ने साढ़े दस बजे अपना वोट डाला। वहीं कांग्रेस प्रत्याशी आकाश शर्मा ने पंडित सुंदरलाल शर्मा स्कूल में जाकर मतदान किया। वोट डालने से पहले आकाश शर्मा ने मंदिर में पूजा-अर्चना भी की। किन्नर समाज के लोगों ने उन्हें आशीर्वाद दिया। 0 30 उम्मीदवार मैदान में- इस चुनाव में 30 उम्मीदवार मैदान में हैं, लेकिन मुख्य मुकाबला भाजपा के सुनील सोनी और कांग्रेस के आकाश शर्मा के बीच माना जा रहा है। दोनों ही पार्टियों ने इस चुनाव में अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी। अब देखना यह होगा कि जनता किस पर भरोसा जताती है। चुनाव के नतीजे 23 नवंबर को आएंगे।

0 कई जगह हुई झड़प- वोटिंग करने को लेकर जहां लोगों की भीड़ लगी वहीं, कई जगह कांग्रेस और बीजेपी के कार्यकर्ताओं के बीच झड़प देखने को मिली। वोटिंग के दौरान नयापारा पोलिंग बूथ पर खड़े होने को लेकर भाजपा- कांग्रेस कार्यकर्ताओं में बहस हुई। हालांकि पुलिस ने उनको वहां से हटा दिया। इसके साथ ही भाटागांव में स्थित पोलिंग बूथ में पुलिस और बीजेपी कार्यकर्ताओं के बीच झड़प हुई। नारेबाजी को लेकर दोनों के बीच विवाद हुआ। इसी दौरान बीजेपी-कांग्रेस कार्यकर्ताओं में भी बहस हुई। इसके चलते सुरक्षाबलों ने दोनों ही पार्टी के कार्यकर्ताओं को पोलिंग बूथ के आसपास इकट्ठा नहीं होने दिया।

सुप्रीम कोर्ट की बुलडोजर एक्शन...

किसी का मकान गिराना गलत है। अगर, ऐसा होता है तो प्रशासन को इसके लिए जवाबदेह ठहराया जाएगा। अपराधियों को भी संविधान के तहत अधिकार मिलते हैं। उन्हें बिना मुकदमे दोषी नहीं ठहराया जा सकता। 0 परिवार के लिए घर एक अंतिम सुरक्षा- सुप्रीम कोर्ट- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि किसी भी परिवार के लिए घर एक सपना और अंतिम सुरक्षा होती है। कोर्ट ने आदेश दिया कि मकान मालिक को डाक से नोटिस भेजा जाए और गलत तरीके से घर तोड़े जाने पर मुआवजा दिया जाए। कोर्ट ने बुलडोजर एक्शन को पक्षपाती और मनमानी कार्रवाई बताया, जिससे कानून का डर और मौलिक अधिकारों का हनन होता है।

आईपीएस जीपी सिंह को बड़ी राहत ...

याचिकाकर्ता की ओर से चंडीगढ़ के सीनियर काउंसिल रमेश गर्ग वर्चुअल उपस्थित हुए। अधिवक्ता हिमांशु पांडेय ने फिजिकली उपस्थित होकर तर्क पेश किया। 0 ऐसे चला मामला- 8 जुलाई की रात को उनके खिलाफ राजद्रोह का केस दर्ज कराया था। आरोप था कि जीपी सिंह सरकार गिराने की साजिश रच रहे थे। 9 जुलाई 2021 को जीपी सिंह ने हाईकोर्ट में याचिका दाखिल कर सीबीआई जांच की मांग की थी। मामले की जांच के बाद 11 जनवरी 2022 को जीपी सिंह को नोएडा से गिरफ्तार किया गया, जिसके बाद उन्हें मई 2022 में जमानत मिली गई। 0 सीएटी से भी मिली है राहत- आईपीएस जीपी सिंह को कैट केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण से भी राहत मिल चुकी है। कैट ने चार हफ्तों के भीतर आईपीएस जीपी सिंह से जुड़े सभी केसों का निराकरण कर उन्हें बहाल करने का आदेश दिया था। जीपी सिंह 1994 बैच के आईपीएस अधिकारी हैं और उन्हें राज्य सरकार की अनुशंसा पर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने जुलाई 2023 में अनिवार्य सेवानिवृत्ति दे दी थी।

0 वर्ष 2021 में जीपी सिंह के खिलाफ हुई थी कार्रवाई- एक जुलाई को एसीबी की टीम ने रायपुर पुलिस लाइन स्थित सरकारी बंगले पर छापामार कार्रवाई की थी। इसके अलावा राजनांदगांव और ओडिशा में जीपी सिंह के 15 अन्य ठिकानों पर भी छत्तीसगढ़ एसीबी ने दबिश दी थी। इस कार्रवाई में जीपी सिंह के खिलाफ 10 करोड़ रुपये की अघोषित संपत्ति मिलने का दावा एसीबी ने किया था। इसके अलावा छापे में कई दस्तावेज भी एसीबी को मिले थे। दस्तावेजों के आधार पर एसीबी ने भ्रष्टाचार के मामले में एफआईआर दर्ज किया था। राज्य सरकार ने 5 जुलाई 2021 को उन्हें निलंबित कर दिया था और उनके खिलाफ राजद्रोह का मामला दर्ज किया था। 0 11 जनवरी को हुई थी गिरफ्तारी- मामले की जांच के बाद 11 जनवरी 2022 को जीपी सिंह को नोएडा से गिरफ्तार किया गया था। इसके बाद उन्हें मई 2022 में जमानत मिली। सर्विस रिव्यू कमेटी की सिफारिश पर 21 जुलाई 2023 को केंद्रीय गृह मंत्रालय ने आईपीएस जीपी सिंह को अनिवार्य सेवानिवृत्ति दे दी थी। 0 राज्य सरकार ने भेजा है बहाली का प्रस्ताव, केंद्र ने दी है चुनौती- बर्खास्त आईपीएस जीपी सिंह को बहाल करने के आदेश केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण ने दिए थे। जिसके परिपालन में राज्य सरकार ने केंद्र सरकार को बहाली प्रस्ताव भेजा था। पर केंद्र सरकार ने अब तक आदेश जारी नहीं किए हैं। दिल्ली हाईकोर्ट में कैट के फैसले के खिलाफ अपील कर दी है। जिसका निराकरण होने के बाद जीपी सिंह की बहाली हो पाएगी।

झारखंड में पहले चरण के चुनाव में..

दूसरी तरफ, आठ विधानसभा क्षेत्रों में मतदान प्रतिशत में कमी आई है। इनमें घाटशिला, जुगसलाई, ईचागढ़, कांके, पांकी, छतरपुर और तमाड़ शामिल हैं। नौ विधानसभा क्षेत्रों में 70 प्रतिशत से अधिक मतदान - पहले चरण के चुनाव में कुल 43 विधानसभा क्षेत्रों में 9 में 70त्न से अधिक मतदान हुआ है। इनमें खरसावां, बहरागोड़ा, घाटशिला, पोटका, सरायकेला, मांडर, सिसई, बिशुनपुर तथा लोहरदगा सम्मिलित हैं। इनमें अधिसंख्य आदिवासी सीट हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में पांच विधानसभा क्षेत्रों बहरागोड़ा, घाटशिला, ईचागढ़, खरसावां तथा लोहरदगा ने ही यह उपलब्धि हासिल की थी।

रानी मंदिर छुईखदान में तुलसी शालिग्राम विवाह देवउठनी एकादशी धूमधाम, हर्षोल्लास के साथ मना

राजनांदगांव (दावा)। कार्तिक मास देवउठनी एकादशी मंगलवार 12 नवम्बर को रियासत कालीन रानी मंदिर छुईखदान में तुलसी शालिग्राम विवाह देवउठनी एकादशी धूमधाम हर्षोल्लास एवं आतिशबाजी से मनाया गया। मंदिर समिति के संरक्षक लाल जे.के. वैष्णव ने जानकारी दी कि गोधुलि बेला मंदिर प्रांगण में तुलसी चौरा के आसपास मंडप सजाकर भगवान श्री गोपाल जी तुलसी शालिग्राम शिला को सिंहासन चौकी में विराजमान कर मौलीधागा, रेशमी कपड़े चारों कोने में गन्ना बांधकर दीपक जलाकर संस्कृत के मंत्रों उच्चारण से तुलसी शालिग्राम विवाह कर उत्तीष्ट गोविन्द के मंत्रों द्वारा परिक्रमा किया गया एवं एकादशी महत्तम पाठ किया गया।

भगवान की आरती पूजा पश्चात मौसमी फल, कंदमूल, आंवला पीढ़ीकांदा, सिंघाड़ा, चने की भाजी चढ़ाकर धूप दीप सात परिक्रमा पूजा कर विभिन्न व्यंजनों का भोग लगाकर विधि-विधान से पूजा कर प्रसाद वितरण किया गया।

इस अवसर पर पुजारी अनिल रानी मंदिर, सुप्रिया सचिन महोबिया, संध्या मधुकर महोबिया, नेहा मुकेश महोबिया, दिनेश महोबिया, सपना काजल महोबिया, लतारानी लाल.जे.के. वैष्णव, लाल सूर्याशीष वैष्णव विकास आनंद, योगेश महोबिया, आशुतोष, गायत्री महोबिया, गुड्डी महोबिया, करण सिंह पत्रकार, अरविन्द शर्मा, प्रकाश जैन बघमार, शिवेन्द्र किशोर अधिवक्ता, जितेन्द्र,पल महोबिया, लावण्या महोबिया, आकांक्षा सुनील उपाध्याय, मंगलीन यादव, मेघा, चंचल, वीणा, वान्या नरेश यादव सहित बड़ी संख्या में भक्त गण उपस्थित रहे। वैष्णव समाज के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष लाल.जे.के.वैष्णव ने कहा कि देवउठनी एकादशी पूजा पश्चात सभी मांगलिक कार्य प्रारंभ होता है। देवउठनी एकादशी पर्व 2024 में मंदिर परिसर में रंगोली सहित पारम्परिक, छत्तीसगढ़ संस्कृति को बचाए रखने बड़ों के साथ बाल गोपाल छोटे बच्चों द्वारा मंदिर में राऊत नाच का मनमोहक बहुत सुंदर प्रस्तुति दिया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र में गोंद उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण संपन्न

राजनांदगांव (दावा)। कृषि विज्ञान केन्द्र राजनांदगांव में प्राकृतिक रॉल व गोंद का संग्रहण, प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन पर नेटवर्क परियोजना अंतर्गत गोंद उत्पादन तकनीकी पर एक दिवसीय प्रशिक्षण सह प्रदर्शन का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर के परियोजना प्रभारी डॉ. प्रतिभा कटियार ने गोंद को हार्वेस्ट कर सुरक्षित और प्रसंस्कृत करने की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जिले में बबूल के पेड़ बहुतायत मात्रा में रॉल व गोंद पाया जाता रहा है। इसके साथ ही बबूल, पलाश, झिंगम, कराया, धावड़ा के पेड़ों से गोंद निकालने, पेड़ों की न्यूनतम ऊंचाई पर प्रचुर मात्रा में गोंद मिलने के स्थान सहित अन्य जानकारी दी गई। डॉ. पीएस पीसलकर ने कृषि उत्पाद के पोस्ट हार्वेस्ट तकनीक के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। प्रशिक्षण में प्रदेश के जिलों में गोंद उत्पादन व प्रसंस्करण पर विस्तार से चर्चा की गई।

इस अवसर पर केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. गुंजन झा ने गोंद उत्पादन की संभावनाओं, उपयोग तथा उसके प्रसंस्करण से आय में वृद्धि के तरीकों व खाद्य पदार्थ, औषधि के रूप में, कास्मेटिक के निर्माण में रॉल व गोंद के उपयोग पर विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ. नूतन रामटेके, श्रीमती अंजली घृतलहरे, मनीष कुमार सिंह, डॉ. योगेन्द्र श्रीवास, जितेन्द्र कुमार मेश्राम, श्रीमती मंजूलता मेरावी व जिले के प्रगतिशील कृषक उपस्थित थे।

दिग्विजय में सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम

राजनांदगांव (दावा)। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा संस्था के प्राचार्य डॉ.अंजना ठाकुर मैम के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी इकाई 01 प्रो. संजय ससर्षि, इकाई 2 प्रो. करुणा रावटे के नेतृत्व में सात दिवसीय विशेष शिविर ग्राम कुतुलबोर्ड भाटागांव का आयोजन, युवा भारत के लिए युवा, डिजिटल भारत के लिए युवा विषय पर आयोजित किया गया है।

सात दिवसीय विशेष शिविर का विशेष सत्र बौद्धिक परिचर्चा के चौथे दिवस के सत्र में मुख्य अतिथि यूनिसेफ जिला राजनांदगांव से जिला समन्वयक दिव्या राजपूत मैम, वरिष्ठ प्राध्यापक कमला कॉलेज डॉ.के.के. द्विवेदी सर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में उपस्थित जिला समन्वयक यूनिसेफ राजनांदगांव दिव्या राजपूत द्वारा जिला प्रशासन राजनांदगांव के साथ यूनिसेफ का कार्यक्रम युवोदय के बारे में विस्तृत जानकारी दिया गया। साथ ही साथ मानसिक स्वास्थ्य जैसे विषयों में स्वयं और किस प्रकार ग्रामीणों को लोगों को जागरूक कर सकते है और कैसे मानसिक स्वास्थ्यता बनाकर रखेंगे बताया गया। साथ ही कार्यक्रम में उपस्थिति डॉ.के. के. द्विवेदी सर द्वारा विवेकानंद की जीवनी को समझाते हुए उनके आचरण और जीवन परिचय के माध्यम से सभी स्वयंसेवियों समाज सेवा के साथ साथ पढ़ाई करने को जागरूक किया गया।

अंत में सर द्वारा दोनों कार्यक्रम अधिकारी एवं वरिष्ठ स्वयंसेवियों को गीता दैनंदनी डायरी उपहार भेंट किया गया। कार्यक्रम में मंच संचालन स्वयंसेवक धीरज दास द्वारा किया गया। उक्त कार्यक्रम में कार्यक्रम अधिकारी इकाई 1 प्रो. संजय ससर्षि, इकाई 2 प्रो. करुणा रावटे, के साथ साथ 108 स्वयंसेवी और समस्त स्कूल विभाग और स्कूली बच्चे कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

नागपुर मण्डल द्वारा माल से 139.60 करोड़ तथा टिकट ब्रिक्री से 22.53 करोड़ की आय अर्जित की

राजनांदगांव (दावा)। श्रीमती नमिता त्रिपाठी मण्डल रेल प्रबन्धक के नेतृत्व में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे नागपुर मंडल द्वारा माल लदान के क्षेत्र में अक्टूबर माह में 1.55 मिलियन टन माल ढुलाई से रु.139.60 करोड़ अर्जित किया गया। इस प्रकार कुल माल ढुलाई पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 6.16ः की वृद्धि दर्शाती है। अक्टूबर माह में औसतन प्रति दिन 717 वैगन की ढुलाई की गई जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 5.1ः अधिक है।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे जोन में तेजी से नई रेल लाइन, दोहरी करण, तीसरी लाइन एवं चौथी लाइन के कार्य किए जा रहे है। इन निर्माण कार्यों के दौरान सुरक्षा व संरक्षा को ध्यान में रखते हुये आवश्यकता होने पर ही कुछ ट्रेनों का परिचालन विशेषकर यात्री व मेमू ट्रेनों को रद्दए मार्ग परिवर्तित या पुनर्निर्धारित कर कार्य को पूर्ण किया जा रहा है अक्टूबर माह मेल/एक्सप्रेस गाड़ियों की समय बद्दता लगभग 80ः रही जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में रेल गाड़ियों की समय बद्दता 66.17ः थी। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे नागपुर मण्डल में सभी रेल गाड़ियों का नियमित परिचालन अपने निर्धारित समयानुसार किए जाने हेतु हर संभव किया जा रहा है।

टिकट चेकिंग क्षेत्र में अक्टूबर 2024 माह में श्री दिलीप सिंह दूवरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक की दिशा निर्देशानुसार में अधिकारियों व टिकट चेकिंग कर्मियों द्वारा विभिन्न गाड़ियों तथा रेल्वे स्टेशनों में टिकट चेकिंग स्टाफके सहयोग से चलाये गए टिकट जांच अभियानों के अंतर्गत बिना टिकट / अनियमित यात्रा तथा बिना माल बुक किए गए लगेज के 20079 मामलें दर्ज कर कुल रु.71 लाख वसूले गए। इस के अलावा अक्टूबर माह में धूम्रपान के 118 मामलों से रु.20.200/ वहीं रेल परिसर में गंदगी फैलाने वाले कुल 693 यात्रियों से वसूले गए दंड स्वरूप रु.71,000/ शामिल है। यात्री यातायात के तहत कुल टिकट 1.87 मिलियन ब्रिक्री से रुण् 22.53 करोड़ अर्जित की गई जबकि पार्किंग से 3.88 लाख व खान-पान से 9.16 लाख वसूले गए।

इसके अलावा पार्सल लदान के अंतर्गत 01.10.2024 से 31.10.2024 तक 1576 टन पार्सल लोडिंग से रु. 44.56 लाख की आय हुई वही मई महीने में गैर किराया राजस्व (नॉन फेयर रेवेन्यू) क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के फलस्वरूप रु.21.26 की आय हुई जो कि पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 112.60ः अधिक है दिलीप सिंह-वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबन्धक ने रेल यात्रियों से अपील की है कि वें यात्रा के दौरान रेल नियमों का पालन कर उचित टिकट लेकर यात्रा करें। घर बैठे आसानी से अनारक्षित टिकट बुकिंग तथा सीजन टिकट (एमएसटी) जारी व नवीनीकरण कराने हेतु यूटीएस ऐप का उपयोग कर काउण्टरों में लगने वाली लाइनों से बचे तथा अपनी यात्रा को सुगम बनाएं।

भाजपा सरकार की कोशिश किसानों के घर हो रोज दिवाली - श्रीमती प्रतीक्षा सूर्यकांत भंडारी

राजनांदगांव (दावा)। जनपद पंचायत के अध्यक्ष प्रतीक्षा सूर्यकांत भंडारी ने अपने एक जारी बयान में राज्य की भाजपा सरकार और केंद्र की भाजपा नीत राजक सरकार की प्रशंसा करते हुए कहा कि डबल इंजन की सरकार किसानों के घर रोज दिवाली मने इस प्रयास में लगी हुई है। उन्होंने कहा कि 3100 रुपये प्रति क्विंटल का एक मुस्त भुगतान होने से किसान कोई बड़ी काम कर सकते है। जैसे ट्रैक्टर खरीदना जमीन लेना खेती को बढ़ाना बच्चों के शादी विवाह उन्हे उच्च शिक्षा दिलाना आदि।

धान खरीदी शुरू होने से खुशियों का माहौल

श्रीमति भंडारी ने आगे कहा कि इस साल ऊपर वाले ने भी साथ दिया है। जिससे खेतों में विपुल उत्पादन के आसार दिखाई दे रहे हैं। ऐसा लगता है कि साक्षात मां लक्ष्मी ने अपने आंचल फैला रखे हैं। यह नजारा देखकर किसानों और खेतिहर मजदूर भारी प्रसन्नता व्याप्त है।

अच्छी फसल को देखते हुए अच्छे व्यापार की उम्मीद व्यापारियों को भी दिखाई दे रही है। इसलिए उन्हें भी खुशी लग रही है। आगामी 14 नवंबर से प्रदेश में समर्थन दर पर धान खरीदी की चुस्त दुरुस्त व्यवस्था शासन प्रशासन द्वारा की जा रही है। जिससे किसानों में प्रसन्नता व्याप्त है। किसान भाई-बहन और खेतीहर मजदूर धान कटाई मिजाई में युद्ध स्तर पर भिड़े हुए हैं। उन्हें अवगत करा दिया गया है कि 14 नवंबर से समर्थन दर पर सोसाइटियों में धान खरीदी जो होगी उसकी राशि 3100 प्रति क्विंटल के हिसाब से किसानों के खातों में अविलम्ब भेजी जाएगी। इससे उन्हें घर खर्च चलाने कर्ज छुटने तथा कोई स्थाई बेशकीमती चीज खरीदने में सहूलियत होगी। साथ ही उन्नत कृषि का दायरा बढ़ा सकते हैं।

भारतीय जनता पार्टी ने अपनी चुनावी घोषणा पत्र में किसानों को बहुत महत्व दिया था और अन्नदाता की हमेशा दुख सुख में भारतीय जनता पार्टी हमेशा खड़ी रहती है अपने वादा को पूरा करते हुए एक मुस्त राशि अन्नदाता किसानों को खाता में 14 नवंबर से धान खरीदी की राशि डाला जाएगा।

जागव तुलसी पूजन महोत्सव व नोनी सम्मान समारोह आयोजित

राजनांदगांव(दावा)। ग्राम जोरातराई (मनगटा) में एवं ग्रामवासियों के संयुक्त तत्वावधान में टह्ल सिंग साहू प्रदेश अध्यक्ष छत्तीसगढ़ साहू संघ रायपुर के मुख्य आतिथ्य एवं हर्षिता स्वामी बघेल विधायक डोंगरगढ़ की अध्यक्षता में तुलसी पूजन व भव्य नोनी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

अध्यक्षता कर रहे विधायक हर्षिता स्वामी बघेल नेआयोजन समिति को बधाई देते हुए कर्मा भवन अहाता के लिए पांच लाख रुपए देने की घोषणा की। विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक भुनेश्वर सिंह बघेल ने माता तुलसी की पूजन कर नोनी सम्मान के रूप में समस्त बेटियों का तिलक लगाकर, मिठाई खिलाकर सम्मान किया। उन्होंने जागव तुलसी पूजन ग्रुप के समस्त सदस्यों को बधाई व शुभकामनाए देते हुए कहा हमें ऐसे आयोजनों में हमेशा आगे बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए। आयोजन समिति के द्वारा तुलसी विवाह के अवसर पर आम भंडारा (भोजन प्रसादी) भी रखा गया था। रात्रि में लोक छाया सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन हुआ। कार्यक्रम का संचालन प्रदेश सह संयोजकअधिकारी कर्मचारी प्रकोष्ठ परदेशी राम साहू ने किया।इस अवसर पर भागवत साहू जिला अध्यक्ष साहू संघ राज, अंजनी साहू, तुलदास साहू, राम सिंग साहू, रतन यादव, जागव तुलसी पूजन ग्रुप के अध्यक्ष रमाकांत साहू एवं समस्त आयोजक बन्धु गण, सामाजिक जन एवं ग्रामीण जन उपस्थित थे।

बालोद जिले में आज 143 धान उपार्जन केन्द्रों में समर्थन मूल्य पर की जाएगी धान की खरीदी

बालोद । बालोद जिले में राज्य शासन के निर्देशानुसार 14 नवंबर 2024 को 143 धान उपार्जन केन्द्रों के माध्यम से समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी शुरू की जाएगी। कलेक्टर श्री इन्द्रजीत सिंह चन्द्रवाल के मार्गदर्शन में बालोद जिले में खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी हेतु जिले के धान उपार्जन केन्द्रों में सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई है। जिला खाद्य अधिकारी ने बताया कि जिले में खरीफवर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी हेतु 01 लाख 54 हजार 144 किसानों ने पंजीयन कराया है। उन्होंने बताया कि धान विक्रय हेतु कुल 2842 किसानों को टोकन जारी किया गया है। जिसमें समिति द्वारा 212 टोकन और टोकन तुंहर दुआर अंतर्गत 2630 टोकन शामिल है। उन्होंने बताया कि जारी टोकन के द्वारा कुल 01 लाख 18 हजार 175 क्विंटल धान की खरीदी की जाएगी। उन्होंने बताया कि इस वर्ष समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी पंजीकृत किसानों से शतप्रतिशत बॉयोमेट्रिक से की जाएगी। यदि किसान का अंगूठा मिलान नहीं करता है तो उनके द्वारा नियुक्त नामिनी के द्वारा धान का विक्रय किया जा सकेगा। उसके उपरांत भी यदि कोई समस्या आती है तो तीसरा विकल्प ट्रस्टेड पर्सन एवं चैथा विकल्प मोबाईल ऐप से ओटीपी के माध्यम से धान की खरीदी की जाएगी। इस तरह इस वर्ष किसानों को धान के विक्रय हेतु चार प्रकार की सुविधा दी गई है। शासन के निर्देशानुसार सीमांत एव लघु कृषको से 02 टोकन में एवं दीर्घ किसानों से 03 टोकन में धान की खरीदी की जाएगी। धान की खरीदी हेतु सभी उपार्जन केन्द्रों में नए जूट बारदाने प्रदाय किए गए हैं। साथ ही पुराने बारदाने नियमित रूप से उपार्जन केन्द्रों में भेजी जा रही है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष धान की खरीदी शतप्रतिशत इलेक्ट्रॉनिक तराजू से की जाएगी।

जिला खाद्य अधिकारी ने पंजीकृत किसानों से अपील की है कि धान विक्रय हेतु टोकन कटाने के पूर्व भली-भांति देख लें कि वे यदि सीमांत या लघु कृषक हैं तो उन्हें 02 ही बार टोकन धान विक्रय हेतु मिलेगा। उसी प्रकार दीर्घ कृषकों को 03 बार टोकन में ही उत्पादित धान का विक्रय करना होगा। उन्होंने बताया कि यदि किसान अपना उत्पादित धान विक्रय करने के पश्चात् शेष रकबा बचता है तो समिति को लिखित में सहमति पत्र दे सकते हैं, कि वे अब और धान नहीं बेचना चाहते हैं। किसी भी स्थिति में किसी व्यापारी, कोचिया या अन्य किसान का धान अपने पंजीयन के खाते में विक्रय न करें। जांच के दौरान ऐसी स्थिति पाए जाने पर संबंधित को कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है।

सीईओ जिला पंचायत ने शासन की विभिन्न योजनाओं एवं कार्यो के प्रगति की विस्तृत समीक्षा की

राजनांदगांव (दावा)। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सुश्री सुरूचि सिंह द्वारा जिला पंचायत सभाकक्ष में वीडियो कान्फ्रेसिंग के माध्यम से राजनांदगांव, मोहला-मानपुर-अम्बागढ़ चौकी एवं खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई जिले के अधिकारियों की बैठक लेकर शासन की विभिन्न योजनाओं एवं कार्यों के प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गई। सीईओ जिला पंचायत ने स्वच्छ भारत अभियान की ओडीएफ सत्यापन की ब्लाकवार समीक्षा की। खैरागढ़ जनपद की धीमी प्रगति पर असंतोष प्रकट व्यक्त करते हुए कार्य में गति लाने के निर्देश दिए। उन्होंने स्वच्छता दीदीयों का मानदेय का भुगतान समय पर उपलब्ध कराने कहा तथा विभिन्न कार्यों में बॉटल ब्रिक्स निर्माण कर उपयोग करने कहा। स्वच्छता त्यौहार अंतर्गत स्कूली बच्चों की रैली, गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति, दुकानदारों एवं ढाबा संचालकों की भागीदारी तथा नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन करने तथा एक पेड़ माँ के नाम से रोपित पौधों की देखभाल करने कहा।

अग्रहरि समाज का दीपावली मिलन एवं अन्नकूट हर्षोल्लास के साथ संपन्न

राजनांदगांव (दावा)। 9 नवंबर को गोपाष्टमी के पावन पर्व के अवसर पर अग्रहरि वैश्य समाज, राजनांदगांव द्वारा स्थानीय अग्रहरि भवन में समाज के सदस्यों की उपस्थिति में प्रभात गुप्ता राजा की अध्यक्षता में साधारण सभा की बैठक सम्पन्न हुई जिसमें पूर्व अध्यक्ष मनोज अग्रहरि द्वारा नए कोषाध्यक्ष प्रवीण अग्रहरि को कोष का प्रभार सौंपा गया।

बैठक में समाजहित में अनेकों महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। बड़ी संख्या में उपस्थित समाज के सदस्यों, महिलाओं, युवाओं तथा बच्चों ने परस्पर शुभकामनाएँ देकर तथा बड़ों का आशीर्वाद लेकर दीपावली मिलन का उत्सव मनाया। अन्नकूट पर्व के शुभ अवसर पर श्री लड्डू गोपाल जी, महाराज अग्रसेन जी तथा गौ माता की पूजा कर भोग लगाने के पश्चात सभी ने अन्नकूट प्रसादी ग्रहण किया।

इस कार्यक्रम में अतिथि के तौर पर महापौर श्रीमती हेमा देशमुख का आगमन हुआ जिनका स्वागत अग्रहरि महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सुधा सतीश गुप्ता ने फूलों का गुलदस्ता देकर किया। शतायु हो चुकी श्रीमती जमुना बाई भी इस कार्यक्रम में पहुंचीं और लोगों का उत्साह बढ़ाया एवं आशीष दिया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अग्रहरि युवा संगठन का भी भरपूर सहयोग रहा। कार्यक्रम के अंत में सचिव अरविंद अग्रहरि ने आभार व्यक्त किया। उक्त जानकारी मीडिया प्रभारी कैलाश अग्रहरि ने दी।

मोदी सरकार से देश की जनता और विष्णु देव साय सरकार से राज्य की जनता त्रस्त हैं- सुरेन्द्र देवांगन

राजनांदगाँव (दावा)। राष्ट्रीय मजदूर (कांग्रेस) राजनांदगाँव के शहर अध्यक्ष सुरेन्द्र देवांगन ने यह आरोप लगाया हैं कि जब से केन्द्र में नरेन्द्र मोदी की सरकार बनी हैं और छत्तीसगढ़ राज्य में विष्णु देव साय की सरकार बनी है तब से जनता त्रस्त है।

2014 लोकसभा चुनाव के समय जो भी वायदे, घोषणा पत्र, या भाषण में कहा गया था वह सब जुमला साबित हूआ है न अच्छे दिन आये, न देश के यूवा बेरोजगारों को हर साल 2 करोड़ नौकरी मिली न किसी के खाते में 15 लाख आये, न किसानों का आय दोगूना हूआ, न देश की महिला सूरक्षित, सशक्त, आत्मनिंभर बनी, न चीन को लाल आँख दिखाए, न पाकिस्तान का 1 सर के बदले 10 सर लाये और भी बहूत से जूमले वादे किये थे आज 10 वर्षो से भी ज्यादा समय हो गये महंगाई का जो आलम रहा है जिससे हर वर्ग के लोगों का कमर टूट गया है अमीर वर्ग के लोग मध्यम वर्ग हो गये, मध्यम वर्ग के लोग गरीब हो गये, और गरीब वर्ग के लोग बद से बदतर हो गये गये तभी तो 400 पार का नारा देने वाले 240 में ही सिमट गये देश की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को 2024 लोकसभा चुनाव में नाकारा है वही हाल विष्णु देव साय सरकार का है मात्र 10 महीने हूए हैं विकास कार्य एक भी नही किये हैं राज्य के हर वर्ग के लोग चाहे किसान, आँगनबाड़ी कार्यकर्ता, शासकीय कर्मचारी, नगर निगम कर्मचारी, शिक्षक, चिकित्सक, पटवारी संघ, धान खरीदी करने वाले सोसायटी कर्मचारी, दस्तावेज लेखक संघ, मजदूर संघ, हर वर्ग त्रस्त है।

गुण्डरदेही के खर्रा-रौना नदी पर उच्च स्तरीय पुल मय पहुँच मार्ग निर्माण, 11 कृषकों की भूमि भू-अर्जन के लिए प्रस्तावित

बालोद। राजस्व अनुविभागीय अधिकारी गुण्डरदेही श्री सुरेश साहू ने बताया कि कार्यपालन अभियंता लोक निर्माण सेतु निर्माण संभाग दुर्ग के द्वारा अनुविभाग गुण्डरदेही के खर्रा-रौना नदी पर उच्च स्तरीय पुल मय पहुँच मार्ग 11 कृषकों का प्रस्ताव भू-अर्जन नीति कि तहत आपसी सहमति से भूमि क्रय नीति 2016 के अनुसार 0.0564 हे कय हेतु प्रस्ताविक रकबा भूमि अर्जित किये जाने हेतु प्रस्तावित है।

युवाओं ने नुक्कड़ नाटक, रैली और हस्ताक्षर अभियान द्वारा चलाया जन जागरुकता

राजनांदगांव (दावा)। कॉन्फ्लुएंस कॉलेज की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई एवं विस्तार गतिविधि द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन की दृष्टि से पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के अंतर्गत विशाल रैली का आयोजन हृदय स्थल जयस्तंभ चौक से प्रारंभ किया गया। शहर में पर्यावरण नेतृत्व विकास हेतु युवाओं को आग्रह करते हुए नारा लगाकर आह्वान किया गया। प्रो. विजय मानिकपुरी कार्यक्रम अधिकारी एनएसएस ने कहा आयोजन का मूल मकसद वर्तमान में बढ़ता प्रदूषण, कम होते वन, घटते वन्य जीव, प्राकृतिक संपदा का अत्यधिक दोहन, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, ओजोन परत के छरन, ग्लोबल वार्मिंग पर कुप्रभाव आदि कारकों के कारण पर्यावरण असंतुलित हो रहा है।

- पृथ्वी पर जीवन की बुनियादी आधार हवा, पानी और मिट्टी तीनों पर ही खतरा मंडरा रहा है,
- युवाओं ने किया पर्यावरण संरक्षण के प्रति अभियान

जिससे विश्वव्यापी समस्या बन गई है, जो चिंताजनक और मानव जाति के लिए गंभीर चुनौती भी है। पर्यावरण का संबंध केवल संस्कृति से ही नहीं अपितु संस्कारों तथा सरोकारों से भी है। जब तक मानव प्रकृति का भाग रहती है, प्रकृति इनका संरक्षण करती है। प्रकृति स्वतः पेड़ लगाती है, हमें तो उनका संरक्षण करना है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना जगाने का काम नुक्कड नाटक, रैली, हस्ताक्षर अभियान से संकल्प हेतु आयोजन किया जा रहा है।

प्राचार्य डॉ.रचना पांडे ने कहा कि विश्वविद्यालय इस बार तृतीय राष्ट्रीय पर्यावरण युवा संसद का आयोजन कर रही है जिसमें युवाओं की सक्रिय भूमिका, वैश्विक पर्यावरणीय चुनौती तथा समाधान, पर्यावरण कूटनीति और नीति निर्धारण के क्षेत्र में सहयोग तथा संवाद को बढ़ावा देने की दृष्टि से महाविद्यालय में विभिन्न गतिविधियां पर्यावरण संरक्षण विषय को लेकर किया जा रहा है। जिसमें हमने 4 नवंबर से लेकर 10 नवंबर तक रैली नुक्कड़ नाटक, भाषण प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता, हस्ताक्षर अभियान, साफ सफाई जैसे अनेक गतिविधियां गोदग्राम पार्रीकला से लेकर राजनांदगांव शहर में किए हैं। आयोजन से युवाओं में पर्यावरण मुद्दों पर गहन विमर्श, नीति निर्धारण तथा नेतृत्व का विकास भी संभव होगा। वह सामाजिक दायित्व एवं सामाजिक संकल्प पूर्ण करेगा।

जन सहभागिता, जन जागृति, जन जिम्मेदारी और जन कार्यवाही के लिए प्रेरित होंगे। प्रति इंदौरकर विभागाध्यक्ष ने कहा मानव पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली घटक है, पृथ्वी को इस गंभीर संकट से बचाने जन जागरूकता कॉलेज द्वारा किया जा रहा है। आयोजन में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के बीएड के विद्यार्थियों ने पर्यावरण संरक्षण मुद्दों के साथ नुक्कड़ नाटक किया। सैकड़ों की संख्या में विद्यार्थियों की उपस्थिति रही जिसे शहरवासियों ने खूब सराहा और पर्यावरण संरक्षण मुद्दों पर चर्चा हुई बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

आज से जिले भर के 96 केंद्रों में समर्थन मूल्य पर होगी धान खरीदी, सभी तैयारियां पूरी

तुंहर एप के माध्यम से किसानों को 1 लाख 27 हजार क्विंटल धान का आनलाइन टोकन जारी

राजनांदगांव (दावा)। आज 14 नवंबर से जिले के किसानों से 31 सौ प्रति क्विंटल के दर से समर्थन मूल्य में धान खरीदी का कार्य शुरू होने जा रहा है। सहकारी समितियों द्वारा इसकी तैयारियां कर ली गई है। बीच में सहकारी समिति प्रबंधकों एवं कर्मचारियों की तीन सूत्रीय मांग आड़े आ जाने की वजह से धान खरीदी की तैयारी में थोड़ी देरी जरूर हुई लेकिन शासन द्वारा उनकी मांगे मांग लिए जाने के कारण वे सभी जोरो- शोरों से धान खरीदी के कार्य में जुट गए हैं। बता दें कि इस वर्ष शासन द्वारा सोसायटियों के माध्यम से जिले में 77,37,500 क्विंटल धान खरीदी का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

धान खरीदी के पूर्व किसानों को बोहनी के लिए 2309 टोकन वितरित किया गया था। आनलाइन एप में खराबी आने से अन्य किसानों को टोकन नहीं मिल पाया था। अब जानने में आ रहा है कि जिले के 51 समितियों के 85 हजार से अधिक पंजीकृत किसानों से धान खरीदी के लिए 1 लाख 27 हजार क्विंटल का टोकन जारी हो चुका है।

जनवरी के अंतिम दिन तक चलेगी खरीदी

बता दें कि आज 14 नवंबर से चालू होने वाले धान खरीदी का कार्य अगले वर्ष 2025 के जनवरी माह के अंतिम दिन 31 जनवरी तक चलेगा। बता दें कि किसानों को प्रति एकड़ 21 क्विंटल ही धान खरीदा जाएगा जिस पर उन्हें प्रति क्विंटल 3100 रुपए का भुगतान होगा। इस वर्ष केंद्र सरकार ने भी समर्थन मूल्य में 117 रुपए की वृद्धि की है। इससे किसान काफी खुश नजर आ रहे हैं। वैसे भी जिले में अच्छी बारिश होने के कारण धान की पैदावार में काफी बढ़ोतरी हुई है। शीघ्र तथा देरी से पकने वाली धान कि अधिक से अधिक किसानों ने किया है। हरुना धान से लेकर महामाया, सरना, आई आर -64 सहित अन्य धान की बोनी सर्वाधिक हुई है।

शासन का इस वर्ष जिले में 77,37,500 क्विंटल धान खरीदी का लक्ष्य निर्धारित

किसानों की संख्या में वृद्धि

जिले में सरकारी कीमत पर धान बेचने वाले किसानों की संख्या बढ़ी है। मिली जानकारी के अनुसार जिले में इस बार कुल 132468 किसानों ने अपनी पंजीयन कराया है। यह संख्या पिछले बार से तकरीबन 7737560 क्विंटल धान जिले खरीदने का लक्ष्य रखा गया है। उक्तानुसार जिले में लगभग 1, 95 लाख बारदाना की जरूरत पड़ेगी। इसमें से 70 प्रतिशत बार दाना केंद्रों में पहुंचने की बात कही जा रही है। बहरहाल आज से किसानों से समर्थन मूल्य में धान खरीदी किए जाने से जहां किसानों में खुशी तो देखी जा रही है वहीं सहकारी समिति प्रबंधकों व कर्मचारियों की 3 सूत्रीय मांग शासन द्वारा मान लिए जाने से उनमें भी उत्साह देखा जा रहा है।

महिला से 58 लाख की ठगी : ठगों ने 24 घंटे तक किया डिजिटल अरेस्ट

रायपुर (दावा)। राजधानी रायपुर में एक महिला डिजिटल अरेस्ट हो गई। आरोपियों ने खुद को मुंबई क्राइम ब्रांच का अफसर बताया और महिला से 58 लाख रुपए वसूल लिए। जानकारी के मुताबिक 3 नवंबर की दोपहर महिला के पास फोन आया था। महिला 24 घंटों तक साइबर ठगों की कैद में रही। 4 दिनों में मैसेज के माध्यम से 58 लाख ट्रांसफर करवाए। इस मामले की शिकायत महिला ने पंडरी थाने में की है। मोवा की रहने वाली एमवी लक्ष्मी ने बताया कि उनके पति ट्रैज़री डिपार्टमेंट में पोस्टेड थे। उनका देहांत हो चुका है, वह घर पर अकेली रहती है। उनकी दो बेटियों की शादी हो चुकी है। जब कॉल आया तो सामने वाले ने खुद को टेलीकॉम डिपार्टमेंट का कर्मचारी बताया। उसने कहा कि उनके आधार नंबर का दुरुपयोग हुआ है। किसी मोहम्मद इस्लाम नवाब नाम के व्यक्ति ने 311 बैंक अकाउंट खोल लिए हैं। इसके लिए आपको मुंबई आना पड़ेगा। इसके बाद फोन पर युवक ने कहा कि वह कॉल को मुंबई क्राइम ब्रांच को ट्रांसफर कर रहा है। महिला के

क्राइम ब्रांच का अफसर बताकर वसूले लाखों रुपए

मुताबिक, कुछ देर बाद वीडियो कॉल में विक्रम सिंह नाम का युवक आया। उसने पुलिस की वर्दी पहनी हुई थी। महिला को कहा गया कि 24 घंटे तक कॉल में जुड़ा रहना होगा, जब तक जांच पूरी नहीं हो जाती है। विक्रम ने महिला से कई सारे पर्सनल सवाल किए। बैंक अकाउंट के बारे में भी सभी जानकारी पूछी गई। साइबर ठग ने महिला को मनी लॉन्ड्रिंग से जुड़ा मामला कहकर एक लेटर भेजा, जिसमें रिजर्व बैंक और फाइनेंस डिपार्टमेंट का लेटर हेड था। इसमें लिखा था कि आप जांच पूरे होने तक देश छोड़कर नहीं जा सकते हो, इसके अलावा इस केस को किसी से शेयर भी नहीं कर सकते हो। महिला ने ठग के झांसे में आकर किसी को नहीं बताया। उसके बाद ठग ने महिला को एक खाता नंबर दिया और कहा कि इसमें 31 लाख रुपए ट्रांसफर कर दो। अगले दिन महिला ने बैंक जाकर आरटीजीएस के माध्यम से 31 लाख रुपए भेज दिए। इसी तरह ठग ने 20 लाख रुपए भी मांग लिए। आगे महिला ने 4 लाख और 50 हजार भी भेजे। महिला ने 58 लाख का ट्रांजैक्शन 4 दिनों में किया। ठग ने पैसे वसूलने के बाद महिला को यह बात अपनी बेटी को बताने के लिए कहा। इसके बाद इस पूरे मामले की शिकायत महिला ने थाने में की। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

प्रकाश पर्व पर निकली भव्य शोभायात्रा...

राजनांदगांव (दावा)। प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में सिक्ख समुदाय ने शहर में निकाली भव्य शोभायात्रा । शोभायात्रा का जगह- जगह हुआ स्वागत।

मोहला के रेंजर पर गिरी गाज

पैसे मांगने और काम में लापरवाही के आरोपों पर एक्शन, किए गए सस्पेंड

रायपुर (दावा)। मोहला के रेंजर हरिसूरजबली सिन्हा को सस्पेंड कर दिया गया है। निलंबन की यह कार्यवाही रेंजर हरिसूरजबली सिन्हा द्वारा काष्ठ पातन डिपो परिवहन के विदोहन योजना में लापरवाही के चलते वनोपज की गुणवत्ता खराब होने से राजस्व की क्षति होने, अग्नि प्रहरी के प्रमाणकों को जारी करने के लिए पैसों की मांग करने, अतिक्रमण, बेदखली की कार्यवाही के दौरान अधीनस्थों को सहयोग नहीं के कारण की गई है।

उल्लेखनीय है कि, वनमंडलाधिकारी मोहला द्वारा रेंजर हरिसूरजबली सिन्हा को लगातार समझाईश देने के बाद भी उनकी कार्यप्रणाली में सुधार नहीं हुआ था। प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख ने छत्तीसगढ़ सिविल सेवा नियमों के तहत शासकीय कार्य एवं पदीय दायित्वों के निर्वहन में लापरवाही तथा प्रकरण की जांच में प्रथम दृष्टतया दोषी पाये जाने पर निलंबित कर दिया है।

गीतांजली एक्सप्रेस के यात्री से 2 किलो गांजा बरामद की

टिकट चेकिंग स्टाफ अजय रहाटे एवं सतीश घोरपडे ने बड़ी चतुरता का परिचय दिया

राजनांदगांव (दावा)। दिलीप सिंह-वरिष्ट मंडल वाणिज्य प्रबंधक ने मंडल से गुजरने वाली रेलगाड़ियों में कार्यरत टी.टी.ई.स्टाफ को हिदायत दी है कि टिकट चेकिंग के अलावा ड्यूटी की दौरान यात्रियों की शिकायतों का निदान सहित अनाधिकृत वेंडरों व अन्य अनियमिताओं पर विशेष नजर बनाये रखे ताकि किसी भी प्रकार असुविधा यात्रियों को न हो।

इसी कड़ी में दिनांक 13 नवम्बर को गाड़ी क्र.12860 हावड़ा-मुंबई गीतांजलि एक्सप्रेस में टिकट चेकिंग के दौरान इस गाडी में कार्यरत टी.टी ई स्टाफ अजय रहाटे डिप्टी.सी.टी.आई., नागपुर एवं सतीश घोरपडे, डिप्टी सी.टी.आय, नागपुर ने बड़ी मेहनत एवं चतुरता का परिचय देते हुए एक यात्री के पास से 2 किलो गांजा के साथ यात्रा करते हुए रंगे हाथ पकड़ा और आगे की कारवाई हेतु रेल सुरक्षा बल को सौंपा। दोनों कार्यरत टिकट चेकिंग स्टाफ ने एक बड़ी सफलता हासिल की है। उन्होंने एक यात्री से 2 किलो गांजा बरामद किया, जो अवैध रूप से उसकी गाड़ी में ले जाया जा रहा था। यह कार्यवाही पूरी तरह से सूझबूझ और चतुराई से की गई, जिसमें टिकट चेकिंग स्टाफ ने मेहनत और तत्परता दिखाई इन दोनों स्टॉफ द्वारा की गई। इस कार्रवाई के दौरान इस यात्री को संदिग्ध अवस्था में पाया गया, जिसके बाद उसकी बारीकी से तलाशी ली गई।

तलाशी के दौरान उसके पास से 2 किलो गांजा बरामद हुआ, जिसे उसने अपने शारीर में पेट पर बेल्ट का पट्टा बनाकर इस में छुपा रखा था। वाणिज्य अधिकारियों ने इस कार्यवाही की सराहना करते हुए कहा कि टीटीई स्टॉफ की तत्परता की सराहना की और इस सफल ऑपरेशन में शामिल कर्मचारियों को उनके साहस और ईमानदारी के लिए धन्यवाद दिया। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि इस तरह की कार्रवाई से रेलवे सुरक्षा और कानून व्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सकेगा।

धूमधाम से शुरु हुई अग्रसेन प्रीमियर लीग का छठा सीजन

राजनांदगांव (दावा)। अखिल भारतीय युवा अग्रवाल सम्मेलन राजनांदगांव के तत्वाधान में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले अग्रसेन प्रीमियर लीग का छठा सीजन की शुरूआत हो गई है। जिसमें 13 नंवबर को तीन मैच आयोजित किया गया।

आज दिनांक 14 नवंबर को भी तीन मैचो का आयोजन होना है। जिसमें पहला मैच श्रीराम इण्डस्ट्रीज विरूद्ध श्रीराधे मिनरल्स दूसरा मैच अपना मार्ट विरूद्ध फर्स्ट क्राय तीसरा मैच गोयल दाल मिल विरूद्ध सुरेश ब्रदर्स खेला जायेगा। शिवनाथ वाटिका में सारे मैचों का आयोजन होना है।

मोहारा मेला में होगा तीन दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन - हेमा देशमुख

राजनांदगांव (दावा)। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर प्रतिवर्ष शिवनाथ नदी के किनारे मोहारा में मोहारा मेला का आयोजन किया जाता है। नागरिकों की मांग पर उक्त मेला का आयोजन तीन दिनों तक होता है।

तीनों दिन शाम में मनोरंजन के लिये सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन होता है, इस वर्ष भी तीनो दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जायेगे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के संबंध में महापौर श्रीमती हेमा सुदेश देशमुख ने बताया कि कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर मोहारा स्थित शिवनाथ नदी के पास तीन दिवसीय मेला का आयोजन किया जाता है। जहाँ पूर्णिमा के दिन प्रातः काल लोग शिवनाथ नदी में स्नान कर शिव मंदिर में पूजा अर्चनाकर दीप दान करते है। वही दोपहर से मेला का आयोजन किया जाता है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष दिनांक 14 नवम्बर से तीन दिवसीय मेले का आयोजन किया जा रहा है।

मेले में नागरिकों के मनोरंजन के लिये सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जा रहे है। जिसमें आज 14 नवम्बर को संध्या 6 बजे से नरेश वर्मा का मया के डोरी लोक मंच की प्रस्तुति दी जावेगी, वही 15 नवम्बर 2024 को श्री महादेव हिरवानी का धरोहर लोक मंच की प्रस्तुति होगी तथा अंतिम दिन 16 नवम्बर 2024 को विष्णु कश्यप का स्वर धारा की प्रस्तुति होगी। जिसमें कलाकारों द्वारा सुमधुर गीत एवं नृत्य के माध्यम से अपनी कला की प्रस्तुति दी जायेगी। महापौर श्रीमती देशमुख ने तीनों दिन आयोजित कार्यक्रम में मोहारा मेला में उपस्थित होकर मेले एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लेने नागरिकों से अपील की है।

खनिज इंस्पेक्टर से सांठगांठ कर अवैध परिवहन

दबंग ग्रुप ने खनिज अधिकारी चंद्राकर से मिलकर बात किये

राजनांदगांव (दावा)। खनिज विभाग में कुछ लोग सिंडिकेट बनाकर मायनिंग इंस्पेक्टर से सांठगांठ कर अवैध परिवहन कर रहे हैं और दूसरे गाड़ी वालों को परेशान किया जा रहा है।

इस तरह गलत तरीके से दुर्भावना से मायनिंग इंस्पेक्टर के द्वारा हाईवा गाड़ी पर पक्षपात पूर्ण रवैया को लेकर दबंग ग्रुप के सभी सदस्यों के द्वारा मायनिंग आफिस में जाकर मायनिंग अधिकारी प्रवीण चंद्राकर से मिलकर बात किये और पक्षपातपूर्ण कार्यो को लेकर कहा गया है कि कार्यवाही सभी गाड़ी पर होनी चाहिए किसी की टैग देखकर काम नहीं होना चाहिए। आगे ध्यान रखिए ऐसा नहीं होना चाहिए वर्ना जबरदस्त हंगामा किया जाएगा और चक्काजाम भी किया जाएगा। इस पर खनिज अधिकारी श्री चंद्राकर ने आश्वस्त किया कि आगे ऐसी कार्यवाही नहीं होगी।

उक्त अवसर पर दबंग ग्रुप शिव वर्मा पूर्व निगम अध्यक्ष, सांसद प्रतिनिधि विवेक साहू, पूर्व पार्षद दीपक चौहान, रमेश सोनवानी, नरेंद्र हंसा, देवल वल्यानी, संजय लड्डुवन, सूरजू धीवर, रामराज यादव, गेमू कुंजाम, सतीश रेवतकर, संजय लड्डुवन, संजू बघेल, बाबा ठाकुर, दिनेश ठाकुर, एन.के. साहू, पप्पी भाटिया, सतीश धीवर उपस्थित थे।

गबन के आरोपी पति-पत्नी को सश्रम कारावास की सजा

मामला एबीस कंपनी के दो करोड़ रूपये के गबन का

राजनांदगांव (दावा)। श्रीमती अंजली सिंह न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी ने कल एक मामले में आरोपी पति प्रमोद कुमार सिंह एवं उसकी पत्नी सीमा सिंह को कुटरचित दस्तावेज तैयार कर एबीस एक्सपोर्ट (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड के साथ अमानत में खयानत और धोखाधड़ी कि आरोप में दोषी करार दिया है। न्यायालय ने आरोपी पति-पत्नी को भारतीय दण्ड संहिता की धारा 409, 420, 467, 468 एवं धारा 471 सहपठित 34 के तहत प्रत्येक धारा में 03-03 वर्ष के सश्रम कारावास एवं अर्थदण्ड की सजा सुनाई है। न्यायालय ने पाया कि, इंदामरा स्थित एबीस एक्सपोर्ट (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड के वाईस प्रेसिडेन्ट प्रमोद कुमार सिंह, उसकी पत्नी सीमा सिंह एवं कंचन कुमारी सिंह तीनों ने आपस में मिलकर मुबंई में बी.एस.एस.पी. वाणिज्यिक प्रतिष्ठान के नाम से पार्टनरशिप फर्म स्थापित किया और जिसका खाता एच.डी.एफ.सी. बैंक ठाकुर विलेज मुंबई में खुलवाया। प्रमोद कुमार सिंह ने फर्जी दस्तावेजों का उपयोग कर बी.एस.एस.पी. वाणिज्यिक प्रतिष्ठान सूरत को एबीस कंपनी में मछली और झींगा दाना के विकय के लिये डीलर के रूप में रजिस्टर्ड करवाया।

मार्च से दिसम्बर 2014 के मध्य एबीस कंपनी के डीलर आई.एस.एफ. कंपनी ने टारगेट से अधिक व्यवसाय किया था, जिसके लिये आरोपी प्रमोद कुमार सिंह ने कंपनी के प्रबंध निर्देशक से आई.एस.एफ. कंपनी के लिये एक करोड पांच लाख रू. का टर्न ओवर डिस्काउंट स्वीकृत कराया। बाद में आरोपी प्रमोद कुमार सिंह ने फर्जी दस्तावेज तैयार कर बी.एस एस.पी. प्रतिष्ठान को आई.एस.एफ. कंपनी की सिस्टर कन्सर्न बताते हुये उपरोक्त रकम में से 44.33 लाख रू. अपनी स्वयं की भागीदार फर्म बी.एस.एस.पी. प्रतिष्ठान को टर्न ओवर डिस्काउंट के रूप में दिलवा दिया। जबकि बी.एस.एस.पी. प्रतिष्ठान आई.एस.एफ. की सिस्टर कन्सर्न नहीं थी और उसने उक्त अवधि में केवल 8 लाख रू. का ही व्यवसाय कंपनी के साथ किया था। न्यायालय ने यह भी पाया कि आरोपी प्रमोद कुमार सिंह एवं उसकी पत्नी सीमा सिंह ने मत्स्य आहार एवं झींगा आहार के उत्पादन एवं विक्रय की कुल राशि एक करोड पन्चानबे लाख को बेईमानी से दुर्विनियोग कर धोखाधड़ी एवं अपराधिक न्यास भंग किया है। न्यायालय ने अपने निर्णय में यह भी लिखा है कि, अभियुक्तगण का अपराध राज्य एवं भारत शासन के अधोसंरचना पर सीधा प्रहार है। अभियुक्तगण के कृत्य को अपराध की अंतिम पराकाष्ठा मानते हुये न्यायालय ने प्रमोद कुमार सिंह एवं सीमा सिंह को भारतीय दण्ड विधान की धारा 409, 420, 467, 468, एवं 471/34 के तहत दोषी पाते हुए प्रत्येक धारा में तीन-तीन वर्ष की सश्रम कारावास एवं अर्थदण्ड की सजा सुनाई है।

इस मामले की तीसरी आरोपी श्रीमति कंचन कुमारी सिंह फरार है, जिसके लिये न्यायालय ने स्थायी गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। उसके गिरफ्तार होने पर विचारण किया जावेगा। इस प्रकरण में शासन की ओर से एडीपीओ श्रीमति रिचा सोनवानी, प्रार्थी एबीस कंपनी की ओर से पंकज खनूजा, संजय कुमार वर्मा एवं अभियुक्तगण की ओर से मुकेश कुमार शर्मा अधिवक्ता ने पैरवी की।

अभिषेक सिंह लोकप्रिय एवं सर्वमान्य नेता, जनता का उनके प्रति अटूट विश्वास इसलिए लोग मिलते है - रविन्द्र सिंह

कुलबीर बताये किस हैसियत से राहुल गांधी ने कैबिनेट के निर्णय को फाड़ा था

राजनांदगांव (दावा)। अभिषेक सिंह एक पूर्व सांसद ही नहीं बल्कि पिछले 15 वर्षों से जनता से निरंतर सम्पर्करत रहने वाले लोकप्रिय एवं सर्वमान्य नेता है, जिसके कारण ही विभिन्न क्षेत्रों से आम जनता उनके आगमन के साथ ही अपनी समस्याओं के निराकरण के लिए आते है, उनके प्रति जनता का अटूट विश्वास ही उनसे मिलने के लिए प्रेरित करता है और जनता की समस्या को हल करने के लिए किसी पद की नही अपितु जनता का विश्वास ही अधिकारियों को कार्य करने के लिए निर्देश देने हेतु पर्याप्त है।

प्रदेश मीडिया पैनलिस्ट एवं जिला भाजपा के मंत्री रविन्द्र सिंह ने कुलबीर छाबडा के बयान को उनकी हताश और निराश मानसिकता का प्रतीक बताते हुए कहा कि पूर्व सांसद अभिषेक सिंह के जनता के प्रति समस्या को हल करने और अधिकारियों को किस हैसियत से निर्देश देते है के बयान पर प्रतियुत्तर देते हुए कहा कि कभी कुलबीर छाबडा ने यह बताने का प्रयास नही किया कि केंद्रीय कैबिनेट के निर्णय को राहुल गांधी ने किस हैसियत से फाड़ा था, क्या देश के प्रधानमंत्री के नेतृत्व वाले कैबिनेट मंत्रियों से भी राहुल गांधी ऊपर थे? यदि हाँ तो प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की हैसियत क्या थी यह भी कुलबीर छाबड़ा को बताना चाहिए था।

प्रदेश मीडिया पैनलिस्ट रविन्द्र ने कुलबीर से पूछा कि राजनांदगांव विधानसभा में किस हैसियत से गिरीश देवांगन को कांग्रेस से टिकट दिया गया था उसको भी बता देते अथवा उनके सामने कुलबीर की क्या हैसियत थी उसको भी स्पष्ट कर देते, हालांकि राजनांदगांव की जनता ने 45 हजार से भी ज्यादा वोट से पराजित कर उनकी हैसियत दिखा दी थी, सच्चाई तो यह भी है कि प्रदेश कांग्रेस के नेता राजनांदगांव के किसी भी नेता को अपने सामने किसी भी हैसियत में नही रखते इसलिए कभी रायपुर से करुणा शुक्ला को तो कभी दुर्ग से भूपेश बघेल को चुनाव लड़ने आना पड़ता है और सबकी अधोगति उनके पराजय के परिणाम में परिवर्तित हो जाती है, अब महापौर के होने वाले चुनाव में भी टिकट वितरण के समय राजनांदगांव के कांग्रेस नेताओं की हैसियत दिख जाएगी, अब कौन से जिले के किस कांग्रेस के कार्यकर्ता को टिकट मिलेगी, उन्हें इसकी चिंता करनी चाहिए ना कि अभिषेक सिंह पर उनके जनता जनार्दन की समस्या को हल करने की प्रक्रिया पर प्रश्न उठाने की चिंता करनी चाहिए।

जिला मंत्री रविन्द्र ने कहा अभिषेक सिंह राजनांदगांव लोकसभा के पूर्व सांसद रहे है और एक जिम्मेदार तथा लोकप्रिय नेता है उनके प्रति आम जनता में अपनापन और विश्वास है और जनता की समस्या को हल करने के लिए अभिषेक सिंह निरन्तर प्रयासरत रहते है और एक जिम्मेदार नेता होने के नाते सक्षम अधिकारियों तक जनता की समस्या को पहुंचाना और हल करना उनका राजनीतिक कर्तव्य और दायित्व है जिसका वे बखूबी निर्वहन भी करते है जिसको कुलबीर छाबड़ा जैसे संकुचित मानसिकता के लोग बर्दाश्त नही कर पाते है, पचा नही पाते है, जिसके कारण ही मानसिक दिवालायापन के शिकार हो गए है इसलिए आंय-बांय बड़बड़ा रहे है, कांग्रेस के बड़े नेताओं की चाटुकारिता करने के बजाए बेहतर है की वो अपने वार्ड की जनता का समस्या का निराकरण करने का प्रयास करते तो उनके वार्ड के लोग अभिषेक सिंह के पास समस्या को बताने और समाधान करवाने नही आते।

ट्रक की टक्कर से उजड़ गया परिवार, हादसे में पति-पत्नी और बच्चे की दर्दनाक मौत

जगदलपुर। शहर के लालबाग से होते हुए आमागुडा चौक पर नेशनल हाइवे में मंगलवार की रात एक सडक़ दुर्घटना में हंसता-खेलता परिवार उजड़ गया। तेज रफ्तार ट्रक की चपेट में आने पति-पत्नी सहित 12 वर्षीय पुत्र की मौके पर मौत हो गई है। मिली जानकारी के अनुसार परिवार पडोसी राज्य ओड़िसा माचाहांडी के रहने वाले थे। मृतक वासुदेव मांझी और पत्नी अनिता मांझी, पुत्र तिरुपति मांझी जान चली गई।

जानकारी देते हुए थाना प्रभारी ने बताया कि ओड़िसा के रहने वाले परिवार के लोग जगदलपुर अपने रिश्तेदार के घर नयामुण्डा आये हुए थे, वहां से वापसी जाने के दौरान आमागुड़ा चौक के पास बस्तर की ओर से आ रही एक तेज रफ्तार ट्रक ने बाइक सवार दंपति को अपने चपेट में ले लिया। इस हादसे में जहां पति पत्नी की मौके पर ही मौत हो गई, वही बच्चे को गंभीर हालत में अस्पताल भिजवाया गया। जहाँ उपचार के दौरान उसकी भी मौत हो गई।

तेज रफ्तार वाहनों पर लगाम नहीं

मृतकों के शव को पीएम के लिए शवगृह रखा गया। साथ मृतकों के परिजनों को सूचित किया गया। लगातार सडक़ हादसों में लोगों की जान जा रही है। सडक़ पर अब लोगों का चलना मुश्किल हो गया। नेशनल हाईवे पर तेज रफ्तार वाहनों पर लगाम नहीं है, हाईवे की चौक पर तेजी से गुजर रही बड़ी वाहनों के साथ हर वक्त हादसे का अंदेशा बना रहता है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक व मुद्रक दीपक कुमार बुद्धदेव द्वारा स्वस्तिक ऑफसेट एण्ड स्क्रीन प्रिंटर्स, बल्देवबाग रोड, राजनांदगांव से मुद्रित कर प्रकाशित। सम्पादक दीपक कुमार बुद्धदेव।
* समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार। * किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र राजनांदगांव रहेगा। फोन नं. - 07744-406631 e-mail : dainikdawa_rjn@yahoo.com